ॐ नमः श्री राम लाल प्रभु जी परब्रह्मणे नमः

भारत माता का इतिहास

(योगेश्वर कृष्ण से योगेश्वर राम तक)

श्री योग महादिव्य रामायण

नवम खण्ड

लेखक :-
चमन लाल कपूर "सेवक"

प्रकाशक :-
योग साधन आश्रम, 3 - माडल टाऊन,
होशियारपुर (पंजाब)

ॐ नमः श्री राम लाल प्रभु जी पर ब्रह्मणे नमः

भारत माता का इतिहास

(योगेश्वर कृष्ण से योगेश्वर राम तक)

श्री योग महादिव्य रामायण

नवम खण्ड

लेखक :-

चमन लाल कपूर "सेवक"

प्रकाशक :-

योग साधन आश्रम, 3 - माडल टाऊन,
होशियारपुर (पंजाब)

प्रथमबार 1000
योगेश्वर राम लालाब्द 115
विक्रम संवत् 2060
ईस्वी सन 2003

भेंट :- रु. 150/-

योग वन्दना

योग – विद्यां नमाम्यहम्

सौंदर्यलहरीरूपां, तापत्रयविनाशनीम् ।
तेजस्विनीं तपोरूपां, योगविद्यां नमाम्यहम् ।।१।।
संस्थापकां समत्वं तां, शक्तिसर्जनकारिणीम् ।
चित्तवृत्तिनिरोधाय, योगविद्यां नमाम्यहम् ।।२।।
अर्धनारीश्वरस्येमां, चैतन्यसार संभवाम् ।
पूर्णरूपकुण्डलिनीं, योगविद्यां नमाम्यहम् ।।३।।

●●●●

❋ योग तुझे नमस्कार ❋

सुन्दर करे जो देह को, करे दुखों से पार ।
तेज रूप तप रूप जो, योग तुझे नमस्कार ।।१।।
करे समत्व दान जो, शक्ति सिरजनहार ।
चित्तावृत्ति निरोधहित, योग तुझे नमस्कार ।।२।।
आदिनाथ से ऊपजा, चेतनता का सार ।
जागृत कुण्डली जो करे, योग तुझे नमस्कार ।।३।।
राम लाल जिस का किया, कलियुग में उद्धार ।
मुलखराज के ''सेवक'', का तुझे नमस्कार ।।४।।

चमन लाल कपूर ''सेवक''

भारत माता का इतिहास (योगेश्वर कृष्ण से योगेश्वर राम तक)

विषय सूची

क्र.सं.	प्रसंग	पृष्ठ
(i)	प्राक्कथन	1
(ii)	भारत माता	2
(iii)	दो शब्द	3
(iv)	भूमिका	5
(v)	योगेश्वर कृष्ण का संदेश	17
(vi)	श्री दिव्य रामायण सहगान	18
1.	विनय	19
2.	श्रीकृष्ण काल	20–23
	'श्री कृष्ण काल' के [1]प्रमुख राज्य	20
	महाभारत का युद्ध-(विश्व का प्रथम महायुद्ध)	21
3.	उज्ज्वल काल	23–58
	क) चन्द्रगुप्त मौर्य (325 B.C. से 298 B.C.)	23
	ख) बिन्दुसार (298 B.C. से 273 B.C.)	26
	ग) अशोक (273 B.C. से 232 B.C.)	26
	घ) कनिष्क (120 A.D. से 162 A.D.)	27
	ङ) चन्द्रगुप्त प्रथम (320 A.D. से 330 A.D.)	29
	च) समुद्रगुप्त (330 A.D. से 375 A.D.)	29
	छ) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (375 A.D. से 413 A.D.)	33
	ज) कुमारगुप्त (413 A.D. से 455 A.D.)	35
	झ) स्कन्धगुप्त (455 A.D. से 480 A.D.)	36
	ञ) हर्षवर्धन (606 A.D. से 647 A.D.)	40
	ट) राजपूतों का काल (650 A.D. से 1200 A.D.)	48
	ठ) पहली लूटमार (711 A.D. -मुहम्मद बिन कासिम)	53
	ड) दूसरी लूटमार (970 A.D. -सुब्बकतगीन)	54
	ढ) तीसरी से उन्नीसवीं लूट मारें (997 A.D. से 1030 A.D. -महमूद गज़नवी)	55
	ण) बीसवीं लूटमार (1174 से 1194 A.D. -मुहम्मद गौरी)	57

क्र.सं.	प्रसंग	पृष्ठ
4.	काला काल (1200 A.D. से 1700 A.D.)	59-81
	काले काल का स्वरूप	59
	क) गुलाम वंश (1206 A.D. से 1290 A.D.)	64
	ख) खिलजी वंश (1290 A.D. से 1325 A.D.)	66
	ग) तुगलक वंश (1320 A.D. से 1414 A.D.)	67
	घ) सादात वंश (1414 A.D. से 1450 A.D.)	69
	ङ) लोधी वंश (1451 A.D. से 1526 A.D.)	70
	च) मुगल वंश (1526 A.D. से 1857 A.D.)	71
5.	धूमिल काल (1700 A.D. से 1947 A.D.)	82-149
	धूमिल काल का स्वरूप	82
	क) क्लाइव (प्रथम शासक) (1750 A.D. से 1772 A.D.)	85
	ख) वारण हेस्टिंगज़ (1772 A.D. से 1784 A.D.)	86
	ग) कारन वालिस और अन्य वायसराय (1786 A.D. से 1947 A.D.)	87
	स्वतंत्रता हेतु प्रथम संग्राम	89
	स्वतंत्रता हेतु द्वितीय संग्राम	95
	योगेश्वर राम का आगमन	106
	योगेश्वर राम का जीवन वृत	118
	योगेश्वर राम की योगशक्ति का प्रकाश और देश का स्वतंत्र होना	146
6.	प्रगति काल (15 अगस्त 1947 से आगे)	150-168
	क) भारत का संविधान	150
	ख) भारत की प्रगति	152
	ग) शिक्षा के क्षेत्र में	152
	घ) भाषा के क्षेत्र में	153
	ङ) विज्ञान के क्षेत्र में	154
	च) यातायात के क्षेत्र में	155
	छ) कृषि के क्षेत्र में	156
	ज) उद्योग के क्षेत्र में	157
	झ) सड़कों के निर्माण में	158
	ञ) बिजली निर्माण में प्रगति	158
	ट) अनेक राज्यों का एकीकरण	159
	ठ) स्वास्थ्य के क्षेत्र में	159
	ड) पंचवर्षीय योजनाऐं	160
	ढ) सांस्कृतिक और योग के क्षेत्र में	160
	ण) उपसंहार	166

ॐ नमः श्री रामलाल प्रभुजी परब्रह्मणे नमः

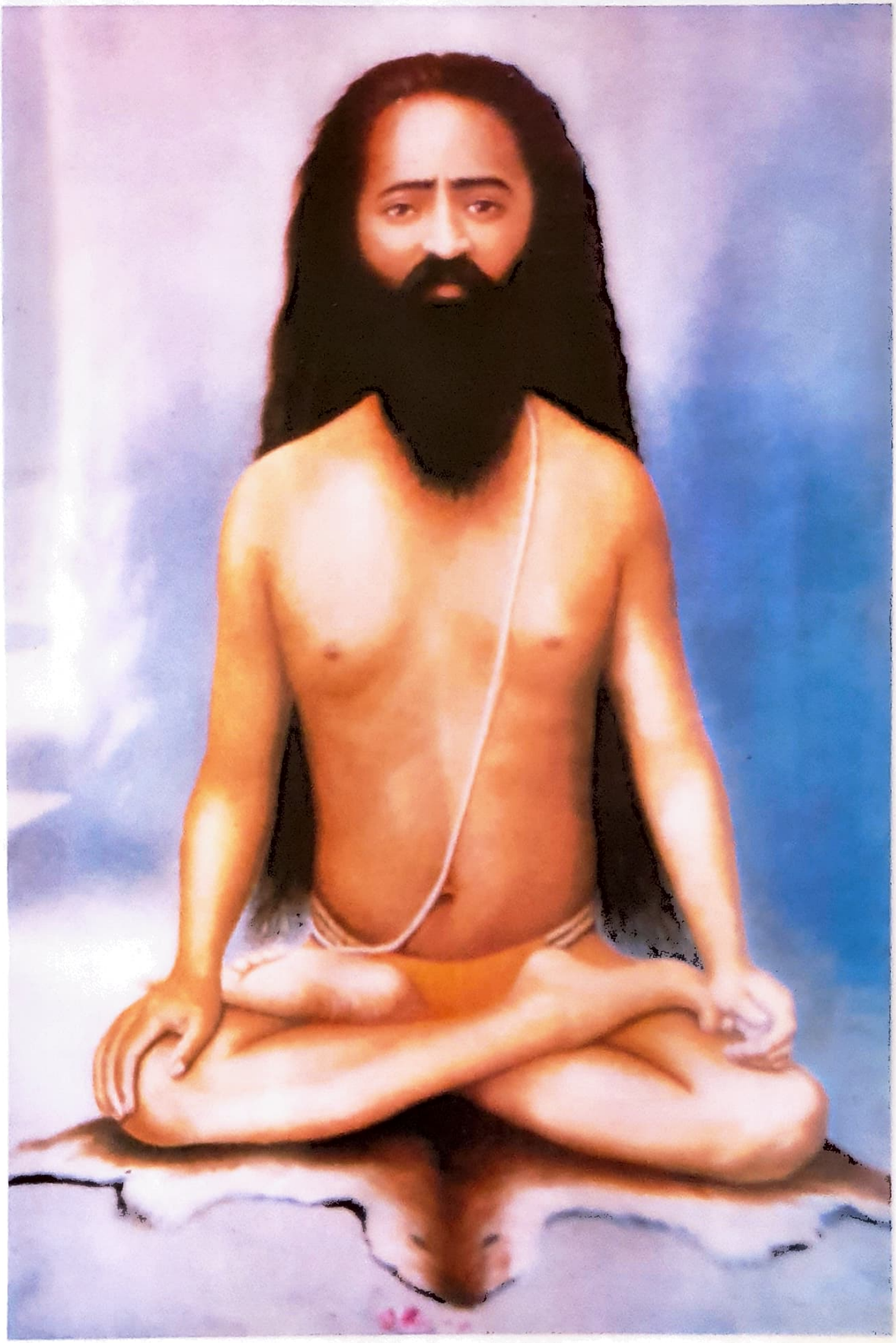

श्री 1008 योगेश्वर प्रभु रामलाल जी महाराज

प्राक्कथन

भारतवर्ष का इतिहास दो प्रमुख भागों में विभक्त हो सकता है:- 1. प्राचीन भाग और 2. नवीन भाग। प्राचीन भाग में वैदिक, रामायण और महाभारत का समय आता है। महाभारत के प्रमुख अभिनेता श्रीकृष्ण चन्द्र थे। उनके साथ ही भारत के इतिहास का प्राचीन भाग समाप्त समझा जाता था। श्रीकृष्ण चन्द्र के बाद भारत के इतिहास का नवीन भाग आरम्भ होता है। इस नवीन भाग को चार कालों में यहां इस पुस्तक में बांटा गया है जो इस प्रकार से हैं:-

1. उज्ज्वल काल (Bright Period) -श्रीकृष्ण चन्द्र के पश्चात 1000 AD तक।
2. काला काल (Black/Dark Period) -1200 AD से 1700 AD तक।
3. धूमिल काल (Smoky Period) -1700 AD से 1947 AD तक।
4. प्रगति काल (Progressive Period) -1947 के बाद का समय।

इन चारों कालों में भारतवर्ष में जो कुछ घटित हुआ उसी का संक्षिप्त वर्णन यहां पर है। आशा है सहृदय विद्वान पाठक इस पर विचार करेंगे।

होशियारपुर चमन लाल कपूर 'सेवक'

17.12.2002

भारत माता

भारत हमारी माता है। इससे हमारा जन्म हुआ है। इसके अन्न से हमारा शरीर बना है। इसकी वायु से हमारे प्राण चलते हैं। इसके जल से हमारी नसों में रुधिर का संचार होता है। इसके ज्ञान से हमारा मस्तिष्क उज्ज्वल है। इसकी रज हमारे लिए परम विभूति है। इसकी सेवा से हमारा कल्याण होता है। इसके इतिहास से हमें आत्मबोध होता है और महान स्फूर्ति मिलती है।

हमारी माता ने अपने इतिहास के उज्ज्वल काल में जो कुछ संसार को दिया है उस पर हमें गर्व है।

अपने इतिहास के काले काल में इसने जो कुछ सहन किया है उससे हमारा हृदय पीड़ित है।

अपने इतिहास के धूमिल काल में हमारी माता ने जो अपमान सहन किये हैं उससे हमारा सर लज्जा से झुक जाता है।

हमारी माता सदा सुखी रहनी चाहिए। हमें सेवा, सुश्रूषा और बलिदान से प्रसन्न कर उसका सदैव आशीर्वाद ग्रहण करते रहना चाहिए।

प्रभु कृपा से संसार में हमारी माता विजयी रहे।

वन्दे मातरम्

चमन लाल कपूर 'सेवक'

होशियारपुर

17.12.2002

दो शब्द

रामायण पूर्ण जब भयी, विनय कीन इस दास।
प्रभो मुझे अब ले चलो, अपने ही तुम पास।। 1
उत्तर उनसे जो मिला, सुन मैं था हैरान।
"चिर जीव इक काम है, तेरे लिए महान।। 2
ऋषियों के इस देश का, वर्णन हो इतिहास।
जो पीड़ा इस देश ने, चिर सही है खास।। 3
जगत भूला है वह सब, नहीं किसी को याद।
है करानी वह तुम्हीं, पुनः देश को याद।। 4
कृष्ण चन्द्र के बाद का, जानो जो इतिहास।
था 'उज्ज्वल युग' देश का, फिर 'काला' इतिहास।। 5
ब्राह्मण गौ का खून बहा, तभी खुले ही आम।
उसे बतलाने का प्रिय, अब तुम्हारा काम।। 6
वेद शास्त्रों की आग, थी जली जिस काल।
तोड़ दिये थे मन्दिर, तब जिस 'काले काल'।। 7
वह भी सभी बतलाना, है तुम्हीं ने हाल।
भूल न जाये जगत को, वह जो 'काला काल'।। 8
'काले काल' उपरान्त फिर, आये फिरंगी लोग।
लूट लिया उन देश को, भूल गये हैं लोग।। 9
वह 'धूमिल' इक काल था, भ्रांति में था देश।
हफला तफली मच रही, शांति कहीं न लेश।। 10

लूट खसूट वे ले गये, भारत का सब माल।
दरिद्र कीना देश को, बुरा लोगों का हाल।। 11
गये फिरंगी छोड़ जब, इस देश की डोर।
मार काट थी मच गई, हा हा चारों ओर।। 12
भूल रहे हैं लोग वह, मार काट की याद।
लाखों जन थे कट मरे, करोड़ों हि बरबाद।। 13
मारकाट के साथ ही, 'धूमिल काल' समाप्त।
'प्रगति काल' फिर आ गया, परतन्त्राता समाप्त।। 14
स्वतन्त्र भारत जब भया, भयीं अनेकों भूल।
उन भूलों के कारणे, जनगण के चित्त शूल।। 15
इस सारे इतिहास का, होवे वर्णन खास।
करो काम यह हे प्रिय, मैं तुम्हारे पास।। 16
भारत ने जो दुख सहे, और सहा अपमान।
उनका भी वर्णन करो, आज्ञा मेरी मान''।। 17
प्रभु के सुन आदेश को, जागी फिर तब आस।
रहूं जगत में और अब, प्रभु भक्तों के पास।। 18
प्रभु आदेश सर माथ धर, लीनि लेखानी हाथ।
जो कुछ नाथ लिखवायें, वही लिखूं निज हाथ।। 19
प्रभो विनय बस एक है, होना न कभी दूर।
काम आपने जो दिया, 'सेवक' को मंजूर।। 20

होशियारपुर
29.07.2002

चमन लाल कपूर 'सेवक'

भूमिका

इस पुस्तक का उद्देश्य भारत के पूर्ववर्ती विकसित और उज्ज्वल राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, चारित्रिक तथा आर्थिक गौरव के इतिहास का और फिर अधः पतन और पुनः जागरण का संक्षेप दिग्दर्शन कराना है। इस दृष्टि से भारत के इतिहास को चार कालों में विभक्त किया गया है जैसे :-

(1) उज्ज्वल काल - श्री कृष्ण चन्द्र के पश्चात 1200 A D तक
(2) काला काल - 1200 A D से 1700 A D तक
(3) धूमिल काल - 1700 A D से 1947 A D तक और
(4) प्रगति काल - 1947 A D से आगे तक।

पूर्व काल से ही भारत देश संसार के लिए अनेकों दृष्टियों से आदर्श बना रहा । यहां पर बाहिर के लोग आ कर शिक्षा दीक्षा प्राप्त करते रहे।

संसार का प्रथम महायुद्धः - पांच हजार वर्ष पूर्व (5000 BC) में भारत वर्ष, जिसका नाम उस काल आर्यवर्त था, छोटे- छोटे शक्तिशाली समृद्ध राज्यों में विभक्त था। कुछेक राज्यों के नाम इस प्रकार थेः-

हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, गान्धार, कम्बोज, मत्स्य, पाञ्चाल, सौवीर, बाल्ट्रिक, सौराष्ट्र, मालव, सिन्धव, निषध, कच्छ, शूरसैन, विदर्भ, विदिशा, सुह्म, कामरूप, उत्कला, विदेह, मगध, दशार्ण, औड्र, कलिङ्ग, आन्ध्र, कुन्तल, कर्णाटक, अनवर्त, मद्र आदि।

भारत का शक्ति केन्द्र हस्तिनापुर समझा जाता था। जहां पर महाराज धृतराष्ट्र का शासन था। उसके शक्तिशाली सौ पुत्र दुर्योधन आदि थे जो अपने कुरुवंश

के कारण 'कौरव' कहलाते थे। महाराज धृतराष्ट्र का भाई 'पाण्डु' था जो मर चुका था। उसके पांच पुत्र थे जिन का नाम युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव था। वे पांचों अपने पिता के नाम पर पाण्डव कहलाते थे। हस्तिनापुर राज्य में राज्य के अधिकार के कारण पाण्डवों और कौरवों में विवाद उत्पन्न होने के कारण पाण्डवों को अलग से अपनी राजधानी 'इन्द्रप्रस्थ' बसानी पड़ी जिसे आजकल 'दिल्ली' कहते हैं।

दो अलग-अलग राज्य बनने पर भी भाईयों का झगड़ा चलता रहा और युद्ध तक नौबत आ गई।

दोनों पक्षों ने भिन्न-भिन्न राज्यों से अपने-अपने लिए सहायता मांगी। लगभग भारतवर्ष के सारे राज्य एक या दूसरे पक्ष में चले गये और एक विशाल युद्ध की तैय्यारी होने लगी। यह संसार का 'प्रथम महायुद्ध' था जिसे 'महाभारत' का युद्ध कहते हैं। हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ के बीच एक विशाल जंगल था जिसे 'नैमिषारण्य' कहते थे। उसी को ही कुरुक्षेत्र कहते हैं। यह दो नदियों के बीच विशाल क्षेत्र था। नदियों के नाम थे - दरिषदवती और सरस्वती।

महायुद्ध रोकने के लिए बहुत प्रयास हुए परन्तु दोनों और से हठ के कारण युद्ध टल न सका। सारे देश से और कुछ अन्य स्थानों से भी सैनाएं आकर कुरुक्षेत्र में स्थित हो गयीं और युद्ध की तय्यारी होने लगी। सैनाओं की संख्या बहुत थी। कौरवों के पक्ष में 'ग्यारह अक्षौहिणी' सैना थी और पाण्डवों के पक्ष में 'सात अक्षौहिणी'। प्रत्येक अक्षौहिणी के चार अंग होते हैं। इसलिए सैना को चतुरंगिनी सैना का नाम दिया जाता है। इस रूप से एक अक्षौहिणी सेना में चारों अंगों का स्वरूप ऐसा होता है :-

पैदल	-	1,09,350	सैनिक
घोड़ों पर	-	65,610	सैनिक
रथों पर	-	21,870	सैनिक, सारथी अलग
हाथियों पर	-	21,870	सैनिक, चालक अलग

इस हिसाब से जब ग्यारह और सात अक्षौहिणी सेनाओं में योधाओं आदि की गणना करें तो उस विशाल कुरुक्षेत्र में एक कल्पनातीत सैनिकों का जमाव शक्ति परीक्षण के लिए एकत्र हुआ ।

दोनों पक्षों में विश्वव्याप्य महारथी और योधा थे। कुरु पक्ष का नेतृत्व 'भीष्मपितामह' कर रहे थे और पाण्डव पक्ष का महाराज द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न।

इन सैनापतियों के अतिरिक्त महान योधाओं के नाम इस प्रकार थे :-

गुरु द्रोणाचार्य, विराट, द्रुपद नरेश, धृष्टकेतु, चेकितान, काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज, शैव्य, युधामन्यु, उत्तमौज, सात्यकी, अभिमन्यु, द्रौपदी के पांच पुत्र, सौ कौरव, पांचों पाण्डव, कर्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्त का पुत्र भूरिश्रवा आदि।

अनेकों प्रकार के शस्त्रास्त्रों से लैस योधा थे जिनका अठारह दिन तक घोर संग्राम चलता रहा।

पाण्डवों का पक्ष न्याय संगत था इस कारण योगेश्वर कृष्ण जो द्वारिकाधीश थे उन्होंने पाण्डवों का पक्ष लिया। अर्जुन के सारथी बने और उनकी महान चतुराई, नीति कुशलता, सामरिक योग्यता तथा पाण्डवों की महान वीरता के कारण कम सैना होने पर भी पाण्डवों की विजय हुई। परन्तु इस युद्ध में महान विनाश हुआ।

शस्त्रास्त्रों का ज्ञान सदा के लिए समाप्त हो गया, वि श्व के महान योधा मारे गये और हस्तिनापुर तथा इन्द्रप्रस्थ का गौरव एकदम शून्य हो गया।

महाभारत के युद्ध में भारत की बहुत अधिक क्षति हुई। बड़े-बड़े राज्य खण्डित हो गये। सर्वत्र निराशा का वातावरण दिखाई देने लगा। श्री कृष्ण सहित सभी दिव्य विभूतियां भारत के राजनैतिक रंगमंच से किनारा कर गईं। भारत की राजनैतिक शक्ति जो पहले पश्चिम में इन्द्रप्रस्थ, हस्तिनापुर, पांचाल, गंधार, मथुरा आदि में केन्द्रित थी लुप्त प्राय हो गई। उस समय पूर्व में मगध का राज्य बड़ी शक्ति के रूप में उभरा। उस की राजधानी पाटलीपुत्र में थी। इस राज्य में बड़े-बड़े सम्राट हुए जिन्होंने देश में एक छत्र राज्य किया।

महाराजा चन्द्रगुप्त मौर्य इसी राज्य में हुए जो सर्वत्र विख्यात हैं। इनका शासन पूरे उत्तर भारतवर्ष पर हिमालय पर्वत से लेकर दक्षिण में विन्ध्याचल पर्वत और काश्मीर से बंगाल की खाड़ी तक था। सौभाग्य से इन्हें चाणक्य जैसा महामन्त्री मिला जिसका लिखा हुआ 'कौटिल्य शास्त्र' ग्रन्थ अति प्रसिद्ध है।

यह काल भारत का 'उज्ज्वल काल' था। इसी काल में भारत का विश्वविख्यात सम्राट अशोक हुआ जो सम्राट चन्द्रगुप्त का पोता था। इस ने राज्य का और अधिक विस्तार किया। इसी काल में महाराजा कनिष्क हुआ जिसका राज्य काबुल, कन्धार, और उस से भी आगे तक फैला हुआ था। और फिर इस काल में भारत के विश्वविख्यात गुप्त वंश के महाराज चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य हुए जिनके राज्य में कालिदास जैसे जगत प्रसिद्ध कवि और नाटककार थे। महाराजा हर्षवर्धन का राज्य भी इसी 'उज्ज्वल काल' में था जिन्होंने हूनों पर विजय प्राप्त की थी।

भारत के इस उज्ज्वल काल में वैदिक साहित्य और वैदिक संस्कृति और धर्म का अत्यधिक विकास हुआ।

इसी काल में जैन धर्म के तीर्थंकर महावीर स्वामी और बुद्ध धर्म के बाणी गौतुम बुद्ध हुए। इस काल में बुद्ध धर्म चीन, तिब्बत, मध्य एशिया, अफगानिस्तान, लंका, ब्रह्मा, जावा, सुमात्रा आदि कई स्थानों में फैला और संसार का एक विशिष्ट धर्म बना। इसी काल में जैन धर्म और बौध धर्म के ग्रंथों की रचना हुई जिनमें त्रिपुरक और त्रिरत्न आदि हैं।

इसी काल के इतिहासकारों ने 'राजतरंगनी', 'पृथ्वीराज रासो', 'हर्ष चरित्र' आदि काव्य ग्रंथों की रचना कर उस काल के इतिहास पर प्रकाश डाला। इसी काल में 'मैगस्थनीज़' आदि चीनी यात्रियों ने आकर भारत से विविध प्रकार की शिक्षा प्राप्त की और उस काल की संस्कृति का विशद वर्णन किया। इसी काल में महाराज अशोक ने कई खम्बे स्थापित किए जिन पर खुदाई कर धर्म और संस्कृति के नियमों का उपदेश दिया। इन से उस काल की भाषा और संस्कृति का परिचय प्राप्त होता है।

इसी काल में प्रसिद्ध छः दर्शनों की रचना हुई जैसे 'कपिल का सांख्य शास्त्र', 'पतंजली का योग दर्शन', 'गौतम का न्याय शास्त्र', 'कनाद का वैशेषिक शास्त्र', 'जैमिनी का पूर्व मिमांसा' और 'बादरायण का उत्तर मीमांसा'। इसी काल में वेदों की व्याख्या करने वाले 'ब्राह्मणग्रंथों' की रचना हुई और ब्रह्म विद्या के महान स्रोत उपनिषद रचे गये।

'अष्टाध्यायी', जो संस्कृत भाषा का महान व्याकरण है, इसी काल में बनी। वैदिक और संस्कृत भाषा के शब्दकोष 'उणादिकोष' और 'निघण्टु' की रचना

भी इस काल में हुई। इसी काल में संस्कृत भाषा का अति विशाल साहित्य रचा गया, जिस के प्रमुख -प्रमुख कवि और लेखक इस प्रकार हैं:-

1. महाकवि भास - स्वप्नवासवदत्तम आदि के रचयिता
2. महाकवि कालिदास - शकुन्तला नाटक और रघुवंश आदि महाकाव्यों के लेखक
3. अश्वघोष - बुद्धचरित आदि के कर्ता
4. भारवी - किरातार्जुनीय के रचयिता
5. भट्टी - रावणवध के लेखक
6. माघ - शिशुपाल वध के कर्ता
7. श्री हर्ष - नैषध चरित के रचयिता
8. वाण - कादंबरी के कर्ता
9. दण्डी - दशकुमार चरित के लेखक
10. गुणाडय - बृहत्कथा के लेखक
11. शूद्रक - मृच्छकटिका के लेखक
12. भवभूति - महावीर चरित के रचयिता
13. राजशेखर - बाल रामायण के लिखने वाले
14. भर्तृहरि - शृंगार, नीति और वैराग्य शतकों के कर्ता

इस के अतिरिक्त अनेकों विषयों जैसे दर्शन, न्याय विज्ञान, आयुर्वेद आदि के ग्रंथों की रचना इस काल में हुई जिन सभी का उल्लेख करना कठिन है।

भारतवर्ष के इस 'उज्ज्वल काल' की इति श्री तब हुई जब पश्चिमोत्तर दिशा से भारत की सीमाओं का उल्लंघन कर भारत की समृद्धि के लुटेरे लोग इस्लाम का नारा लगाते हुए एक के बाद एक निरन्तर आक्रमण करने लगे। उन्होंने पुस्तकों के अमूल्य संग्रहों को जलाया, मन्दिरों को लूटा, देव मूर्तियों को तोड़ा, बलात्कार और कतले आम का बाज़ार गर्म किया। तभी से भारत के इतिहास का दूसरा काल 'काला काल' आरम्भ हुआ।

सर्वप्रथम 711 **A D** में मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर आक्रमण किया और इस में वह राजा दाहर की दो युवती बेटियों और बहुत लोगों को दास बना कर ले गया। इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि भारतवर्ष में 'काले काल' के समय क्या कुछ होता होगा। इस प्रकार के घृणित दृश्य 'काले काल' के समय निरन्तर होते रहे।

मुसलमानों के भारत पर आक्रमण करने के तीन मुख्य उद्देश्य थे। (1) धन लूटना (2) हिन्दुस्तान को विजय करना और (3) इस्लाम का प्रचार। आरंभ में मुसलमान आक्रमणकारी आ कर धन लूट कर ले जाते। मन्दिरों आदि से उन्हें अथाह धन लूटने को मिला। इतने से ही संतोष न कर वे लोगों के घरों में घुसकर उन का धन, सोना, चांदी आदि छीन कर ले जाते। कोई भी घर सुरक्षित न रहा। उस समय की यह उक्ति पंजाबियों की जबान से सुनी है:-

अज्ज ज़ेवर मेरी रानी दे।
कल शाह दुरानी दे।।

अर्थात् आज जो ज़ेवर आदि हमारे पास हैं कल को मुसलमान आकर हम से छीन कर ले जायेंगे।

धीरे-धीरे मुसलमानों के आक्रमण बढ़ते गये और हिन्दू राजाओं में एकता न होने के कारण मुसलमानों का राज्य भारतवर्ष पर हो गया। अब भारत में हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की ओर मुसलमान बादशाहों का ध्यान गया। बलपूर्वक हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया। जैसे कि काश्मीर के ब्राह्मणों (पण्डितों) की चोटियां काट, यज्ञोपवीत तोड़ और तिलक पोंछ तथा गौ का मांस खिला उन्हें ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया और लगभग सारी जनता काश्मीर की मुसलमान हो गई। जिन हिन्दुओं ने इस पर आपत्ति की और मुसलमान बनने का विरोध किया उन्हें तलवार के धार उतार दिया अथवा अन्य किसी ढंग से मार दिया। जैसे श्री गुरुगोविंद सिंह के पिता श्री गुरु तेग बहादुर को कतल किया। श्री गुरुगोविंद सिंह के दो बच्चों को दीवारों में चिनवा दिया। हकीकतराय और ऐसे असंख्य लोगों का इसी अपराध में घात हुआ परन्तु जब देखा कि इस रीति से तो सारा भारत मुसलमान नहीं बनाया जा सकेगा तो एक नई नीति अपनाई गई। प्रत्येक हिन्दू पर एक टैक्स लगाया गया जिसे जज़िया कहते थे। हर एक छोटे-बड़े हिन्दू को हिन्दू होने के अपराध में यह कर देना पड़ता था। गांवों के दरिद्र लोग यह कर कहां से देते। फलस्वरूप करोड़ों की संख्या में हिन्दुओं ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और कर से मुक्ति पाई। इस प्रकार भारत में करोड़ों लोग मुसलमान बने जिनके पूर्वज हिन्दू थे और हिन्दू धर्म को मानते थे। इस प्रकार के काले काम इस 'काले काल' में मुसलमानों के राज्य में निरन्तर होते रहे।

इस 'काले काल' का अन्त लगभग 1700 AD में समझना चाहिए जब एक नया काल 'धूमिल काल' भारत के इतिहास में आरंभ होता है। इस समय योरुप से अंग्रेज़, फरांसिसी, पुर्तगाली लोग व्योपार के प्रयोजन से भारत में समुद्री

मार्ग से घुस आये और धीरे-धीरे अंग्रेज़ समस्त भारत के शासक बन गये। इन्होंने भारत के लागों को अपना गुलाम माना और उन से गुलामों जैसा ही व्यवहार किया। भारतीयों के साथ बैठना भी वे लोग अपमान जनक समझते थे। इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण है। जब मोहन लाल कर्मचन्द्र गांधी, वारिस्टर, एक बार रेल के फस्टक्लास डिब्बे में टिकट लेकर बैठा था तो अंग्रेज़ सवारियों ने उसे बाहर धकेल दिया था। गांधी के जीवन पर इस घटना का गहरा असर हुआ।

भारत के इतिहास के इस 'धूमिल काल' में जब अंग्रेज़ यहां आये तो उनके समक्ष तीन मुख्य लक्ष्य थे :- 1. भारत से धन ले जाना, 2. भारत पर शासन करना और 3. भारत में इसाई धर्म का प्रचार करना।

अंग्रेज़ो ने भारत से दिल खोल कर धन का सफाया किया। भारत उन्हें व्योपार की विशाल मण्डी मिली। यहां पर छोटी से बड़ी सभी वस्तुएं इंगलैंड से बनकर आती थीं। भारत में उन्होंने कोई भी कारखाना नहीं लगने दिया। अंग्रेज़ अफसरों के बड़े-बड़े वेतनों के रूप में यहां का धन इंगलैंड जाता था। भारतीय राजाओं से, सेठों से और बड़े ज़िमीदारों से उन्हें खूब भेंटें मिलती थी, जो सभी इंगलैंड भेजी जाती थीं। भारत के छात्र इंगलैंड पढ़ने जाते, वहां पर धन खूब खर्च करते। परन्तु सबसे अधिक धन तो वे शाही खज़ानों को खाली करके ले गये और शाही मुहल्लों में जो हीरे जवाहरात तथा सोना आदि था सभी यहां से ले कर अपने देश में पहुंचा दिया। 'कोहेनूर' जो दुनिया का बेश कीमती लाल है बड़ी चुस्ती से अपने देश में पहुंचाया। इस प्रकार भारत को वे कंगाल करके गये और यहां पर गरीब जनता को दो समय का भोजन भी पाना मुश्किल हो गया।

अंग्रेज़ बहुत होश्यार थे। भारत पर अपना शासन दृढ़ रखने के लिए उन्होंने

हिन्दुओं और मुसलमानों में शत्रुता बढ़ाई उनकी नीति थी "Divide and Rule" साथ ही अनेकों बड़े छोटे रजवाड़ों को संरक्षता प्रदान की ताकि जनता को काबू में रखें।

इसाई धर्म का प्रचार भी उन्होंने बहुत होश्यारी से किया। अंग्रेज़ पादरियों के सुपुर्द यह काल किया गया, जिन्होंने भारतीय पादरी भी पैदा किये और गरीब जनता को कई प्रकार के प्रलोभन देकर इसाई मत में परिवर्तित किया। जो कोई इसाई बनता उसे अच्छी सी नौकरी पर लगाते। अपने मत के प्रचार हेतु उन्होंने हिन्दुओं के वेद आदि शास्त्रों के प्रति जनता की अरुचि बढ़ाई। वेदों को गडरियों के गीत का नाम दिया। भारतीय त्योहारों की अवहेलना कर क्रिसमिस को महत्व दिया। इस प्रकार अंग्रेज़ों ने भारतवर्ष के 'धूमिल काल' में इस देश की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक स्थिति को अधः पतन के गर्त में पहुंचाने में कोई कसर बाकी न रखी।

इस 'धूमिल काल' का अंत 1947 AD में समझा जाता है जब जैसे तैसे अंग्रेज़ भारत का शासन छोड़कर यहां से चले गये। तब एक नये काल का उदय हुआ। जिसे 'प्रगति काल' यहां कह रहे हैं। भारतीयों के लिए वह एक चुनौती का काल था। देश का बंटवारा हुआ। विस्थापितों की ठहरने का कोई ठिकाना न था। भारत ने इस संकट काल में चुनौती का सामना दृढ़ता पूर्वक किया और देश को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर किया। स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों सभी ने स्वतन्त्र भारत में आज़ादी की सांस ली और देश को सम्भालने के लिए उद्यत हो गये। सभी के सहयोग से देश की आर्थिक अवस्था सुधरने लगी। छोटे-बड़े कारखाने आदि लगे। जो वस्तुएं बाहर से आती थीं यहीं बनने लगीं। पैदावार बढ़ी, सड़कों का बहुत विस्तार हुआ, नई नई रेल लाईने बनाई गईं और नई रेलें

चालू की गईं, शिक्षा का बहुत विकास हुआ। भारत वर्ष संसार के सबसे बड़े प्रजातंत्र के रूप में उभरा, विज्ञान में भारत ने आशातीत उन्नति की, और भारतीय सैनिक शक्ति का विकास हुआ। यही कहा जा सकता है कि इस प्रगति काल में भारत प्रति दिशा में प्रगति करने लगा। परन्तु देश से इस काल में कुछ भूलें भी हुई हैं जो परेशानी का कारण बनीं। वे इस प्रकार हैं:-

1. जब भारत का बंटवारा हुआ तो पाकिस्तान ने वहां के हिन्दुओं को बलपूर्वक और आतंकित कर निकाल दिया। परन्तु भारत ने भारत से मुसलमानों को पाकिस्तान में जाने से रोका।
2. पाकिस्तान से आये हुए विस्थापितों को काश्मीर में जाने से रोका और किसी एक को भी वहां बसने की अनुमति न दी।
3. शक्ति होने पर भी काश्मीर का एक भाग पाकिस्तान को सौंप दिया।
4. काश्मीरी पंडितों को काश्मीर में शरण न दी गई और उन्हें वहां से निकलना पड़ा।
5. पाकिस्तान को सदा मित्र समझते रहे और उसकी कूटनीति नहीं समझ में आई।
6. पूर्वी पाकिस्तान को विजय करके फिर अलग देश बना दिया और उसे अपने अधीन न रखा तथा हजारों युद्ध बन्धियों को बिना किसी शर्त मुक्त कर दिया।
7. श्रीलंका में तमिलों के विरुद्ध अपनी सेना भेज कर तमिलों से शत्रुता मोल ली।
8. तिब्बतियों को शरण देकर चीन से शत्रुता मोल ले ली।
9. पाकिस्तान की बढ़ती हुई शक्ति को किसी प्रकार से रोका नहीं गया।

भारतवर्ष के 'धूमिल काल' के अन्तिम चरण में 1888 AD में योगेश्वर रामलाल का जन्म अमृतसर में हुआ। बचपन में उन्होंने शिक्षा अपने पिता पंडित गण्डाराम से ग्रहण की। उसके उपरान्त कई एक विद्यालयों में पढ़ने गये। देश की परतंत्रता और संस्कृति के ह्रास को देख उन्हें बहुत ग्लानि होती। ऋषियों की संतान ऋषियों के जीवन और परम्पराओं को भूल चुकी थी। कहां भगवान कृष्ण और पतञ्जलि आदि ऋषियों का योग और कहां रोगग्रस्त और अनाचारों में ग्रस्त गुलामी में पड़े लोग। रामलाल इसी ग्लानि को लेकर घर को छोड़ योगी गुरु की तलाश में निकला। दीर्घकालीन खोज के बाद उसे सुमेरु पर्वत पर पूर्ण योगी गुरु से साक्षात्कार हुआ और उनसे पूर्ण योग की शिक्षा प्राप्त की और रामलाल से योगेश्वर राम हुए। अपने गुरु की आज्ञा से कि "जा कर देश को योग द्वारा धर्म के मार्ग पर चलाओ", योगेश्वर राम दीर्घकालीन तपस्या के पश्चात योग की सिद्धियों, शक्तियों सहित वनों से लौटे और ऋषियों मुनियों की योग की शिक्षा से जनगण के जीवन में नई चेतनता लाये। 1947 ई. में 'धूमिल काल' के उपरान्त जब भारत स्वतंत्र हुआ तो योग का अधिक विस्तार हुआ। देश की भाषा राष्ट्रीय भाषा बनी, स्थान-स्थान पर योग साधन आश्रम बनने लगे, सभी मत-मतांतरों के लोग योग की ओर आकृष्ट हुए और देश से बाहिर विदेशों में भारतीय संस्कृति और योग की शिक्षा का मान बढ़ा। योगेश्वर कृष्ण की शिक्षा जो लम्बी परतंत्रता में लुप्त हो चुकी थी योगेश्वर राम ने उसे पुनः जीवित किया और संसार में वह सर्वत्र फैल गई ।

होशियारपुर

17.12.2002

चमन लाल कपूर 'सेवक'

योगेश्वर कृष्ण का संदेश

वीर बनो, बहादुर बनो, समय पड़ने पर कायरता न दिखलाओ। युद्ध में शत्रुओं को मारोगे तो संसार का सुख भोगोगे और यदि मारे गये तो स्वर्ग का सुख भोगोगे।

आत्मा का ध्यान रखो, आत्मा को कोई नहीं मार सकता। वह अजर, अमर है। शरीर मरता है, आत्मा नहीं। शरीर को छोड़ना वस्त्रों के बदलने के समान है।

युद्ध में चाहे अपना संबंधी हो, या मित्र हो, या कोई भी हो उसे मारने से मत हिचकिचाओ। मुझे स्मरण करते हुए युद्ध करो विजयी होगे।

(गीता II. 2, 3 आदि)

धर्म की रक्षा करने के लिए युद्ध करना सभी कर्मों से अधिक श्रेष्ठ है। ऐसा अवसर सौभाग्य शालियों को ही मिलता है। जो इस अवसर का लाभ नहीं उठाते वे पाप के भागी होते हैं और उनका अपमान होता है। जीत, हार का ध्यान किये बिना धर्म युद्ध करना चाहिए। लाभ, हानि, सुख, दुख का ध्यान छोड़ जो युद्ध करता है वह पापों से मुक्त होता है।

(गीता II. 31, 32 आदि)

सभी धर्मों का परित्याग कर मेरी शरण में आओ, मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूँगा। (गीता XVIII. 66)

मुझ में ही मन लगाओ, मुझ में ही बुद्धि लगाओ, मृत्यु पश्चात मुझ में ही समा जाओगे। (गीता XII. 8)

श्री दिव्य रामायण सहगान

दिव्य रामायण की गाथा को,
जो नर सुने सुनावे ।
जीवन में रहे सुखी हमेशा,
अंत परमपद पावे ।।
श्री प्रभु गंडाराम दुलारे,
इस में उन के खेल हैं न्यारे ।
पतित पावनी कथा मनोहर,
भक्तन के मन भावे ।।
सुन्दर यह इतिहास मनोहर,
लीला कीनी जिमि योगेश्वर ।
योग साधना की पावस ऋतु,
योगामृत बरसावे ।।
उत्तम नीति इस में आई,
भक्त जनों के जो मन भाई ।
इस के सुनने से प्राणी का,
पाप नाश हो जावे ।।
श्री प्रभु राम लाल हैं नायक,
जीव चराचर के सुखदायक ।
उन के चरण कमल का भौंरा,
'सेवक' शीश झुकावे ।।

ॐ

भारत माता का इतिहास

(योगेश्वर कृष्ण से योगेश्वर राम तक)

श्री योग महादिव्य रामायण

नवम खण्ड

1. विनय

दो०-प्रभो दीनि है कलम यह, फिर सेवक के हाथ।
विनय दास की एक यह, रहो सदा ही साथ।। 6757क
कठिन काम तुमने दिया, मैं लिखूं इतिहास।
भूत काल को स्मरण कर, मेरा रुकता श्वास।। 6757ख
दुख सहे जो देश इस, भूत काल में नाथ।
कैसे उनको लिख सकूँ, मम रुकता है हाथ।। 6757ग
ऋषियों की इस भूमि ने, संकट सहे अनेक।
इस भारत को है प्रभो, सहारा तेरा एक।। 6757घ

कृष्ण चन्द्र से लेय कर, आज तलक की गाथ।
जिमि 'सेवक' यह लिख सके, तिमि रहना इस साथ।। 6757ङ
कृष्ण काल के बाद के, हैं चार जो काल।
'उज्ज्वल काल' प्रथम है, दूजा 'काला काल'।। 6757च
तीजा काल जो है लिखा, 'धूमिल' उसका नाम।
'प्रगति काल' उस बाद का, तुझे समर्पित राम।। 6757छ

2. श्रीकृष्ण काल

ईसा से पूर्व लो जान, पांच सहस्त्र वर्ष पहचान।
कृष्ण भये थे तब अवतार, धर्म के जो राखन हार।
पक्ष जहां धर्म का देखें, अन्याय अत्याचार व पेखें।
लें धर्म का पक्ष वे नाथ, पीड़ितों को वे करत सनाथ।

'श्री कृष्ण काल' के [1]प्रमुख राज्य:-

उस समय का भारत जानो, अनेक समृद्ध राज्य पहचानो।
कुछ के नाम यहां करें उल्लेख, उस काल जिमि सकें हम पेख।
'हस्तिनापुर' व 'मगध' का राज, 'इन्द्रप्रस्थ' का था बहु साज।
'गंधार' और 'कंबोज' लो जान, 'सौवीर' व 'पंचाल' पहचान।

---

[1]*योगेश्वर कृष्ण के समय के प्रमुख राज्य:-*

1. हस्तिनापुर 2. मगध 3. इन्द्रप्रस्थ 4. गंधार 5. कंबोज 6. सौवीर 7. पंचाल 8. मत्स्य 9. बाल्हिक 10. सौराष्ट्र 11. मालव 12. सिंधव 13. निषध 14. कच्छ 15. विदर्भ 16. अनवर्त 17. मथुरा 18. शूरसैन 19. विदिशा 20. दशार्ण 21. प्रागज्योतिष 22. सुह्म 23. उत्कल 24 .कामरूप 25. विदेह 26. औड्र 27. आंध्र 28. कुन्तल 29. मद्र 30. कलिंग 31. कर्नाटक

'मत्स्य' वा 'बाल्ट्रिक' लेवो जान, 'सौराष्ट्र' शक्तिशाली मान।
'मालव' 'सिंधव' 'निषध' के राज, 'कच्छ' 'विदर्भ', 'मथुरा' राज।
'शूरसैन' व 'विदिशा' जान, 'प्रागज्योतिष' व 'सुह्म' पहचान।
'उत्कल' 'कामरूप' 'विदेह', 'औड्र' 'आंध्र' भी राज हैं येह।
'दशार्ण' 'कुन्तल' 'मद्र प्रदेश', 'कलिंग' 'कर्नाटक' के भी देश।
और भी थे तब राज अनेक, था 'अनवर्त' भी उनमें एक।
सभी राज्य थे समृद्ध महान, भारतवर्ष की शक्ति जान।
विश्व में भारत का था नाम, विश्व से आते लोग तमाम।
विद्या पढ़कर यहां से जाते, धन-धान्य भी यहां से पाते।

महाभारत का युद्ध-(विश्व का प्रथम महायुद्ध):-

दो०-शक्तिशाली राज्य था, हस्तिनापुर का जान।
धृतराष्ट्र अधिराज था, नेत्रहीन लो मान।।6758क
उसका वंश विशाल था, सौ थे उसके पूत।
पाण्डु उसका भ्रात था, जिसके पांच ही पूत।।6758ख
सौ को 'कौरव' जान लो, पांच को 'पाण्डव' मीत।
परस्पर इनमें दुशमनी, लेश न इनमें प्रीत।।6758ग
अधिकार के ही कारण, इनमें भया द्वेष।
राजपुत्र थे कौरव, पांच की चले न पेश।।6758घ
पाण्डवों को स्थान दिया, 'इन्द्रप्रस्थ' था नाम।
भया प्रसिद्ध जो बाद में, 'दिल्ली' के ही नाम।।6758ङ

वैमनस्य के कारणे, इतना बढ़ा कलेश।
[1]महायुद्ध वह बन गया, तब भारत के देश।। 6758च

दोनों पक्ष हि करने लागे, सहायक अपने खोजने लागे।
विश्व भर के राजे आये, दोनों ओर वे जुट थे पाये।
दोनों राज्यों के बीच मैदान, 'कुरुक्षेत्र' के नाम से जान।
सैनाएं वहां जुटने लागीं, छावनी एक विशाल लागी।
कौरव पक्ष था अधिक बलवान, ग्यारह अक्षौहिणी सैन महान।
[2]सात अक्षौहिणी पाण्डव ओर, जुटीं सभी थी अपने ठोर।
योगे श्वर कृष्ण पाण्डव ओर, लड़ा न पर वह किसी भी ओर।
[3]बना अर्जुन का 'कोच' वह 'वान', आसीन था उसके रथ पै आन।
सारथी बन उस सब कुछ देखा, भारत का विनाश भी पेखा।

दो०-युद्ध भयंकर था भया, कुरुक्षेत्र के बीच।
नाश भयंकर था भया, भया न कभी जग बीच।। 6759क
राजवंश सब लुट गये, जो थे पश्चिम ओर।
शक्ति पश्चिम ओर की, जुटी अब पूर्व ओर।। 6759ख
कौरव पाण्डव मिट गये, हस्तिनापुर के साथ।
महारथी सब मिट गये, भया था देश अनाथ।। 6759ग

---

[1]यह विश्व का प्रथम महायुद्ध था जो योगेश्वर कृष्ण के समय हुआ, कुरुक्षेत्र के मैदान में। इसके पश्चात दूसरा महायुद्ध ई० सन् 1914 में हुआ और तीसरा महायुद्ध 1939 में हुआ।
[2]एक अक्षौहिणी सैना में योद्धाओं की संख्या इस प्रकार से होती है:- पैदल सैनिक-1,09,350; घुड़सवार 65,610; रथ (योधा, सारथी सहित)-21,870; हाथी (योधा, महावत सहित)- 21,870
[3]कोचवान-सारथी

दिव्यास्त्र भी नहीं रहे, और न चालन हार।
ऐसा भयंकर नाश वह, देखा कृष्ण मुरार।। 6759घ
चले गये तब कृष्ण भी, परम अपने वे धाम।
नये युग में छोड़ कर, भारतवर्ष तमाम।। 6759ङ
कृष्ण चन्द्र के साथ ही, समाप्त भया इक युग।
नूतन भारत निर्माण हित, आया नूतन युग।। 6759च

3. उज्ज्वल काल

पाण्डव युद्ध के बाद लो चीन, पश्चिम भारत भया बल हीन।
मग्ध देश जो पूर्व की ओर, उसने पकड़लिया बहुज़ोर।
विनाश के उस काल उपरान्त, चेतना जागी बिन विभ्रांत।
पश्चिम में तो भया था नाश, भया पूर्व में शक्ति प्रकाश।
बहु सदियों तक लेवो जान, शक्ति केन्द्रित रही वहां मान।
मग्ध देश का राजघराना, सबने उसका लोहा माना।
नंद वंश था वह कहलात, सकल देश में वह विख्यात।

क) चन्द्रगुप्त मौर्य (325 B.C. से 298 B.C.)

उसी वंश का चन्द्र जानो, चन्द्र गुप्त मौर्य पहचानो।
होनहार महा बलशाली, उसने राज की डोर संभाली।
नया वंश उससे चल पाया, मौर्य वंश जिस नाम धराया।
दो०-मौर्य वंश की नींव तब, आप धराई नाथ।
इस वंश की डोरी जिमि, स्वयं प्रभु के हाथ।। 6760

चन्द्र गुप्त का भाग्य महान, चाणक्य मिला था उसको आन।
नीतिनिपुण और था विद्वान, मंत्री न जग में उस समान।
कूटनीति में सिद्ध था हस्त, कर्तव्य पालन में सदा ग्रस्त।
था योगी भी एक महान, दृष्टि दिव्य से पाता ज्ञान।
भारत का उस स्वप्ना देखा, मन में उसने दृढ़ कर लेखा।
आर्यवर्त बनाऊँ एक देश, खंडित रहे न कहीं से लेश।
राम और कृष्ण का यह देश, दुर्बल भया है आज विशेष।
नीति कृष्ण की इस भुलाई, त्यागी राम की इस चतुराई।

दो०-वेद मर्यादा भूल कर, स्वार्थ से ही प्यार।
नीति को नहीं जानते, देश से न है प्यार।। 6761

ग्रंथ रचा उस एक महान, नीति का जो कोष लो जान।
चारों नीति वहां बतलाईं, साम, दान, दण्ड, भेद कहाईं।
पंचम नीति विशेष दिखाई, कुटिल नीति जो कथनी आई।
चन्द्रगुप्त को सब समझाया, नाद विजय का चन्द्र बजाया।
देश अखण्डित कीना पूर्ण, एक छत्र साम्राज्य संपूर्ण।
उसकी सीमा को लो जान, उत्तर में हिमगिरि पहचान।
विन्ध्याचल दक्षिण में भाई, हिन्दूकुश पश्चिम में आई।
बंग की खाड़ी तक प्रदेश, अधीन सकल था उसके देश।
पाटलीपुत्र थी राजधानी, चन्द्र की शक्ति सबने मानी।

दो०-एक छत्र साम्राज्य था, चन्द्र का उस काल।
अखण्डित ऐसा राज्य तो, सुना न पूर्व काल।। 6762क

राजा एक यूनानी, था सिकन्दर नाम।
कीन आक्रमण देश पर, बना न कुछ भी काम।। 6762ख
विश्व विजयी सिकन्दर भी, लौटा खाली हाथ।
यूनानी पाछे लौटे, लगा न कुछ उन हाथ।। 6762ग
[1]मारग में ही मर गया, स्वप्न भया था भंग।
युनान के साम्राज्य का, उड़ गया था रंग।। 6762घ
मार्ग में मृत्यु हो पाई, अस्त भई उसकी प्रभुताई।
हिन्दुस्तान आने का फल, पा लिया था उसने उस पल।
[2]चतुरंगिनी सैना चन्द्र बनाई, छः लाख पदाति उसमें भाई।
रथी वीर थे आठ हज़ार, घुड़सवार भी तीन हज़ार।
नौ हज़ार हाथी उस पास, चाणक्य की नीति पर विश्वास।
सामराज्य खुशहाल था सारा, धन-धान्य उस राज्य में भारा।
सिकन्दर का था इक सरदार, उसका चित्त भया बदकार।
[3]उसका नाम सल्यूकस आया, सैना लेकर चढ़ वह पाया।
चन्द्रगुप्त से खाकर हार, बहुत दिया था उस उपहार।
सुपुत्री निज चन्द्र को दीनी, भारत की प्रभुताई चीनी।
दो०-भारत के संरक्षक, रामलाल भगवान।
युग युग कृपा कीनी उन, रहे देश की शान।। 6763क
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6763ख

---

[1]सिकन्दर की मृत्यु - 323 B.C. में
[2]चतुरंगिनी सैना-जिस सैना के चार अंग हों जैसे पैदल, घोड़े, रथ और हाथी।
[3]सल्यूकस का आक्रमण - 305 B.C. में

युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, राम लाल लो चेत।। 6763ग

ख) बिन्दुसार (298 B.C. से 273 B.C.)

सताई वर्ष चन्द्र का राज, बिन्दुसार उसका युवराज।
काबिल था वह एक नरेश, कीना विस्तृत उसने प्रदेश।
पच्चीस वर्ष उस कीना राज, निज पुत्र कीना उस युवराज।

ग) अशोक (273 B.C. से 232 B.C.)

बिन्दुसार का पुत्र अशोक, जिसका नाम जानें सब लोग।
[1]बुद्धमत था उसने अपनाया, हिन्दू धर्म त्याग वह पाया।
यह थी उसकी नैतिक भूल, राष्ट्र शक्ति की उड़ गई धूल।
जो साम्राज्य अशोक ने पाया, जिसका पाछे भया सफाया।
उसकी सीमा को बतलायें, हानि का अनुमान लगायें।
पंजाब और अफगानिस्तान, काश्मीर और बलोचिस्तान।
उत्तर में ये समस्त प्रदेश, मौर्य राज्य के खण्ड विशेष।
पश्चिम में थे सिंध गुजरात, मालवा काठियावाड़ साक्षात।
दो०-पूर्व में बंगाल था, वा कलिंग भी साथ।
जिसे उड़ीसा कहत अब, वे सब इसके हाथ।। 6764

नर्बद नद के पार का देश, मौर्य राज भी वहां विशेष।
जिसकी सिद्धपुर राजधानी, मौर्य वंश की परम निशानी।

---

[1]सम्राट अशोक ने हिन्दू धर्म का परित्याग कर, बौद्ध धर्म स्वीकार किया। यह उसकी एक भारी भूल थी। इससे राष्ट्र शक्ति को आघात पहुंचा और वह दुर्बल हो गई, साम्राज्य खण्डित हुआ और भिक्षा वृत्ति खूब पनपी।

मौर्य वंश का राज विशाल, हुआ न ऐसा किसी भी काल।
चन्द्रगुप्त ने इसे बनाया, अशोक ने था इसे गंवाया।
अशोक की थी भूल महान, हिन्दू धर्म को त्यागा आन।
बुद्ध धर्म जो उस अपनाया, दुर्बल देश को वह कर पाया।
भिक्षुओं की सैना बन पाई, जिनकी भिक्षा करन कमाई।
दुर्बलता तब देश में आई, जिससे हानि बहुत हो पाई।

दो०-प्रभु कृपा से था मिला, इतना राज्य विशाल।
अशोक की इक भूल ने, कीना देश बेहाल।। 6765क
बुद्ध धर्म के कारणे, दुर्बल भया जब देश।
विदेशी आने लग गये, लेश चाली न पेश।। 6765ख
उत्तराधिकारी अशोक के, संभाल सके न देश।
आक्रमण विदेशियों का भया, लेश चाली न पेश।। 6765ग
छोटे-छोटे नृप भी, हो गये खुद मुख्तार।
मौर्य वंश की सर्वथा, हो गई थी हार।। 6765घ
यूनानिन ने देश को, कीन बहुत बेहाल।
[1]यूची वंश इक जांगली, लिया उस देश संभाल।। 6765ङ

घ) कनिष्क (120 A.D. से 162 A.D.)

कुशन वंश के नाम से, भी यह वंश विख्यात।
नृप कनिष्क जिसमें भया, भारत में विख्यात।। 6765च
इसने भी तो बुद्धमत, लीना कर स्वीकार।
और कीना प्रचार इस, यहां पर बहु प्रकार।। 6765छ

[1]यूची लोग कैसपियन झील के आसपास रहते थे। कुशनवंश से प्रसिद्ध हुए और हिन्दू धर्म में मिल गये

इसके राज्य का बहु विस्तार, यारकंद आदि विजय कर डार।
काश्मीर और बलोचिस्तान, पश्चिम भारत अफगानिस्तान।
सभी पर था इसका अधिकार, कीना राज्य का बहु विस्तार।
बुद्धमत का बना अनुयायी, दुर्बलता इसमें भी आई।
खण्डित इसका राज्य हो पाया, कुशन वंश का भया सफाया।
खण्डित देश तब से रह पाया, डेढ़ सदी का काल विहाया।
बुद्धमत जनता ने अपनाया, हिन्दू धर्म लुप्त हो पाया।
भिक्षुक देश के थे सरदार, लुप्त भया वैदिक आचार।

दो०-देव वाणी व वेद का, था कहीं नहीं मान।
संस्कृति के तब ह्रास का, इसी से हो अनुमान।। 6766क
छोटे-छोटे राज्यों में, बंट गया था देश।
संगठित शक्ति न रही, एकता थी न लेश।। 6766ख
इसी संकीर्ण काल में, उदय भया इक वंश।
गुप्त वंश जिसको कहें, ऋषि मुनियों का अंश।। 6766ग
प्रभु कृपा ही जानिये, संकट के इस काल।
आ संभाला देश को, दुकाल भया सुकाल।। 6766घ
भारत के संरक्षक, रामलाल भगवान।
युग-युग कृपा कीनी उन, रहे देश की शान।। 6766ङ
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6766च
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बनें कभी कृष्ण वे, रामलाल लो चेत।। 6766छ

ङ) चन्द्रगुप्त प्रथम (320 A.D. से 330 A.D.)

गुप्त वंश का प्रथम नरेश, चन्द्रगुप्त अभिधान विशेष।
कुमार देवी उस की रानी, उच्च वंश की दिव्य निशानी।
ससुराल की ले शक्ति साथ, चन्द्र कीन बहु देश निज हाथ।
आगरा अवध और बिहार, निज राज्य मिलाये सब प्रकार।
पाटलीपुत्र राज्य की धानी, सभी ने शक्ति उस की मानी।
इतिहास के इस उज्ज्वल काल, सभी विध भया देश खुशहाल।
दश वर्ष का राज्य इस कीना, देश संगठित था कर दीना।

च) समुद्रगुप्त (330 A.D. से 375 A.D.)

चन्द्रगुप्त जब स्वर्ग सिधारा, राज्य समुद्रगुप्त संभारा।

दो०-'चन्द्र' चन्द्र समान था, 'समुद्र' समुद्र समान।
शक्ति के प्रतीक दोय, कीना देश महान।।6767क
भिक्षुओं के जो झुण्ड थे, मिला न उन को मान।
बिगाड़ी थी जिन सब विध, इस देश की शान।।6767ख
उजाले में मिट जात है, जिमि अंधेरा मीत।
भिक्षा वृत्ति लुप्त प्राय, गुप्त राज्य सब रीत।।6767ग

स्वर्णिम युग तभी था आया, नूतन युग उदय हो पाया।
बड़े बड़े वैदिक विद्वान, उन्हें मिला सब विध ही मान।
'ब्राह्मण ग्रंथ' लिखे इस काल, 'सूत्रग्रंथ' भी लिखे इस काल।
'षड्दर्शन' जो बहु विख्यात, उनका निर्माण भया साक्षात।
कपिल रचा 'सांख्य' का दर्शन, था पतांजली 'योग का दर्शन'।

गौतम की 'न्याय' की रचना, की कनाद 'वैशेषिक' रचना।
जैमिनी बनाया 'पूर्वमिमांस', बादरायण 'उत्तरमिमांस'।
इस विध 'षड्दर्शन' रच पाये, जो सब विश्वविख्यात हो पाये।

दो०-योग आदि का ज्ञान जो, विश्वव्यापी आज ।
उसी काल की रचन यह, गुप्त वंश के राज।। 6768क
रचन और प्रसिद्ध जो, उस काल की मीत।
ब्रह्मविद्या के स्रोत हैं, ग्रंथ 'उपनिषद्' चीत।। 6768ख
व्याकरण का ग्रंथ जो, 'अष्टाध्यायी' कहाय।
इसी काल की रचन वह, पाठ्यक्रम में आये।। 6768ग
और रचना साहित्य की, जो भयी उस काल।
क्या पूर्ण वर्णन हो सकत, यह इक कठिन सवाल।। 6768घ
बहु ग्रंथ तो लुप्त भये, मुसलमानों के काल।
अग्निसात थे उन किये, ग्रंथालय तत्काल।। 6768ङ
जो ग्रंथ थे बच गये, उनका करें बखान।
गुप्तकाल साहित्य की, रचना भयी महान।। 6768च
प्रभु कृपा से बच गये, जो ग्रंथ तब मीत।
उनका वर्णन है यहां, लेना पढ़ सप्रीत।। 6768छ

महाकवि कालीदास को जान, कवियों में विख्यात महान।
नाटक रचे हैं उस बहुतेरे, काव्य ग्रंथ भी हैं न थोरे।
'शकुंतला' नाटक जानिये एक, इससे जन परिचित प्रत्येक।
और नाटक जो उस लिख पाये, उनके नाम यहां पर आये।
'मालविकाग्नि मित्रम्' जान, 'विक्रमोर्वशीयम्' पहचान।

काव्य ग्रंथ उसके लो जान, 'रघुवंश' लो इक पहचान।
[1]'मेघदूत' और 'ऋतुसंहार', 'कुमारसंभव' लो चित्त धार।
इस कवि ये सब लिख पाये, गुप्त राज्य में सभी सुहाये।

दो०-और लेखक जो हैं भये, गुप्त राज्य के बीच।
उनका भी वर्णन करें, जो प्रसिद्ध समीच।।6769क
दो कवि प्रसिद्ध भये, 'भास' 'सौमिलिक' मीत।
ग्रंथ भास के हैं मिले, लुप्त सौमिलिक चीत।।6769ख
[2]तेरह ग्रंथ हैं भास के, सब नाटक के रूप।
प्रसिद्ध भये वे जगत में, भास के नाम अनुरूप।।6769ग

'प्रतिज्ञा यौगंधरायण' जान, 'स्वप्नवासवदत्त' पहचान।
नाटक 'दूतघटोतकच' मीत, 'दूतवाक्यम्' भी इक लो चीत।
'कर्णभार' 'पंचरात्र' भाई, दोनों नाटक बहु सुखदायी।
'प्रतिमा' नाटक वा 'अविमारक', 'चारुदत्त' 'अभिषेक' जो नाटक।
'बालचरित' 'उरुभंग' पहचान, 'मध्यमव्यायोगम्' भी लो जान।
तेरह नाटक जो मिल पाये, सदियों रहे जो गर्त समाये।
[3]भाग्य से लगे इक पण्डित हाथ, संस्कृत साहित्य भया सनाथ।
भास के नाटक जब मिल पाये, सब विद्वानों ने वे अपनाये।

---

[1]*कालीदास की रचनाएं :- 1. अभिज्ञान शाकुंतलम् 2. मालविग्निमित्रम् 3. विक्रमोर्वशीयम् 4. कुमारसंभव 5. ऋतु संहार 6. मेघदूत 7. रघुवंश*

[2]*भास के नाटक :- 1. प्रतिज्ञा योगंधरायणम् 2. स्वप्नवासवदत्तम् 3. उरुभंगम 4. बाल चरितम् 5. दूतघटोतकचम् 6. कर्णभारम् 7. दूतवाक्यम् 8. पंचरात्रम् 9. मध्यम् व्यायोगम् 10. अभिषेकनाटकम् 11. प्रतिमानाटकम् 12. अविमारक 13. चारुदत्तम्*

[3]*पण्डित गणपति शास्त्री*

दो०-'उज्ज्वल काल' था देश का, भास रहा था भास।
कवियों में सम्राट था, मान मिला था खास।। 6770क
[1]'अश्वघोष' भी था कवि, इसी काल का मीत।
'बुद्धचरित' इसने लिखा, सौन्द्रानन्द सप्रीत।। 6770ख
[2]'भारवी' का भी ग्रंथ है, 'किरातार्जुनीय' जान।
गुप्त राज्य के राज्य में, भया प्रसिद्ध महान।। 6770ग
[3]'भट्टी' कवि ने है लिखा, 'रावणवध' लो जान।
'भट्टीकाव्य' के नाम से, है उसकी पहचान।। 6770घ
[4]गुप्तवंश के राज्य में, माघ भया विख्यात।
लिखपाया 'शिशुपाल वध', कृष्ण कथा साक्षात।। 6770ङ

[5]'रत्नाकर' कवि भी भया महान, 'हरिविजय' ग्रंथ उस का जान।
[6]'नैषधचरित' हर्ष लिख पाया, 'नलदमयन्ती' चरित सुहाया।
भारत का यह काल महान, उज्ज्वल काल इसी को जान।
महा कवि भये इस ही काल, भारतवर्ष था अति खुशहाल।
धन धान्य से था देश खुशहाल, न दरिद्रता का कहीं सवाल।
भारत 'स्वर्णचिड़िया' विख्यात, घर घर स्वर्ण पड़ा साक्षात।
देशविदेश में करें व्योपार, जग का केन्द्र यह था उस काल।
विद्या में प्रसिद्ध यह देश, शिक्षार्थी आते रहें हमेश।
विश्वविद्यालय में पढ़ पाते, पा शिक्षा निज देश सिधाते।

---

[1] कवि अश्वघोष की कृतियां :- बुद्धचरितम् 2. सौन्द्रनन्दम्
[2] भारवी कवि का महाकाव्य :- किरातार्जुनीयम्
[3] भट्टी कवि का महाकाव्य :- रावणवध
[4] माघ कवि का काव्य :- शिशुपाल वध
[5] रत्नाकर का महाकाव्य :- हरिविजय
[6] श्री हर्ष कवि का महाकाव्य :- नैषधचरित

दो०-वि श्वविद्यालय बहुत थे, नालंदा आदि मीत।
तक्ष्यशिला भी एक था, जग को है प्रतीत।। 6771क
पच्चीस वर्ष राज्य किया, समुद्र गुप्त उस काल।
लगभग सारे देश पर, था उसका अधिकार।। 6771ख
हिमालय से तक नर्बदा, बंग देश पंजाब।
उसका राज्य विशाल था, सर्वत्र दब दबाव।। 6771ग
'फाइयान' आदि यात्री, चीन देश से आय।
पाय कर शिक्षा लौटे, खुद वर्णन कर पाय।। 6771घ

वर्णन सबने बहुत है कीना, जो कुछ यहां पर आकर चीना।
नगर यहां के बहुत विशाल, जनता यहां की बहुत खुशहाल।
मद्यपान का था नहीं नाम, चोरी आदि का न कुछ काम।
हिन्दू धर्म तो था प्रधान, बाकी धर्मों का भी मान।
संस्कृत भाषा तब प्रधान, उसी में मिलता सब को ज्ञान।
'सारनाथ' 'अजन्ता' जानो, उच्च शिक्षा के केन्द्र मानो।
हज़ारों छात्रों का वहां वास, असंख्य अध्यापकों का अधिवास।
दर्शन न्याय और विज्ञान, मिलता आयुर्वेद का ज्ञान।

दो०-साहित्य का सृजन सभी, मुख्य भया इस काल।
वैदिक और संस्कृत का, जो था न पूर्व काल।। 6772

छ) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (375 A.D. से 413 A.D.)

समुद्र का भया देहांत, शासक भया चन्द्र उपरान्त।
विक्रमादित्य वह भया विख्यात, [1]आदित्य वह विक्रम का साक्षात।

[1]विक्रम : - शौर्य आदित्य :- सूर्य

विस्तृत कीन था उस निज राज, कीन विजित नूतन कई राज।
काठियावाड़ मालव प्रदेश, जीता उस गुजरात का देश।
समुद्र पर उसका अधिकार, वणिज होत था हर प्रकार।
पश्चिम देशों से व्योपार, देश में धन के लगे अंबार।
प्रजा सुखी थी सब प्रकार, न्याय का शासन हर प्रकार।
इस राजा के न्याय की बात, जग में सर्वत्र है विख्यात।

दो०-यह इक उज्ज्वल काल था, थे सम्राट महान।
प्रभु कृपा से थे भये, विक्रमादित्य समान।। 6773क
दया भयी थी नाथ की, भारत पै उस काल।
धन धान्य से देश भरा, सब विध वह खुशहाल।। 6773ख
सदा चारी सब लोग थे, व्यसनों से भी हीन।
परस्पर सबमें प्रेम था, दीखत न को दीन।। 6773ग
सम्राट के दरबार में, विद्वत्ता का था मान।
वेद पाठी थे विप्रवर, और वणिक् धनवान।। 6773घ
क्षत्री कुशल थे युद्ध में, महा विजयी वे शूर।
सकल विश्व में भारत, सदाचारी मशहूर।। 6773ङ
भारत के संरक्षक, राम लाल भगवान।
युग युग कृपा कीनी उन, देश की जाय न आन।। 6773च
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6773छ
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, रामलाल लो चेत।। 6773ज

ऐसा काल भविष्य में, देख सका न देश।
अपने दोषों से इस, भोगे बहुत कलेश।। 6773ञ
आपस के ही द्वेष से, देश गया बरबाद।
शत्रु रहा सदा ताक में, कब होवे आबाद।। 6773ञ
भारत ने तो बात यह, कभी न कीनी याद।
कीन आपस की फूट ने, कुरुवंश बरबाद।। 6773ट

ज) कुमारगुप्त (413 A.D. से 455 A.D.)

कीन चन्द्र बहु वर्ष था राज, कुमार गुप्त था तव युवराज।
कुमार ने जब राज संभाला, सुदृढतर शासन उस कर डाला।
'अश्वमेध' उस यज्ञ रचाया, विश्वविजयी इस विध बन पाया।
बहु राजा उस भये अधीना, निज सम्राट कुमार को चीना।
इस काल की क्या करें बढ़ाई, दिशा सकल प्रगति हो पाई।
ऐसा काल न फिर कभी आया, देश इमि जब सुखी हो पाया।
समृद्ध सुखी जब होवे देश, तभी हो रचना शक न लेश।
गुप्त काल बहु भये विद्वान, ग्रंथ रचे जिन कई महान।

दो०-गुप्त काल की रचन का, अब कुछ करें बखान।
बहु रचन तो लुप्त भयी, जभी थे मुसलमान।। 6774

[1]बाण 'कादंबरी' को रच पाया, 'बृहत्कथा' गुणाढ्य लिख पाया।
दण्डी का 'दशकुमार चरित', भवभूति का 'महावीर चरित'।

---

[5]*कादंबरी के रचयिता - बाण; 'बृहत्कथा' के -गुणाढ्य; 'दशकुमार चरित' के -दण्डी; 'महावीर चरित' के -भवभूति; 'बालरामायण' के -राजशेखर; 'मृच्छकटिका' के -शूद्रक; 'नीतिशतक', 'शृंगारशतक' और 'वैराग्यशतक' के -भर्तृहरि।*

इन सभी ग्रंथों का बहुमान, साहित्य के ये रत्न महान।
गुप्तवंश की शोभा जानो, उस काल का करिश्मा मानो।
'बाल रामायण' भी लो जान, राजशेखर की रचन महान।
लिखा शूद्रक ग्रंथ है भाई, 'मृच्छकटिका' जो नाम सुहाई।
भर्तृहरि की रचन लो जान, एक ग्रंथ में तीन लो मान।
तीन शतक जो उस रच पाये, सर्व जगत के चित्त सुहाये।

दो०-एक है शतक 'शृंगार' का, दूजा 'नीति' जान।
तीजा शतक 'वैराग्य' का, रूप जीवन का मान।। 6775क
कला और विज्ञान की, भी उन्नति उस काल।
स्वर्णयुग इतिहास का, था यह उज्ज्वल काल।। 6775ख
ऐसा काल इस देश में, आया न इसके बाद।
'काला काल' व 'धूमिल', ही थे इसके बाद।। 6775ग
उन कालों में भूखमरी, और अत्याचार।
ह्रास धर्म का भी भया, दुखी जन हर प्रकार।। 6775घ
प्रभु केवल उस काल में, भारत के रखवार।
इस का वर्णन फिर करें, दया प्रभु अपार।। 6775ङ

झ) स्कन्धगुप्त (455 A.D. से 480 A.D.)

था जब कुमारगुप्त महाराज, स्कंधगुप्त था युवराज।
कुमारगुप्त जब स्वर्ग सिधारा, स्कंधगुप्त ने राज संभारा।
स्कंधगुप्त का काल विशेष, शत्रु विदेशी आये इस देश।
'हून' मंगोलिया से चलि आये, भारत पर आक्रमण कर पाये।
वीर स्कंध ने उन्हें पछाड़ा, भारत से था उन्हें उखाड़ा।

भाग गये तब वे निज देश, भारत पै कृपा प्रभु विशेष।
गुप्त काल इक बात विशेष, प्रचार योग का भया विशेष।
बंगाल, काबुल व कंधार, सर्वत्र योग का था प्रचार।
बुद्ध धर्म भी योग अपनाया, गुण योग का जान वह पाया।

दो०-सभी योग को मानते, योगिन का था मान।
योगिन के थे नाम पर, बने अनेक स्थान।। 6776क
गोरखापुर प्रसिद्ध है, महायोगी का धाम।
परंपरा जो योग की, उस का उस में नाम।। 6776ख
गोरख नाथ योगी भया, उस काल में मीत।
सिद्ध पुरुष महान वह, शिव से उस की प्रीत।। 6776ग
शिव की ही है परंपरा, चली योग की जान।
गुप्त काल में जान लो, थी प्रसिद्ध महान।। 6776घ
उस काल में योग का, सर्वत्र था प्रचार।
राज और हठ योग का, जगती में प्रसार।। 6776ङ

सिद्ध योगी तब भये अनेक, शिक्षा योग की दे प्रत्येक।
कुछ एक के नाम बतलायें, जग के लोग न भूलन पायें।
योगाचार्यों के ये नाम, जो सभी हैं योग के धाम।
'मीनानाथ' और 'गोरखनाथ', जग को इन ने कीन सनाथ।
'वीरूपाक्ष' 'विलेशय' तात, योगी भये प्रसिद्ध साक्षात।
'मंथान भैरव' भी था प्रसिद्ध, 'सिद्ध वद्ध' भी योगी सिद्ध।
'कथंडी' व 'कोरंटक' जानो, इनको सिद्ध पुरुष तुम मानो।
'चप्रटी' था इक योगी महान, 'कानेरी' योग सिद्ध सुजान।

'पूज्यपाद' था भया विख्यात, 'नित्यानन्द' सिद्ध साक्षात।
'निरंजन' वा 'कपाली' मानो, स्तंभ योग के उनको जानो।

दो०-ऐसे ऐसे योगिजन, भये थे इस देश।
भूल गये हैं नाम तक, महाजनों के लेश।। 677क
योगिजनों ने पुस्तकें, जो लिखीं उस काल।
उनको भी हम देख लें, ज्ञान मिले साक्षात।। 677ख
वह तो इक साहित्य है, दिव ज्ञान का जान।
कहीं विश्व में न मिलत, हो जो इस समान।। 677ग
मुसलमानों ने आयकर, कीना कुछ बरबाद।
जो कुछ अब उपलब्ध है, वर्णूं इस के बाद।। 677घ
योग के उन थे रच दिये, उपनिषद् मेरे मीत।
ऐसा न कहीं ज्ञान है, रहे सबन प्रतीत।। 677ङ
गुप्त काल की देन यह, युग स्वर्ण के बीच।
ऐसा काल न आ सका, फिर भारत के बीच।। 677च

उपनिषदों की बात बताऊँ, एक एक कर सब गिन पाऊँ।
'उपनिषद हंस' सुनो मम मीत, नाद योग की जिस में रीत।
'नादबिन्दु' उपनिषद् भाई, उसमें भी यह बात बताई।
'ध्यान बिन्दु' उपनिषद् जानो, वर्णित कई विषय हैं मानो।
षट्चक्रों का उसमें ज्ञान, प्राणायाम और मिले ध्यान।
मुद्रा, नाद वहां सुखदायी, आत्मनिर्णय कीना भाई।
'अमरितनाद उपनिषद्' जान, प्राणायाम का दीना ज्ञान।
'त्रिशिखिब्रह्मणोपनिषद' एक, जिसमें साधन कथे अनेक।
आसन प्राणायाम बखाने, पंचधारणा ध्यान बताने।

कुण्डली का है दीना ज्ञान, समाधि का भी कीन बखान।
'क्षुरिकोपनिषद' एक विशेष, जिस में नाडिन कथीं अशेष।
सब नाडिन का दीना ज्ञान, जो जो योग में हैं प्रधान।
प्राण से नाडिन का प्रबोध, हो उपनिषद् से ऐसा बोध।
[1]'बह्मविद्योपनिषद' देखा, इस में हंस मंत्र उल्लेखा।

दो०-ऐसे ऐसे उपनिषद्, रचे गये इस काल।
गुप्त वंश के काल में, शांतमयी था काल।। 6778क
शांत सदैव न रह सका, भारत का वह काल।
'हून' उपद्रवी आनकर, लूटन यहां का माल।। 6778ख
हार एक बार खा कर, लौटे फिर इक बार।
परास्त उन्हें न कर सका, स्कंध गुप्त इस बार।। 6778ग
[2]बंट गया यह देश तब, कई राज्यों में मीत।
हून भी आबाद भये, भयी जब उन की जीत।। 6778घ
'हून' उपद्रव करत रहे, सौ वर्ष इस देश।
प्रभु किरपा से बस गये, फिर वे इस ही देश।। 6778ङ
हिन्दू धर्म में मिल गये, यह इक घटन महान।
हिन्दू धर्म महान है, लीना 'हून' पहचान।। 6778च
भारत के संरक्षाक, रामलाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6778छ

---

[1]योगउपनिषद : 1. हंसोपनिषद् 2. नादबिंदूपनिषद 3. ध्यानबिन्दूपनिषद् 4. अमृतनाद उपनिषद्
5. त्रिशिखिब्रह्मणोपनिषद् 6. क्षुरिकोपनिषद् 7. ब्रह्मविद्योपनिषद्

[2]गुप्तवंश के पश्चात जो देश में अलग-अलग राज्य बने वे इस प्रकार थे: 1. गुजरात 2. काठियावाड़
3. दक्षिण में चालूक्य वंश 4. मालवा में हून 5. बंगाल 6. थानेसर (प्रभाकर वर्धन के अधीन)

आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6778ज
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, रामलाल लो चेत।। 6778झ
उदय भया इक वंश तब, 'वर्धन वंश' महान।
थानेसर के नगर में, जो प्रसिद्ध स्थान।। 6778ञ
'प्रभाकर वर्धन' भया विख्यात, उसी वंश का नृप साक्षात।
'प्रभाकर वर्धन' को सब जानें, महा बलशाली नृप पहचानें।
'हूनों' को उस दीनी हार, सर्वत्र फैला यश अपार।
'राज्य वर्धन' फिर भया नरेश, विख्यात भया वह भी इस देश।
इस ने भी थे हून हराये, जो थे मालव नरेश कहाये।
राज्य वर्धन स्वर्ग सिधारा, हर्ष वर्धन तब राज्य संभारा।

ञ) हर्षवर्धन (606 A.D. से 647 A.D.)

हूनों का उस कीन सफाया, उन के नृप को मार मुकाया।
अपने राज्य का कीन विस्तार, सब ने मानी उस से हार।
दो०-बंग देश को जीत कर, विजय कीन आसाम।
मिला लिया गुजरात को, तभी मिला विश्राम।। 6779क
उत्तर भारत में भया, एक छत्र साम्राज्य।
हिमाचल से नर्बद तलक, पूर्ण उसका राज्य।। 6779ख
संस्कृत का था राज्य में मान, हर्ष खुद भी बहुत विद्वान।

[1]तीन नाटक उस ने रच पाये, जो प्रसिद्ध सब ही हो पाये।
इक नाटक 'रत्नावली' जानो, 'प्रिय दर्शिका' दूसर मानो।
तीसरा नाटक 'नागानन्द', जिस के पाठ से मिलत आनन्द।
कवियों का इस पास निवास, हिन्दू धर्म का भया विकास।
योग धर्म जन गण अपनाया, इस काल में फैल वह पाया।
[2]बने योग के ग्रंथ इस काल, 'हठ' के योग का जिन में हाल।
'योग वासिष्ठ' है ग्रंथ महान, योग का जिसमें बहुत ज्ञान।

दो०-इस ग्रंथ में योग की, शिक्षा मिलत विशेष।
एक चित्त जो पढ़त है, पावे ज्ञान अशेष।। 6780क
षट्चक्रण का ज्ञान है, समाधि का भी संग।
प्राणरहस भी मिलत है, जागे जिमि भुजंग।। 6780ख
पंच तत्व की धारणा, वर्णित इस में मीत।
पंच तत्व को लीन कर, मोक्ष मिले सप्रीत।। 6780ग
योगाभ्यास से हो जिमि, पर देह में प्रवेश।
ऐसा साधन है कथा, मिले रहस्य विशेष।। 6780घ

'शिव संहिता' भी ग्रंथ महान, योग का मिलता जिस में ज्ञान।
जो साधन शिव ने बतलाये, वही लिपिबद्ध हैं कर पाये।
इस में पटल हैं पांच महान, जिन में वर्णित सकल ज्ञान।
हठ योग की सीख है दीनी, बहु मुद्रा हैं वर्णित कीनी।

---

[1]राजा हर्षरचित तीन नाटक :- 1. रत्नावली 2. प्रियदर्शिका 3. नागानन्द
[2]हठयोग के कुछेक ग्रंथ :- 1. योगवासिष्ठ 2. शिव संहिता 3. घेरण्ड संहिता 4. गोरक्ष पद्धति 5. हठयोग प्रदीपिका।

षट्चक्रण का रूप बताया, प्राणायाम को भी समझाया।
आसनों का है दीना ज्ञान, राज योग का कीन बखान।
ऐसे ऐसे ग्रंथ महान, इसी काल में रचे हैं जान।
'उज्ज्वल काल' था यह ऐसा, ज्ञान का इस में बहु प्रकासा।

दो०-भारत का यह काल था, 'उज्ज्वल काल' महान।
विश्व ने पाया ज्ञान था, भारत में ही आन।। 6781

'घेरण्ड संहिता' भी रच दीना, ऋषि घेरण्ड का ग्रंथ नवीना।
ग्रंथ सप्त उपदेश का जान, सप्त साधन का कीन बखान।
'षटकर्म' व 'योगासन' जान, 'मुद्रा' का उपदेश पहचान।
चौथा 'प्रत्याहार' को जान, सूक्ष्म मानिये जिस का ज्ञान।
अगला 'प्राणायाम' प्रकरण, 'ध्यान' का कीना षष्ठ में वरण।
सप्तम 'समाधि' योग बखाना, पूर्ण योग का दीन ज्ञाना।
घेरण्ड ऋषि इस विध बताया, सरल रीत से योग सिखाया।
स्पष्ट बात उस ने लिख दीनी, योग बिना नहीं मुक्ति चीनी।

दो०-इस काल जो योग का, लिखा गया था ज्ञान।
सब जगत में वही गया, लेवे जग पहचान।। 6782क
और ग्रंथ जो योग का, लिखा गया उस काल।
'गोरक्ष पद्धति' नाम है, लीना जग संभाल।। 6782ख
गोरक्ष के तो नाम पर, कई बने हैं स्थान।
इस पुस्तक को देखकर, उसी का होता ध्यान।। 6782ग

गोरक्षनाथ आचार्य महान, जग को दीना योग का ज्ञान।

गोरक्षनाथ का यह जो ग्रंथ, थापा जिस ने योग का पंथ।
साधन इसमें सब हैं आये, सुगम रीत से जो लिख पाये।
'षटचक्रन' का कीन बखान, 'नाडिन' का भी दीना ज्ञान।
'दश वायु' बहु खोल बताये, 'मुद्रा' 'बंध' सभी समझाये।
'प्राणायाम' की विधि बतायी, 'धारणा' 'ध्यान' सब सिखलायी।
'समाधि' को भी कीन स्पष्ट, जन्म न जीव का जिमि हो नष्ट।
अजर अमर जिमि जन हो पाये, वे भी हैं उपाय बतलाये।

दो०-पुस्तक गोरक्ष नाथ की, जो पढ़े चित्त लाय।
ज्ञान योग का पाय कर, बहु सुखी हो जाय।। 6783

एक ग्रंथ जो बहु मशहूर, उसको यहां पर कहें ज़रूर।
'प्रदीपिका हठयोग' अभिधान, योग का उसमें पूर्ण ज्ञान।
बहु 'आसनों' का दीना ज्ञान, 'मुद्राओं' का भी कीन बखान।
'षट्कर्म' हैं स्पष्ट बतलाये, 'प्राणायाम' सकल समझाये।
'कुण्डली' का भी कीन बखान, 'समाधि' का भी दीना ज्ञान।
'नादयोग' स्पष्ट बतलाया, उसका रहस्य भी समझाया।
उस काल थे योगी महान, सिद्ध पुरुष वे सभी सुजान।
धर्म का था उज्ज्वल काल, सब विध सुखी देश उस काल।

दो०-दृढ़ हर्ष का राज्य था, प्रजा सुखी उस काल।
अभी तलक इतिहास में, प्रसिद्ध हर्ष का काल।। 6784क
अन्तिम काल वह हो गया, बुद्ध धर्म अनुयायी।
त्यागा हिन्दू धर्म को, यह भूल हो पायी।। 6784ख

बुद्ध धर्म के कारणे, अशोक भया बरबाद।
बुद्ध धर्म के कारणे, कनिष्क भी बरबाद।। 6784ग
बुद्ध धर्म के कारणे, हर्ष का उजड़ा राज।
बुद्ध धर्म के कारणे, दुर्बल भया समाज।। 6784घ

बुद्ध धर्म हर्ष अपनाया, खण्डित राष्ट्र सभी हो पाया।
शिक्षा न इतिहास से लीनी, देश की हानि इस विध कीनी।
भारत का स्वभाव ही जान, इतिहास से सदैव अनजान।
सचमुच हर्ष की थी यह भूल, बुद्ध धर्म जो कीन कबूल।
हिन्दू धर्म दुर्बल हो पाया, खण्डित सकल देश हो पाया।
हिन्दू धर्म का देख ज़वाल, और देश का बदतर हाल।
राजपूत उठ पाये उस काल, शंकर लीना धर्म संभाल।
ईश्वर कृपा से हो पाया, हिन्दू धर्म को जिस बचाया।
दो०-[1]शंकराचार्य उदय भया, संकट के उस काल।
ब्राह्मण कुल में जन्म कर, लीना धर्म संभाल।। 6785क
भारत के संरक्षक, रामलाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6785ख
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6785ग
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, रामलाल लो चेत।। 6785घ

[1]शंकराचार्य 788 A.D. से 820 A.D.

ब्राह्मण घर था शंकर जाया, शंकर का अवतार कहलाया।
बाल्यकाल ही भया विद्वान, धर्म धुरन्धर महा विद्वान।
कुमारल भट्ट से शिक्षा पाई, और योग की कीन कमाई।
वेद वेदान्त और पुराण, षट्दर्शनों का था विद्वान।
सभी शास्त्र उस के कण्ठस्थ, लिखे थे उसने बहुत ग्रंथ।
हिन्दू धर्म की देख के हान, ललकारा बौद्धों को उस आन।
बौद्ध यदि समक्ष कोई आता, हार खा कर उससे जाता।
वेदों शास्त्रों से दे प्रमाण, अपने धर्म का करत बखान।

दो०-वेद ईश्वरी ज्ञान है, हिन्दू धर्म महान।
बौद्ध धर्म इक मनुष्य ने, है चलाया आन।। 6786

ईश्वरी धर्म का हो सन्मान, हिन्दू धर्म को लो सब मान।
त्याग के बुद्ध धर्म की शरण, हिन्दू धर्म को कर लो वरण।
वेद वर्णआश्रम को मानत, भिक्षावृत्ति नहीं सन्मानत।
भिक्षुक बनना महा अपराध, भिक्षा करनी धर्म में बाध।
करे जो वेदों का स्वाध्याय, परम ज्ञान वह वहां से पाय।
ईश्वर की तुम शरण में आओ, 'बुद्धं शरणं' न रट पाओ।
धर्म की शरण में जाना होय, गीता से तब ज्ञान को गोय।
उपनिषदों को पढ़ें सब लोग, आत्म ज्ञान व जिनमें योग।

दो०-वेद ईश्वरीय ज्ञान है, और न इस समान।
बौद्ध धर्म को त्याग कर, हिन्दू धर्म लो मान।।6787

हिन्दुस्थान हिन्दुओं का देश, इसमें संशय है नहीं लेश।

बुद्ध धर्म न यहां रह पाये, कह रहा हूं मैं शंख बजाये।
जो जन सुनें मम शंख पुकार, हिन्दू धर्म को करें स्वीकार।
इस विध गाँव गाँव में जाय, शंकर था निज शंख बजाय।
शंख नाद कर मैं ललकारूँ, सब को आओ आओ पुकारूँ।
साहस हो जो किसी में भाई, बहस करे मुझ सन्मुख आई।
हठ पूर्वक यदि को आ जाता, ठहर न उस समक्ष वह पाता।
नगर डगर शंकर जा पाता, शास्त्रार्थ वह बौद्ध बुलाता।
जो आता वह हार के जाता, शंकर सन्मुख ठहर न पाता।

दो०-एक एक कर हार गये, सब बुद्ध अनुयायी।
हिन्दू धर्म स्वीकारा, बौद्धता ठुकरायी।। 6788क
देश किया था खण्डित, बुद्ध धर्म ने मीत।
बौद्धों को परास्त कर, शंकर की भयी जीत।। 6788ख
अखण्ड देश उस कर दिया, हिन्दू धर्म अनुसार।
[1]चारों दिशा में थापे, निज धाम उस चार।। 6788ग

'बद्रीनाथ' उत्तर में धाम, और दक्षिण 'रामेश्वर' धाम।
बनाया 'पुरी' पूर्व में धाम, 'द्वारका' बना पश्चिम में धाम।
उत्तराखण्ड है बद्री नाथ, जोशीमठ भी उसके साथ।

---

[1]चार धाम :-

1. बद्रीनाथ :- उत्तराखण्ड में गढ़वाल जिले में। समुद्रतट से 23210 फीट की ऊँचाई पर है केवल मई-जुलाई में बड़ी कठिनाई से यात्री वहां जा सकते हैं।
2. रामेश्वर :- मद्रास प्रांत में गन्धमाद्रन पर्वत पर, समुद्र के किनारे एक टापू पर।
3. जगन्नाथपुरी :- उड़ीसा प्रान्त में समुद्र के किनारे पर।
4. द्वारका :- पश्चिम सीमा पर काठियावाड़ में समुद्र के किनारे।

समुद्रतट से बहुत उँचाई, बर्फीला मार्ग कठिन चढ़ाई।
मद्रास में रामेश्वर जान, समुद्रतट पै सुन्दर स्थान।
पुरी को पूर्व दिशा में जान, उड़ीसा में पवित्र स्थान।
द्वारका धाम प्रसिद्ध महान, काठियावाड़ में लेवो जान।
शंकर चार धाम रच पाया, हिन्दूस्थान अखण्ड दिखाया।

दो०-अखण्ड देश उस कर दिया, हिन्दू धर्म अनुसार।
चारों दिशाओं थापे, धर्म धाम उस चार।। 6789क
चारों धाम बनाय कर, शंकर था निश्चिंत।
बौद्ध एक न यहां रहे, हिन्दुस्तान सीमान्त।। 6789ख
यह उस का आदेश था, सर्व जगत को मीत।
आदेश उस का श्रवण कर, बौद्ध भये सभीत।। 6789ग
शंकर सिद्ध था योगी, और महा विद्वान।
उसके भय से भीत हो, आज्ञा लीनी मान।। 6789घ
कुछ ने प्रस्थान किया, व हिन्दू धर्म स्वीकार।
इस विध शंकर ने किया, महा अंसभव कार।। 6789ङ

[1]वह भागीरथ कार्य कर पाया, संकट से था देश बचाया।
यदि यह कदम न शंकर उठाता, हिन्दू धर्म तब मिट ही जाता।
शंकर का था कड़ा आदेश, जो जन बसते भारत देश।

---

[1]विचार :- *फिर संकट है देश पै आया, सदियों पाछे रूप दिखाया।*
निज भूलों ने इसे बुलाया, इस का कैसे होय सफाया।
वह शंकर यदि फिर आ पाये, हिन्दू धर्म को वही बचाये।
इस संकट को टाले कौन, अब तो हिन्दू स्वयं हैं मौन।

'बुद्धंशरणं' न कह पायें, 'शिवशरणं' ही सब जन गायें।
शंकर ने जो कारज कीन, सहयोग राजपूतों ने दीन।
खण्डित देश संभाल वे पाये, सुन्दर सुन्दर राज बनाये।
सब ने हिन्दू धर्म अपनाया, राज्य धर्म था उसे बनाया।
हिन्दू पर्व वे सभी मनाते, देव पूजन में श्रद्धा लाते।

दो०-वीरता का वह युग था, और धर्म भी साथ।
मिल कर दोनों ने तभी, काम किया इक साथ।। 6790क
ईश्वर की कृपा भयी, भारत पै उस काल।
उस असमंजस के समय, लीना देश संभाल।। 6790ख
भारत के संरक्षक, राम लाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6790ग
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6790घ
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, राम लाल भी चेत।। 6790ङ

ट) राजपूतों का काल (650 A.D. से 1200 A.D.)

राजपूतों ने देश संभाला, धन धान्य से इसे भर डाला।
हिन्दू धर्म जनगण अपनाया, इसे देश विदेश फैलाया।
छः सदियों तक रहा यह काल, उस समय था देश खुशहाल।
हिन्दू राज्य थे बहु बन पाये, नाम सभी इतिहास में आये।
प्रत्येक वंश का निज अभिधान, उसी नाम से उसकी शान।

राज्यों में थी प्रजा सुख्यारी, धर्म परायण सब नर नारी।
[1]लाहौर में 'पाल' वंश का राज, जय व आनन्द कीन था राज।
दिल्ली तन्वार वंश अधीन, पृथ्वी राज ने राज वहीं कीन।
गुज्जर थे गुजरात प्रदेश, कीना विस्तृत उन निज देश।
अग्निकुल कन्नौज में जान, राजा भोज भी इसमें मान।

दो०-जयचन्द कन्नौज नृप, था भया विख्यात।
द्रोही पृथ्वीराज का, हो गया कुख्यात।। 6791

मालव देश प्रमार अधीन, बहु विख्याती इस ने लीन।
प्रजा सुख्यारी इन अधीन, नृप यशस्वी और प्रवीन।
दो राजा भये बहुत महान, इक भुज और भोज लो मान।
[2]भोज वीर और था विद्वान, जिसके लोक में कई प्रमान।
काश्मीर राज की अपनी शान, जहां करकोट वंश प्रधान।
चार सौ साल तक रहा अधिकार, स्थिर रही वहां यह सरकार।
राजा जय सिंह एक नरेश, उस के काल इक कवि विशेष।
कल्हण जिस का था अभिधान, उस का मान करें विद्वान।
'राजतरंगिनी' उस लिख पाई, सर्वत्र जिसको मिली बढ़ाई।

---

[1]*राजपूत राजाओं के वंश और उनके राज्य का स्थान :-*

1. पालवंश - लाहौर में *2. तन्वारवंश - दिल्ली में* *3. गुज्जर वंश - गुजरात में*
4. अग्निकुल - कन्नौज में *5. प्रमार वंश - मालवा में* *6. करकोट वंश-काश्मीर में*
7. सैन वंश - बंग-बिहार में *8. चन्देल वंश - विन्ध्याचल में* *9. पहलव वंश - तिंजौर में*
10. चालूक्य वंश-दक्षिण भारत में *11. यादव वंश-मसूर में* *12. पीड़िया वंश -मद्रास में*
13. चीरा वंश - मालाबार में *14. चोला वंश - कारोमण्डल में*

[2]*राजा भोज ने 1018-1068 तक राज किया। यह वीरता और कुशल शासन के लिए प्रसिद्ध हुआ। उसने ज्योतिष और काव्य ग्रंथ भी लिखे।*

दो०-'राजतरंगिनी' ग्रंथ जो, उसका मान विशेष।
इतिहास का है ग्रंथ वह, व साहित्य विशेष।। 6792

बंग बिहार पालों का राज, गये वहां फिर सैन विराज।
यशस्वी नृप भये इस देश, जिनमें गुण थे कई विशेष।
बुन्धेल खण्ड चन्देल अधीन, दीर्घ काल उन राज्य वहां कीन।
पहलव वंश तिंजोर में जान, त्रिचनपली भी उन की मान।
कांजीवरम राज की धानी, समृद्धि की जो खास निशानी।
'ह्यून सांग' बहु लिख है पाया, समृद्धि का उस हाल बताया।
दक्षिण में चालूक्य स्थापित, विशाल राज उन कीन स्थापित।
एजन्टा की गुफायें जानो, जगत प्रसिद्ध हैं वे मानो।
वे भी इसी देश में भाई, उन की ख्याती जग में छायी।

दो०-ह्यून सांग के लेख से, जान पायें हैं लोग।
बहु समृद्ध यह राज्य था, प्रशंसा के व योग।। 6793क
सुन्दर सुन्दर राज्य ये, थे सभी इस देश।
उनकी उपमा जगत में, थी कहीं नहीं लेश।। 6793ख
साहित्य का निर्माण भया, और कला का साथ।
राजपूतों के काल में, भारत भया सनाथ।। 6793ग
हिन्दू धर्म विकसित भया, मन्दिर बने विशाल।
मूर्तिन के निर्माण में, शिल्पिन कीन कमाल।। 6793घ
ऐसे सुन्दर राज्य भये, उस काल में मीत।
उजड़ गये वे राज्य सब, भया जब काल विप्रीत।। 6793ङ

'काले काल' में हो गया, बुरा देश का हाल।
उजड़ गया तब देश यह, जो था बहु खुशहाल।। 6793च

यादव कुल मासूर आसीन, कुल कृष्ण का बहु प्राचीन।
इस ने राज्य किया बहु काल, प्रजा समस्त थी बहु खुशहाल।
पांडिया का मद्रास में राज, बहु विशाल था यह भी राज।
राजधानी थी मदुरा नगरी, धनधान्य से भरी जो सिगरी।
बन्द्रगाह प्रसिद्ध महान, उस राज्य की जानो शान।
हीरों का था होत व्योपार, वणिक थे जाते समुद्र पार।
जग में उन की ख्याती भारी, मान करत थी दुनिया सारी।
आय विदेशी लाभ उठाते, 'हिन्द स्वर्ण चिड़िया' कह पाते।

दो०-सोने की थी चिड़िया, भारत का यह देश।
धनधान्य से भरपूरित, था अभाव न लेश।। 6794क
सकल देश में बस रहे, लोग सभी खुशहाल।
न्याय का था शासन, धन से माला माल।। 6794ख
एक ही यहां धर्म था, हिन्दू धर्म महान।
राज धर्म भी था वही, गौ ब्राह्मण का मान।। 6794ग
नहीं स्वप्न में था किसे, आयेगा इक काल।
लुट जायेगी संपदा, होय धर्म बेहाल।। 6794घ
लूट मार का होयगा, सदियों गर्म बाज़ार।
होगा भारत वर्ष में, भूख मरी का हाल।। 6794ङ

दोष न होगा अन्य का, अपना होय कसूर।
अपने ही तो दोष से, भारत चकना चूर।।6794च

मालाबार के तट पर राज, वहां पर तीरा वंश विराज।
प्रजा वहां की अति खुशहाल, प्रजातन्त्र वहां था उस काल।
अरब देश से था व्योपार, हीरे मोतियों का व्यवहार।
चोला वंश भी रहा विराज, कारोमण्डल तट पै राज।
बहु सुखी थे वहां के लोग, सुख संपदा और सब भोग।
राजा राज देव के राज, खुशहाली रहत सदा विराज।
कावेरी पद्म थी बन्द्रगाह, बाहिर का व्योपार अथाह।
ऐसा था वह उज्ज्वल काल, जिस में देश परम खुशहाल।

दो०-देश परम खुशहाल था, उस समय लो जान।
'स्वर्ण चिड़िया' के नाम से, जग में था बहु मान।। 6795क
भारत वर्ष विशाल था, इसकी सीम महान।
और देश नहीं जगत में, था जो इस समान।। 6795ख
काबुल व कंधार तलक, भारत का विस्तार।
जावा और सुमात्रा, में भारत का प्रचार।। 6795ग
भारत की जो सभ्यता, मानते सब थे लोग।
अवशेष उसके अब भी, जाते देखान लोग।। 6795घ
संस्कृत भाषा में लिखे, पत्थरों पर श्लोक।
स्पष्ट बात बतला रहे, वहां थे हिन्दूलोक।। 6795ङ

लंका चीन जापान में, था भारत का प्रभाव।
नेपाल और स्याम में, भी था ऐसा भाव।। 6795च
चीनी तुरकिस्तान में, बसते हिन्दू लोग।
संस्कृत के बहु लेख वहां, देख रहें हैं लोग।। 6795छ
देश के जिन राज्यों का, वर्णन कीना हाल।
देश की वे शान थे, उनसे देश खुशहाल।। 6795ज
भूपर वे थे चमकते, नभ में जैसे तार।
उन के तब प्रकाश का, चारों दिक विस्तार।। 6795झ
देख खुशहाली देश की, लुटेरों के मन लोभ।
जाकर लूटें देश को, उनके चित्त क्षोभ।। 6795ञ
बारी बारी आय कर, करते लूट व मार।
धीरे धीरे बढ़ गया, उनका यह आचार।। 6795ट
उनका अब हम कर रहे, आगे वर्णन मीत।
पढ़िये उनकी दासतां, दृढ़ करके तुम चीत।। 6795ठ

ठ) पहली लूटमार (711 A.D. -मुहम्मद बिन कासिम)

सिंध राज्य का यह इतिहास, डाका पड़ा वहां था खास।
दाहर वहां का था नरेश, सब विध सुखी था वह प्रदेश।
मुहम्मद कासिम इक सरदार, बसरा से आया कर विचार।
लूटन भारत को मैं जाऊँ, लूटमार कर धन बहु लाऊँ।
भई सिंध में जब लड़ाई, वीर गति थी दाहर पाई।
लुटेरे ले गये धन बहु लूट, उन्हें खुली मिली थी छूट।

ले गये स्त्रियां पुरुष उठाय, भये गुलाम जो बसरा जाय।
इस घटना का महत्व महान, उत्साहित भये लुटेरे मान।
लूटमार का माल बहु देखा, लुटेरों ने निज चित्त उल्लेखा।
अब तो खुला है मार्ग भाई, हिन्दुस्तान से करो कमाई।
'स्वर्ण चिड़िया' को लेवें लूट, अल्ला ने है दीनी छूट।

दो०-दुष्ट लुटेरे आन कर, सतत करें प्रहार।
लूटमार कर ले चलें, यहां से बहु उपहार।। 6796

ड) दूसरी लूटमार (970 A.D. -सुब्बकतगीन)

अफगानिस्तान का सुलतान, चढ़ कर आया हिन्दुस्तान।
सुब्बकतगीन था उस का नाम, भारत लूटना उस का काम।
लाहौर पै उस कीन चढ़ाई, जयपाल से भयी लड़ाई।
हार गया नृप जय था पाल, लूटा उस ने शहर का माल।
और भी लूटमार उस कीन, अपने जुलम का परिच दीन।
लोभी जन क्या न कर पाये, लूटमार ही कर दिखलाये।
अवसर मिला था उसे घनेरा, लूटा माल उसने बहुतेरा।
जा पेशावर कब्जा कीना, उसे निज अधिकार में लीना।
घर वापस वह पहुंच न पाया, मारग में ही था मर पाया।

दो०-धन लूटन की लालसा, ले आई इस देश।
इसी देश में अन्त भया, चली न उसकी पेश।। 6797क

ढ) तीसरी से उन्नीसवीं लूट मारें

(997 A.D. से 1030 A.D. -महमूद गज़नवी)

दो०-सुब्बकतगीन का पुत्र, महमूद उस का नाम।
लूट मार के कारणे, भया बहु बदनाम।। 6797ख
सतरह बार उस कीनी, लूट मार यहां आय।
लूटा जो उस माल था, गणना न हो पाय।। 6797ग

सतरह बार उस कीन चढ़ाई, लूटमार की मची दोहाई।
भारत के थे लोग हैरान, कहां से आया यह शैतान।
बार बार वह चढ़ कर आया, अपना लशकर संग था लाया।
प्रत्येक बार ही लूट का माल, अथाह ले जाता संग संभाल।
[1]मथुरा में जब लूट मचाई, तीन सप्ताह तक वह चल पाई।
नगर डगर मन्दिरों में जाय, लूटमार की धूम मचाय।
जो कैदी ले गया था साथ, जाय बेचे लोगों के हाथ।
प्रति गुलाम का मोल बताते, दो रुपये में बेचे जाते।
[2]'काले काल' का यह आग़ाज़, जो लोग झेल रहे थे आज।

दो०-होगा 'काला काल' जब, बदतर इस से होय।
गौ मांस तक बिकेगा, खुले बाज़ार हि सोय।। 6798क
खूब मथुरा को लूटा, हुआ न पर संतोष।
[3]सोम नाथ पर जा चढ़ा, जहां अथाह धन कोष।। 6798ख

[1]मथुरा की लूटमार - 1019 A.D.
[2]आग़ाज़ - आरंभ
[3]सोमनाथ मन्दिर की लूट - 1025 A.D.

शीघ्र ही वह लूट गया, कुछ चली नहीं पेश।
लूट कर सभी ले गया, धन बचा नहीं लेश।। 6798ग

ऐसे ही हो जायगा, भारत देश गरीब।
वह काल भी आयगा, न रोटी होय नसीब।। 6798घ

रोटी होय नसीब न, गरीब देश के लोग।
स्वयं विचारें जन यहां, किन पापों का भोग।। 6798ङ

बिन पाप नहीं मिलत है, दुख जगत के बीच।
न्याय ईश्वर का जानिये, नपा तुला समीच।। 6798च

चलेगा सहस्त्रवर्ष तक, ऐसा ही प्रवाह।
विदेशों में चल जायगा, देश का धन अथाह।। 6798छ

महमूद ने भी पा लिया, निज पापों का फल।
लूटमार का धन वह, संभाल सका न पल।। 6798ज

गज़नी को भी लूट लिया, शत्रुओं ने उस काल।
नष्ट भया परिवार सब, सर पर उमड़ा काल।। 6798झ

इस्लाम सिखाये सलामती, करें ये अत्याचार।
सिर फिरे कहां समझते, बिन किसमत की मार।। 6798ञ

लूटमार कर देश में, महमूद भया बरबाद।
मुहम्मद गौरी आ गया, भारत में उस बाद।। 6798ट

ण) बीसवीं लूटमार (1174 से 1194 A.D. -मुहम्मद गौरी)

साहस मुहम्मद ने किया, लूटमार का मीत।
[1]तरायिण के मैदान में, मार पड़ी लो चीत।। 6798ठ

राजपूतों से भयी लड़ाई, भाग कर उस जान बचाई।
पृथ्वीराज चौहान महान, दिल्ली का सिरताज लो जान।
गौरी की चली लेश न पेश, गया भाग वह निज ही देश।
हार कर भी शर्म न आई, एक बार फिर कीन चढ़ाई।
भारत का दुर्भाग्य लो जान, अपने भाई करें परशान।
देश द्रोह से न डर पायें, अपने भाइयों को मरवायें।
शत्रु से वे करेंगे प्यार, अपने देश की चाहते हार।
यह दोष कभी निकल न पाय, सदैव यह तो संग रह पाय।
कनौज का राजा था जय चन्द, देश द्रोही व मन का मन्द।
राजा कांगड़ा को संग लीन, और गौरी की मदद कीन।

दो०-जयचन्द को जान लो, एक विभीषण अन्य।
एक लंका का द्रोही, भारत का यह अन्य।। 6799क
[2]थानेसर के खेत में, भई घोर लड़ाई।
पृथ्वी राज की क्या चले, जब विद्रोही भाई।। 6799ख
देश द्रोह का फल मिला, जय चन्द को मीत।
उसका भी उस छीन लिया, राज गौरी ने चीत।। 6799ग

[1]तरायिण (तरावड़ी) की लड़ाई 1191 A.D.
[2]थानेसर की लड़ाई 1193 A.D.

[1]युद्ध चन्दावड़ में भया, मिला फूट का फल।
राजपूत परास्त भये, टिके न वे उस पल।। 6799घ
यह केवल न फूट थी, सरासर था पाप।
देश सम्पूर्ण के लिए, यह था इक अभिशाप।। 6799ङ
शत्रु का उत्साह बढ़ा, रुकी न उस की चाल।
कीना भारत वर्ष पर, उसने निज अधिकार।। 6799च
इस घटना के साथ ही, 'उज्ज्वल काल' समाप्त।
'काला काल' आरम्भ भया, आई देश पै आफ्त।। 6799छ

इति

भारत माता के इतिहास का 'उज्ज्वल काल' समाप्त।

[1]*चन्दावड़ की लड़ाई 1194 A.D.*

4. काला काल

(1200 A.D. से 1700 A.D.)

काले काल का स्वरूप :-

दो०-मुसलमान थे छा गये, आर्यवर्त में मीत।
करन हकूमत चाहत थे, भारत पर लो चीत।। 6799ज
पांच सदी तक राज किया, यह दुर्भाग्य है मीत।
जो भया उस काल मध्य, सुनिये सह प्रतीत।। 6799झ
जो जो कुछ उस काल में, हुआ देश में मीत।
साँस रोक श्रवण करो, धर धैर्य स्व चीत।। 6799ञ
एक बात न भूलनी, यह ऋषियों का देश।
तप करना स्वभाव है, हार न मानत लेश।। 6799ट
भारत के संरक्षक, राम लाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6799ठ
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6799ड
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, राम लाल लो चेत।। 6799ढ
जो कुछ किया उस काल में, मुसलमानों ने मीत।
संक्षेप से वर्णन करूँ, पढ़िये सह प्रतीत।। 6799ण

जब अधिकार देश पै कीना, प्रथम लक्ष्य मन में यह चीना।
समस्त देश पै कर अधिकार, करेंगे शासन मन अनुसार।
सदियां पांच राज उन कीन, शांति देश की लीनी छीन।

खून से रंग गया था देश, डंके युद्ध के बजत हमेश।
परास्त भया था देश संपूर्ण, स्वप्न भया था उन का पूर्ण।
दूज लक्ष्य उनके मन जान, हिन्दू बनें सब मुसलमान।

दो०-हो इस्लाम हि देश में, हिन्दू रहे न कोय।
'हिन्दुस्थान' यह न रहे, देश इस्लामी होय।। 6800

इस हेतु बहु कारज कीने, हिन्दुओं ने भुला अब दीने।
प्रथम ब्राह्मणों को उन लीन, तिलक पोंछ काट चोटी दीन।
गौ का माँस उन्हें खिलाते, और थे मुसलमान बनाते।
जन काश्मीरी पण्डित सारे, बना मुसलमान पाये सारे।
जिस ने ज़रा कीन तकरारा, उसे खडग के घाट उतारा।
मददगार यदि कोई आया, मददगार भी मार मुकाया।
इतिहास में उन कुछ के नाम, नाम लेने से न कुछ काम।
ऐसे प्रसंग न करें बखान, वे तो लो अनगिनित ही जान।
काश्मीर में जिस विधि हो पाया, वैसे ही सर्वत्र छाया।

दो०-सब देश था दहल गया, हो रहा क्या मीत।
'काला काल' इतिहास का, यह काल की रीत।। 6801

यह तो एक रीत बन पायी, ज़बरदस्ती यह रीति चलाई।
[1]हिन्दुओं को काफ़िर कह पाते, या वे 'बेइमान' कहलाते।

---

[1]'बे इमान'-इस्लाम पर विश्वास न करने वाला। इस शब्द का बिगड़ा हुआ रूप 'बयीमान' प्रचलित हुआ जिसका भाव होता है 'बुरा मनुष्य'

जो जन हो न मुस्लमान, 'बेइमान' वह जान।
ऐसा ही विश्वास था, उस काल लो जान।।

हिन्दुओं का गिर पाया मान, मान पाते थे मुसलमान।
हिन्दुओं के मन्दिर तुड़वाये, उन के नाम निशान मिटाये।
कृष्ण भगवान का जन्म स्थान, मथुरा में प्रसिद्ध लो जान।
वहां पर मस्जिद ही बन पाई, पूजे कृष्ण को न को भाई।
अयोध्या उपजे राम भगवान, बाबरी मस्जिद वहां लो जान।
मन्दिर असंख्य थे गिरवाये, उन की संख्या को गिन पाये।

दो०-'काले काल' इतिहास का, मुख्य यही था काम।
हिन्दू धर्म त्याग कर, मुस्लिम बनें तमाम।। 6802

बहु संख्या मुस्लिम बन पायी, तसल्ली इस से न पर आई।
अभी तो हिन्दू थे बहुतेरे, किमि आवें इस्लाम के घेरे।
हिन्दुओं पर जब कर लगायें, स्वेच्छा से मुसलिम बन पायें।
[1]इस विचार से कर लगाया, 'जज़िया' जिस का नाम रख पाया।
हिन्दू होने का जुरमाना, पड़ता हिन्दुओं को भुगताना।
जब जन मुसलमान बन पाये, 'जज़िया' से वह मुक्ति पाये।
दरिद्र जन कर दे न पाते, मुस्लिम धर्म वे अपनाते।
दरिद्र जनता मुस्लिम बन पाई, यह नीति बहु काम में आई।
हिन्दू थे मुस्लिम बन पाये, ग्राम ग्राम में मुस्लिम छाये।
हर ग्राम मस्जिद बन पायी, पुरातन सभ्यता दब पायी।

[1]'जज़िया'-मुसलमानों के राज्य में एक टैक्स था जो केवल हिन्दुओं को देना पड़ता था। मुसलमान बन जाने पर उस कर से छूट हो जाती।

दो०-भारत का स्वरूप जो, था उस 'उज्ज्वल काल'।
नकशा सारा पलट गया, आया 'काला काल'।। 6803क

केवल इतना ही नहीं, भई और भी बात।
कृष्ण चन्द्र के देश में, गौएं मारी जात।। 6803ख

गौ मांस बिकने लगा, सरे आम बाज़ार।
हिन्दू मन में सोचते, कैसा अत्याचार।। 6803ग

एक बात का और भी, देवें कर बखान।
हवन सुगंधी की जगह, हुक्का भया प्रधान।। 6803घ

अनहोनी इक बात भई, पवित्र हिन्दुस्तान।
कबरों से लगने लगा, भारत कबरस्तान।। 6803ङ

कबरों पर बनने लगे, शानदार आकार।
हिन्दू तो मज़बूर थे, करें काम बेग़ार।। 6803च

बद से बदतर बात इक, जो भई उस काल।
परदे अन्दर स्त्रियां, रहन लगीं उस काल।। 6803छ

पांच सदियों में जो भया, को सके सभी कथ।
जुलम सितम की बात की, नहीं इति, नहीं अथ।। 6803ज

हिन्दुओं का था देश यह, नाम से हिन्दुस्थान।
आया 'काला काल' जब, छा गये मुसलमान।। 6803झ

मुसलमान सम्राट जो, क्रमशः आये मीत।
एक सबन का काम था, सुनिये सह प्रतीत।। 6803ञ

भारत की जो सभ्यता, समूल किया उन नाश।
संस्कृत ग्रंथ जो देश के, उनका कीना नाश।। 6803ट
फारसी भाषा ही पढ़ें, या अरबी सब लोग।
संस्कृत से क्या काम अब, पढ़ें न इस को लोग।। 6803ठ
जहां 'कुरान' है आ गया, न और से कुछ काम।
लेकर इस विश्वास को, जलाये ग्रंथ तमाम।। 6803ड
सम्राट जो भी था भया, उसका यह ही काम।
भारत के तो रक्षक, उस काल में थे राम।। 6803ढ
भारत के संरक्षक, रामलाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6803ण
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6803त
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, रामलाल लो चेत।। 6803थ

[1]पांच सदी तक राज्य यहां कीन, देश पर अधिकार कर लीन।
पहले थे अफ़गानी लोग, पाछे बना मुगलों का योग।
[2]तीन सदी तक अफ़गानी राज, [3]दो सदियां था मुगल सम्राज।

---

[1] काले काल के पांच सौ साल 1200 A.D. - 1700 A.D.
[2] अफ़गानी राज – 1200 A.D. - 1500 A.D.
[3] मुगली राज – 1500 A.D. - 1700 A.D.

[1]पांच वंश अफ़गानों के आये, क्रमशः थे जो राज कर पाये।
उन के नाम सुनो तुम मीत, कटर मतस्वी सब को चीत।
प्रथम 'गुलाम वंश' को जान, फिर लो 'खिलजी वंश' पहचान।
तीजा 'तुगलक वंश' है भाई, चौथा 'सादात वंश' दुखदायी।
पंचम 'लोधी वंश' पहचान, इसके बाद खतम अफ़गान।

दो०-पांच वंशों में जो भये, सम्राटों को लो जान।
कारनामें उन सबन के, भारत विरोधी मान।। 6804

क) गुलाम वंश (1206 A.D. से 1290 A.D.)

[2]प्रथम 'गुलाम वंश' लो जान, जिस में छः नरेश लो मान।
पहला 'ऐबक' कुतुबअलदीन, दूजा 'शमश अलतमश' अलदीन।
तीजी 'रज़िया' बेगम भाई, चौथा 'नासर' दीन कहाई।
पंचम 'बलबन' को लो जान, बहादुर इक सरदार लो मान।
छटा 'कीतबाद' लो जान, उसके बाद सब समाप्त मान।
एबक शाह जो कुतुबदीन, चार वर्ष उस राज्य था कीन।
मुहमद गौरी का वह गुलाम, सुलतान बन उस पाया नाम।
कई राज्यों पर कीन चढ़ाई, और विजय थी उस ने पाई।

---

[1]*अफ़गानी राजाओं के पांच वंश*

1. गुलाम वंश -1206 A.D. - 1290 A.D. *2. खिलजी वंश - 1290 A.D.- 1320 A.D.*
3. तुगलक वंश -1320 A.D. - 1414 A.D. *4. सादात वंश - 1414 A.D.- 1450 A.D.*
5. लोधी वंश -1450 A.D. - 1526 A.D.

[2]*'गुलामवंश के छः नरेश*

1. कुतुबअलदीन ऐबक-1206 A.D.-1210 A.D. *2. शमश अलदीन अलतमश-1211 A.D.- 1236 A.D.*
3. रज़िया बेगम-1236 A.D.-1242 A.D. *4. नासरअलदीन महमूद-1242 A.D.- 1266 A.D.*
5. गयास अलदीन बलबन-1266 A.D.-1286A.D. *6. कीतबाद 1286 A.D.- 1290 A.D.*

[1]लूट मार वह था कर पाता, निज आका का स्वभाव बताता।
बंगाल बिहार और गुजरात, बुन्देलखण्ड भी वा साक्षात।
उस ने विजय सभी कर पाये, राज्य अपने में वे मिलाये।

दो०-राज्य 'एबक' ने किया, चार वर्ष तक मीत।
उसका भी गुलाम इक, 'अलतमश' लो चीत। 6805

गुलाम का भी एक गुलाम, 'अलतमश' कहें उस का नाम।
'एबक' बाद हो तखत नशीन, उस ने बहुत युद्ध थे कीन।
रन्थमभोर जीत वह पाया, ग्वालियार निज राज्य मिलाया।
उज्जैनी को जीत वह पाया, 'सुलतान हिन्द' नाम धराया।
'अलतमश' की जब भयी वफ़ात, रजिया पुत्री उस की साक्षात।
वह राज्य संभाल थी पायी, शासक इक वह योग्य कहलायी।
अलतमश का एक था भाई, नासरदीन महमूद कहाई।
रजिया बाद भया सुलमान, उस की अपनी थी ही शान।
शाह बन फ़कीर सम रहता, अपने कार्य स्वयं कर पाता।

दो०-खज़ाने से न लेत था, निज खर्च वह शाह।
पुस्तकें लिख कमाता, जिस से करत निर्वाह।। 6806क
नासर के पश्चात फिर, बलबन भया आसीन।
वह था उसका मन्त्री, कार्य कुशल प्रवीण।। 6806ख
फ़ारसी अरबी का प्रचार, उस के राज्य में बेशुमार।
[2]बहुत शायरों को दीनि शरण, 'खुसरो' का विशेष है वरण।

---

[1]आका -स्वामी (मुहम्मद गौरी)
[2]अमीर खुसरो अरबी, फारसी का प्रसिद्ध विद्वान कवि हुआ है।

कीतवाद भी बना नरेश, चार वर्ष उस अधीन था देश।
यहीं तक ही था वंश गुलाम, भारत को जिस कीन गुलाम।
भारतवर्ष भया बदनाम, गुलामों का भी बना गुलाम।
इसमें किस्मत का नहीं काम, अपनी भूलों का परिणाम।
गुलाम वंश के बाद लो जान, 'खिलजी' वंश का राज्य लो मान।
[1]पैंती वर्ष उन राज्य चलाया, कतलगारत का दृश्य दिखाया।

ख) खिलजी वंश (1290 A.D. से 1325 A.D.)

[2]नृप थे तीन भये इस काल, प्रथम नृप भया 'दीन जलाल'।
दूसर 'अलाउलदीन' लो जान, 'मुबारक' तीसरे को पहचान।

दो०-इस वंश की क्या कहें, यह है वंश बदनाम।
इक दूजे को मारना, ही था इस में काम।। 6807क
इस वंश का नाम ही, इतिहास में प्रसिद्ध।
'हिंसक वंश' इस को कहें, जन ऐतिहासिक बिद्र।। 6807ख
ऐसे ऐसे दुष्ट जन, करें यहां पर राज।
ऋषियों का जो देश है, किस दशा में आज।। 6807ग

'जलालदीन' ने वंश चलाया, गलत रीति से नृप बन पाया।
कीतवाद को इस ने मारा, उस का राज स्वयं संभारा।
जलाल दीन तो था हत्यारा, अलाउलदीन ने उस को मारा।

---

[1] *खिलजी वंश का राज्य-1290 A.D. - 1325 A.D.*

[2] *खिलजी वंश के तीन सम्राट :-*

1. *जलालदीन-1290 A.D.-1295 A.D.*
2. *अलाउलदीन 1295 A.D. - 1315 A.D.*
3. *मुबारक -1315 A.D. - 1325 A.D.*

उसके बाद अलाउलदीन, हुआ तख्त पर था आसीन।
ऐसा जालम वह कसाई, जलाल की पत्नी मार मुकाई।
उसके बाद उस हत्यारे, दो बेटे भी उस के मारे।
बद चलन भी वह था भारी, चित्तौड़ फतह की कीन तय्यारी।
रानी पद्मनी पर थी आंख, लागी न वह उस के हाथ।
वह वीरांगना हाथ न लागी, जल गई वह जला खुद आगी।

दो०-बदचलन का पूत भी, मुबारक पिता समान।
अपने ही सरदार के, हाथ भया कुरबान।। 6808क
काले काल में जान लो, काली ही करतूत।
खिलजी वंश ने दिया, जगती को सबूत।। 6808ख
इस वंश के फिर बाद में, आये तुगलक लोग।
उन के भी आचरण को, लें देख सब लोग।। 6808ग

ग) तुगलक वंश (1320 A.D. से 1414 A.D.)

कैसी कौम देश में आई, कतलगारत की रीत चलाई।
[1]दिल्ली नृप का कर के घात, 'गयास' बना था नृप साक्षात।
तुगलक वंश ने दिल्ली लीन, नृप भये इस वंश में तीन।
'गयास उलदीन' एक लो जान, दूसर मुहम्मद तुगलक मान।
'फिरोज़ तुगलक' उस के बाद, तीनों कीना देश बरबाद।
दक्षिण दिक 'गयास' चढ़ पाया, हिन्दुओं पर उस जुलम था ढाया।

[1]तुगलक वंश के सम्राट :-
1. गयास उलदीन तुगलक-1320 A.D.-1325 A.D. 2. मुहम्मद तुगलक 1325 A.D. - 1351 A.D.
3. फिरोज तुगलक -1351 A.D. - 1388 A.D. 4. फिरोज के बेटे पोते 1388 A.D. - 1414 A.D.

मिला उस को उस का परिणाम, दब कर मर गया इक शाम।

दो०-अत्याचार जो जन करत, लहे न सुख का श्वास।
अवश्य एक दिन आयेगा, निकलें तड़प श्वास।। 6809क
[1]मुहम्मद तुगलक की कहें, वह था 'फुलिश' नरेश।
ऐसे ऐसे कर्म किये, दुखी भया था देश।। 6809ख
कराची में जब वह 'मरा', लिया सबन सुख श्वास।
ऐसे ऐसे नृप भये, काले काल में खास।। 6809ग

फिरोज़ भया तब तख्त नशीन, तैंतीस वर्ष राज उस कीन।
[2]उस ने राज के किए बहु काम, उस की पर सन्तान बदनाम।
अरबी फ़ारसी में होता काम, देव वाणी का कहीं न नाम।
परतन्त्रता की खास निशानी, लुप्त भयी थी वेद की वाणी।
फिरोज़ के बाद का इतिहास, भयंकर काल था वह इक खास।
[3]तैमूर लिंग देश में आया, भारी लश्कर साथ वह लाया।

---

[1]फुलिश (Foolish)-मूर्ख। इसकी मूर्खता के कई उदाहरण इतिहास की पुस्तकों में हैं। उनमें से एक यह है कि दिल्ली खाली कर दो और सब लोग 'दौलतआबाद' चले जाओ। वह राजधानी होगी। सख्ती से दिल्ली का नगर खाली कराया। मार्ग में कोई प्रबंध नहीं था। कई लोग मर गए। दौलतआबाद में कोई प्रबंध नहीं था। फिर हुकम हुआ वापस दिल्ली चले जाओ। इस प्रकार के मूर्खता के और भी उदाहरण हैं।

[2]उसके कामों में एक यह है कि उस ने यमुना और सतलुज से नहरें निकलवाई। यमुना की नहर अभी तक काम दे रही है।

[3]अमीर तैंमूर खाना बदोश तातारियों के वंश से था। वे मध्य ऐशिया में रहने लगे और 'तरक' कहलाये। वह अपने आप को चंगेज़ खान की नसल से बताता था। वह एक टांग से लंगड़ा होने के कारण तैमूरलिंग कहलाया। उस ने 1398 A.D. में एक भारी लश्कर ले कर भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली आदि कई बड़े बड़े शहरों को लूटा। वह बहादुर परन्तु निद्रयी और कठोर हृदय था उसने अपनी पुस्तक 'तोज़क तैमूरी' में दिल्ली के खून खराबे को एक साधारण घटना लिखी है।

दिल्ली पर उस कीन चढ़ाई, लूटमार की झड़ी लगाई।
लाख मनुष्य का कीना घात, पंदरह दिन रहा था तात।
दिल भर कर उस दिल्ली लूटी, कोई वस्तु न उस से छूटी।
फैली फिर वहां महामारी, हो गई दिल्ली खाली सारी।
पशु पक्षी भी रह न पाये, ऐसा काल विधाता लाये।

दो०-विधाता का न दोष यह, दोष देश का जान।
भूलें करत न चूकता, भावी से अनजान।। 6810क
दिल्ली के अतिरिक्त भी, लूट मचाई और।
मेरठ हरिद्वार भी, और अनेकों ठौर।। 6810ख
जो ज़ुलम इस्लाम ने, आ कीने इस देश।
जन देश के भूल गये, स्मरण नहीं है लेश।। 6810ग
अपने ही इतिहास से, अनभिज्ञ जो देश।
मुसीबत पर मुसीबत, पड़ती उस के पेश।। 6810घ
भारत पर जो आ रहे, दुखों के सब साज़।
उसका कारण स्पष्ट है, करें भूल बिन लाज।। 6810ङ

घ) सादात वंश (1414 A.D. से 1450 A.D.)

महमूद तुगलक जब मर पाया, सादात कुल प्रकाश में आया।
'ख़िजर खाँ' मुलतान अधिकारी, उस ने दिल्ली आय संभारी।
जो राजे इस वंश में होय, राज करने के योग्य न कोय।
अंत में था 'बहलोल' बुलाया, और उस को था राज थमाया।

ङ) लोधी वंश (1451 A.D. से 1526 A.D.)

[1]लोधियों का 'बहलोल' नरेश, इस वंश के थे तीन नरेश।
प्रथम बहलोल ने कीना राज, दूजा सिकंदर था अधिराज।
तीजा इब्राहीम था आया, ठीक राज न वह कर पाया।
जब 'बहलोल' राज कर पाया, युद्धों में ही समय गंवाया।
खून से रंगी भारत भू, चढ़ी थी चित्तमत सब बू।
[2]देश में शांति न रह पायी, निरंतर ही उस रची लड़ाई।

दो०-लड़ने में ही लग रहा, कीना न विश्राम।
शासन का क्या ध्यान हो, जब लड़ना ही हो काम।। 6811

बहलोल बाद 'सिकन्दर' आया, उसने भी वही खेल रचाया।
[3]राजपूतों से कीन लड़ाई, इस्लाम की उस दीन दुहाई।
एक बात उस यह कर पाई, दिल्ली से थी लीन विदाई।
राजधानी आगरा थी बन पाई, इस की युक्ति नहीं बतलाई।
उस का पुत्र 'इब्राहीम लोधी', अकारण ही था होत क्रोधी।
[4]'बाबर' ने आक्रमण कर पाया, पानीपत में युद्ध हो पाया।
कतल भया वह बाबर हाथ, लोधी वंश मिटा इस साथ।
अफ़गान राज भया समाप्त, समाप्त भयी जो आयी थी आफ़्त।

---

[1]लोधी वंश के तीन नरेश:-

1. बहलोल लोधी-1451 A.D.-1488 A.D. *2. सिकन्दर लोधी 1488 A.D. - 1518 A.D.*

3. इब्राहिम लोधी -1518 A.D. - 1526 A.D.

[2]26 वर्ष तक इस का जोनपुर से युद्ध चला।

[3]जोनपुर, धोलपुर, चन्देरी और ग्वालियर के साथ उस का युद्ध चलता रहा।

[4]पानीपत की लड़ाई 1526 A.D.

दो०-भये अफ़गान समाप्त, आये मुगल इस देश।
तैमूर के वे वंशज, पड़े भारत की पेश।। 6812क
'तैमूर' से भी कई गुणा, थे वे ज़ालम लोग।
भारत में क्या आ गये, यहां व्यापा सोग।। 6812ख
वे मंगोलिन लोग थे, बहादुर और क्रूर।
उन के बहु इस देश पर, हैं हमले मशहूर।। 6812ग

च) मुगल वंश (1526 A.D. से 1857 A.D.)

बाबर ने था वंश चलाया, मुगल राज प्रसिद्ध हो पाया।
[1]तीन सौ वर्ष उन कीना राज, पंदरह नृप भये अधिराज।
सम्राट पंचदश भये इस देश, था सभी का एक उद्देश।
समस्त भारत पर हो अधिकार, और इस्लाम का हो प्रचार।
उन को न था पर यह ज्ञान, प्रभु का भारत पर अधिमान।
कुदृष्टि से जो देखो देश, दुर्भाग्य पड़ेगा उस के पेश।
यह रीति सदा चलि आई, यह तो शाश्वत आशिश भाई।
इस का उल्लंघन न हो पावै, प्रभु की कृपा राष्ट्र बचावे।

---

[1]मुगल राज के पंदरह बादशाह:-

1. बाबर-1526 A.D.-1530 A.D.
2. हुमायूं 1530 A.D. - 1556 A.D.
3. अकबर 1556 A.D. - 1605 A.D.
4. जहांगीर 1605 A.D. - 1627 A.D.
5. शाहजहां 1627 A.D. - 1658 A.D.
6. औरंगज़ेब 1658 A.D. - 1707 A.D.
7. बहादुरशाह 1707 A.D. - 1711 A.D.
8. जहांदाराशाह 1711 A.D. - 1713 A.D.
9. फरकसीर 1713 A.D. - 1719 A.D.
10. मुहम्मदशाह 1719 A.D. - 1748 A.D.
11. अहमदशाह 1748 A.D. - 1754 A.D.
12. आलमगीर सानी 1754 A.D. - 1759 A.D.
13. शाहआलम सानी 1759 A.D. - 1806 A.D.
14. अकबर सानी 1806 A.D. - 1837 A.D.
15. बहादुर शाह 1837 A.D. - 1857A.D.

दो०-मुगलों ने निज काल जो, कीने अत्याचार।
वर्णन में न आ सकें, वे तो बेशुमार।। 6813क
उनके प्रतिकार हित, उठे मराठे वीर।
पंजाब में भी डट गये, बहादुर शूरवीर।। 6813ख
राजपूतों ने वीरता, जो दिखाई उस काल।
जगत के इतिहास में, उस की नहीं मिसाल।। 6813ग
[1]दुखी जनता उस काल थी, देख यह अत्याचार।
उसे सान्त्वना देन हित, होता धर्म प्रचार।। 6813घ
कबीर आदि महात्मा, करते धर्म प्रचार।
जनता को थी सान्त्वना, मिलती इस प्रकार।। 6813ङ
राम कृष्ण की भक्ति का, भी होता प्रचार।
जनता को मिल पाया, भक्ति परम आधार।। 6813च
तीन सदी पिसते रहे, हिन्दू अपने देश।
अनेकों मुस्लिम बन गये, चली न जिन की पेश।। 6813छ
यह छुटकारा तब मिला, आंगल आये देश।
मुहम्मद शाह को कैद कर, डाला ब्रह्मा देश।। 6813ज
अत्याचार जो करत है, उस का यही परिणाम।
अत्याचारी जान ले, न्याय करत हैं राम।। 6813झ

---

[1]उस काल जिन महापुरुषों ने पीड़ित जनता को सांत्वना देने हित धर्म प्रचार किया उनमें से कुछ ये थे:-
1. रामानन्द 2. वलभाचार्य 3. चैतन्य 4. कबीर
5. गुरुनानक 6. बाबा फ़रीद 7. तुलसीदास आदि।

भारत के संरक्षक, राम लाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6813ञ
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6813ट
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बनें कभी कृष्ण वे, राम लाल लो चेत।। 6813ठ

मुगलों का जो प्रथम नरेश, बाबर आया जब इस देश।
युद्धों में उस काल बिताया, देश की शांति भंग कर पाया।
[1]चार युद्धों में जो उस कीना, खून से पृथ्वी को रंग दीना।
भारत का वह बना सुलतान, देश को कीना उस परशान।
[2]सांगा ने था स्वयं बुलाया, भूल पै भूल देश कर पाया।
भूलों का है पुंज यह देश, सुखी भये फिर किस विध लेश।
बाबर की वफ़ात पश्चात, हमायूं सुलतान बना साक्षात।
हिमायूँ दुर्बल एक नरेश, देश संभाल सका न लेश।

दो०-वह रख सका न शांति, इस देश में लेश।
देश गंवाया हाथ से, सूरी बने नरेश।। 6814क

---

[1]बाबर के चार युद्ध:-

1. पानीपत की लड़ाई-1526
2. कनवाह का युद्ध 1527
3. चन्देरी का युद्ध - 1528
4. घागरा का युद्ध - 1529

[2]पानीपत के युद्ध में राणा सांगा ने बाबर को बुला भेजा था। इन युद्धों के द्वारा बाबर ने लगभग समस्त उत्तरी भारत पर अधिकार कर लिया था और अपनी विजयों की खुशी में उसने अयोध्या में भगवान राम का मन्दिर तुड़वा कर अपनी विजयों की स्मृति में वहां मस्जिद का निर्माण करवाया जो 'बाबरी मस्जिद' के नाम से विख्यात है।

[1]पंदरह वर्ष राज किया, यहां सूरी परिवार।
शेर सूरी था कर गया, कुछ अच्छे भी कार।। 6814ख
पेशावर से कलकत्ता, मार्ग बनाया एक।
'जी. टी. रोड़' के नाम से, जन जाने प्रत्येक।। 6814ग
हिमायूँ को फिर मिल गया, शासन का अधिकार।
एक वर्ष के बाद ही, गया परलोक सिधार।। 6814घ
हिमायूँ के पश्चात फिर, अकबर बना नरेश।
[2]युद्धों में इस काल भी, रहा फंसा यह देश।। 6814ङ
[3]हिन्दुओं के संग मित्रता, था चाहता वह खास।
राजपूतों के साथ तब, संबंध भया था खास।। 6814च

---

[1]शेरशाह सूरी ने हमायूं से राज छीना, और सूरी परिवार 1540 से 1555 A.D. तक भारत पर राज करता रहा। 1555 A.D. में हुमायूँ ने पुनः अपना अधिकार जमा लिया।

[2]अकबर के राज्य में युद्ध

1. *पानीपत की दूसरी लड़ाई -1554*
2. *अजमेर और ग्वालियार आक्रमण-1559*
3. *बंगाल पर चढ़ाई - 1560*
4. *मालवा पर आक्रमण-1561*
5. *रन्थमभोर और कालिंजर युद्ध-1568*
6. *गुजरात युद्ध-1572*
7. *बंगाल और बिहार युद्ध-1574*
8. *हल्दी घाटी का युद्ध-1574*
9. *काश्मीर विजय-1584*
10. *सिन्ध युद्ध-1591*
11. *उड़ीसा युद्ध-1592*
12. *अहमद नगर-1599*

[3]अकबर ने हिन्दुओं के साथ जो संबंध किये उन का वर्णन:-

1. *जयपुर नरेश बिहारी लाल सपुत्र भगवान दास को ऊंचे अधिकारी पद पर नियुक्त किया।*
2. *राजा बिहारी लाल ने अपनी लड़की की शादी अकबर से की।*
3. *भगवान दास के पुत्र मान सिंह को फौज का सिपाह सालार बनाया।*
4. *अकबर ने अपने पुत्र सलीम की शादियां राजा भगवान दास की लड़की ओर जोधपुर के राजा उदय सिंह की लड़की से की।*
5. *महाराणा प्रताप सिंह के भाई संगत सिंह को फौज का अफसर बना कर कंधार में जागीर दी।*
6. *राजा बूंदी को उच्च खताब (पदवी) दिया।*

हिन्दुओं के संसर्ग से, अकबर मन यह भान।
क्यों न हिन्दू मैं बनूं, हिन्दू धर्म महान।। 6814छ
पण्डित से की बात जब, कीन उस इनकार।
मुसलमान किमि हो सकत, हिन्दुत्व में स्वीकार।। 6814ज
हिमालय सम यह भूल थी, हिन्दुओं की उस काल।
अकबर न स्वीकारा, हिन्दुत्व में तत्काल।। 6814झ
अकबर ने निराश हो, कीना तब एहलान।
मैं नये एक धर्म को, चलाऊं इस जहान।। 6814ञ
[1]'दीन अलाही' नाम हो, उस धर्म का जान।
हिन्दू मुसलमान सब, करेंगे उस का मान।। 6814ट
अकबर के एहलान से, मुसलिम भये सतर्क।
इस कार्य से वर्जने, राखा लेश न फर्क।। 6814ठ
अकबर का विचार तब, बदल गया उस काल।
शासन के ही काम में, बीता उस का काल।। 6814ड

पचास वर्ष तक राज चलाया, गुलाम देश को उस बनाया।
युद्धों में ही समय बिताया, लाखों का उस खून बहाया।
कीने अनाथ अनेकों बाल, विधवा नारियां भईं बेहाल।

---

[1]'दीन अलाही' धर्म के असूल:-
1. ईश्वर की भक्ति आवश्यक है।
2. सूरज, चान्द और सितारे ईश्वर का ही रूप होने के कारण पूजा के योग्य हैं।
3. इस्लाम धर्म को छोड़ दिया जाए।
4. हज़रत मुहमद की बजाये 'बादशाह' को ही अल्लह का 'रसूल' माना जाए।

जनता भई तब दरिद्र भारी, अशांति में थी पृथ्वी सारी।
राजपूत भी भये गुलाम, झुक झुक करते सभी सलाम।
हिन्दुओं से हिन्दू मरवाता, ऐसी नीति वह चलाता।
[1]निज को कह सर्वोपरि पाता, ईश्वर समान हूं सबन बताता।
देश पै छाया घोर अंधेरा, आशा न कभी होय सवेरा।
निराशा में भी आशा जागी, एक हृदय में ल़ाग़ी आगी।

दो०-चिंगारी एक चित्तौड़ से, फूट पड़ी उस काल।
राणा था प्रताप वह, काल का महाकाल।। 6815क
देखा जब उस देश को, यवनों के अधीन।
देश प्रेम और धर्म का, जागा प्रेम नवीन।। 6815ख
क्षत्रियों ने था खो दिया, अपना स्वाभिमान।
हो गये सारे दास थे, देख अकबर की शान।। 6815ग
प्रताप सिंह तो सिंह था, शृगाल किमि हो पाये।
भूखा भी वह रह सकत, शेर घास न खाये।। 6815घ
राजपूत गुलाम बने, प्रताप क्षात्री शूर।
तोड़ने की उस ठान ली, अकबर का गरूर।। 6815ङ
हिन्दू हिन्दुस्थान के, होंय न जब तक एक।
देश सुखी न होयगा, यत्न करें अनेक।। 6815च
देश का दुर्भाग्य ही जानो, अथवा अपनी भूल ही मानो।

---

[1]ईश्वरो वा दिल्लीश्वरो वा' यह वाक्य प्रायः लोगों के मुख पर होता। अर्थात ईश्वर और दिल्लीश्वर को (दिल्ली सम्राट अकबर को) एक समान ही समझो।

भाई भाई से करें लड़ाई, शत्रु के वे बनें सहायी।
हिन्दुस्थान का यह दुर्भाग, हिन्दू हिन्दुओं से हों अलग।
जब तक यह क्रम रुक न पाये, हिन्दुस्थान में सुख न आये।
[1]हल्दी घाटी की सुनो कहानी, मुगलों से प्रताप ने ठानी।
मान सिंह दिल्ली से आया, राणा से वह युद्ध कर पाया।
कैसे दुर्भाग्य की थी यह बात, प्रताप को कीना मान परास्त।
राणा बहुत कष्ट सह पाया, अकबर समक्ष न सर झुकाया।
इतिहास में उस का है बहु मान, देश के वासी करें सन्मान।
पचास साल अकबर का राज, कीना न कुछ देश का काज।
बनाया सकल देश गुलाम, सुधार का कीना न कुछ काम।
अपना पुत्र भी वश था नाहीं, बगावत कीन पिता के ताहीं।
[2]जहांगीर था उसका नाम, परम शराबी और बदनाम।
[3]अकबर बाद वह तख्त आसीन, इसने भी कई युद्ध थे कीन।

दो०-युद्ध युद्ध ही करत रहे, मुगलों का जब राज।
खून की नदियां बहाहीं, यह था उन का काज।। 6816

जहांगीर का पुत्र खुसरो जान, पिता सदृश ही वह भी मान।

---

[1]हल्दी घाटी की लड़ाई में राणा प्रताप के सतरह हज़ार सैनिक शहीद हुए। महाराणा ने जंगलों में शरण ली और पत्थरों पर सोया। अपने बच्चों को भूख से बिलखते हुए अपनी आंखों से देखा परन्तु अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। अपनी कौम की इज्ज़त को बचा लिया। इतिहास में वह राजपूताना का 'हीरो' कहलाता है।

[2]जहांगीर विद्वान होने के साथ साथ शराब बहुत पीता था। इतिहास में इस को 'शराबी विद्वान' कहा गया है।

[3]जहांगीर के युद्ध :-

1. राना अमर सिंह मेवाड़ से लड़ाई।
2. कांगड़ा का युद्ध
3. अहमद नगर की लड़ाई।
4. कंधार में इरानियों से लड़ाई।

उसने पिता से कीन विरोध, लिया पिता ने तब प्रतिशोध।
उस के संगी सब मरवाये, खुसरो को भी कतल कर पाये।
ज़ुलम की हद हुई तब खास, शहीद कीन गुरु अर्जुन दास।
'काले काल' की यही निशानी, मार काट और धर्म की हानी।
काला कर्म और बतलायें, नूरजहां की बात सुनायें।
'नूरजहां' को सब जन जानें, पापी पाप से न शरमानें।
'शेर अफ़गान' की थी वह नार, जहांगीर दीना उस को मार।
नूर जहां को पास बुलाया, उस से तब 'नकाह' कर पाया।

दो०-ऋषियों के इस देश में, कहां से आये लोग।
एक दूसरे को मार कर, करें राज वा भोग।। 6817

बाईस वर्ष राज उस कीना, शाहजहां तब राज को लीना।
शाहजहां तीन थे भाई, खुसरो, शेरयार दो कहाई।
बाप ने खुसरो को मरवाया, 'शेरयार' को इस मरवाया।
'शाहजहां' तब भया नरेश, उस ने भोगा बहुत क्लेश।
'औरंगज़ेब' था उस का पूत, पूत क्या वह परम कपूत।
उस ने बाप को कैद में डाल, स्वयं भया सम्राट तत्काल।
'काले काल' की यही निशानी, मार काट और धर्म की हानी।
मार काट जहां नित हो पाये, 'काला काल' वही कहाये।

दो०-[1]भाईयों को मरवा कर, पिता को कर कैद।
भया तख्त नशीन वह, कीना देश बरबाद।। 6818क

---

[1]औरंगज़ेब, ये छः भाई बहन थे। उसने सब भाईयों को मरवाया।

1. दारा शकोह
2. शुजाह
3. औरंगज़ेब
4. मुराद
5. जहां आरा बेगम
6. रोशन आरा बेगम

परम मतस्वी बादशाह, हिन्दुओं से तकरार।
उठ पड़े तब हिन्दू भी, करने को प्रतिकार।। 6818ख

पचास वर्ष उस कीना राज, देश का कीना कुछ न काज।
युद्धों में उस काल गंवाया, मार काट का दृश्य दिखाया।
लाखों जन मरे इस कारण, देश बरबाद भया अकारण।
हिंदुओं ऊपर अत्याचार, वह तो वर्णन से भी पार।
'जज़िया' हिन्दुओं पर लगाया, मन्दिरों मूर्तियों को तुड़वाया।
ब्राह्मणों का उस कीन अपमान, गोहत्या होती सभी स्थान।
इस्लामी नियम से चलता काम, न्याय का था लेश नहीं नाम।
जबरन मुसलमान बनाता, जो न बनता मारा जाता।
अनेकों ही मुस्लिम बन पाये, अनेकों ही जन उस मरवाये।

दो०-औरंगज़ेबी जुलम का, कुछ बतलाया हाल।
जो प्रजा को दुख दिया, उस की नहीं मिसाल।। 6819

मरहठों से उस कीन लड़ाई, उन से उस ने मुंह की खाई।
[1]तीन बार उस कीन चढ़ाई, हर बार उस मुंह की खाई।
हठ अपना पर छोड़ न पाया, और अनेकों को मरवाया।
शत्रुता मरहठों से ठानी, याद करायी उन इसको नानी।
शिवाजी संग पेश न चाली, अन्त में उस ने चुप्पी साली।

[1] औरंगज़ेब के मरहठों से तीन युद्ध :-
1. 1663 A.D. - शायिस्ता खां शिवाजी के विरुद्ध युद्ध करने गया।
2. 1665 A.D. - जयसिंह को शिवाजी के विरुद्ध भेजा।
3. राजा जय सिंह को शिवाजी के विरुद्ध भेजा।

दो०-ग्यारह शासक थे भये, औरंगज़ेब के बाद।
मराठों ने करा दीनि, सब को नानी याद।। 6820क
अन्तिम शासक जो भया, बहादुर शाह था नाम।
बुरी तरह ही कैद में, मिल पाया आराम।। 6820ख
मराठों के अधिकार में, आ पाया बहु देश।
हिन्दू राज्य स्थापित भया, न्याय कारी नरेश।। 6820ग
मराठों ने था देखा, सारा अत्याचार।
वीरों ने ली कस कमर, करने को प्रतिकार।। 6820घ
प्रतिशोध की आग ने, बल दिया भरपूर।
दिल्ली का उन शासन, कीना चकनाचूर।। 6820ङ
इस शासन के साथ ही, 'काला काल' समाप्त।
बिगड़ा देश का हाल था, लोग भये बेहाल।। 6820च
'काला काल' समाप्त भया, जिस में काले काम।
देश को बरबाद किया, इतिहास में बदनाम।। 6820छ
काले काम जो उन किये, कुछ का कीन बखान।
संकेत से ही लिख दिये, पूर्ण नहीं लो जान।। 6820ज

विदेशियों ने आ लाभ उठाया, भारत में आय पग जमाया।
अंग्रेज़ आये, फ्रैंच आये, पुर्तगाली भी आ पाये।
थे व्योपारी बन वे आये, राजनीति में घुस वे पाये।

परस्पर उन का चलत विरोध, एक दूजे पर करें क्रोध।
संग राजाओं के मिल पाते, और लड़ाई वे करवाते।
उन का आना शुभ था नाहीं, धूमिल भविष्य देश के माहीं।
'धूमिल काल' का श्री गणेश, जब विदेशिन कीन प्रवेश।
कोप 'शनि' का था टल पाया, 'राहू' ने आ देश दबाया।

इति

भारत माता के इतिहास का 'काला काल' समाप्त।

5. धूमिल काल

(1700 A.D. से 1947 A.D.)

धूमिल काल का स्वरूप :-

दो०-दशा 'शनि' की टल गई, देश को कर बरबाद।
[1]देश के अपने पाप ही, लाये राहु इस बाद।। 6821

राहु निज प्रभाव दिखलाया, आंगल राज देश पै लाया।
उत्तर दक्षिण सब ही ओर, पूर्व वा पश्चिम की छोर।
गुलाम भया था सारा देश, स्वतंत्रता का नाम न लेश।
अंग्रेज़ों के तीन उद्देश, अधीन रहे यह सारा देश।
भारत का धन लण्डन जाये, यहां पर कुछ भी बच न पाये।
ईसाई धर्म का हो प्रचार, गिरजों की यहां हो भरमार।
संकेत लण्डन से था आता, 'शासक' यहां पर काम चलाता।
अंग्रेज़ी राज जभी था आया, रंग भेद प्रबल हो पाया।

दो०-रंग भेद के कारणे, भारती भये गुलाम।
अंग्रेज़ भये थे मालिक, काले गुलाम तमाम।। 6822

---

[1] *भारत के अपने पाप, जिनके फलस्वरूप दुखी है:-*

1. *शत्रुओं से मिल कर अपने ही सज्जनों के विरुद्ध कार्य करना।*
2. *सतीप्रथा द्वारा लाखों स्त्रियों को जीवित जलाना।*
3. *धर्म के नाम पर पशुओं की बलि देना।*
4. *करोड़ों मनुष्यों से अछूत का व्यवहार करना।*
5. *देश के हित को अपने हित पर कुर्बान करना।*
6. *असत्य आचरण द्वारा देश की छवि बिगाड़ना।*
7. *दहेज की प्रथा से स्त्रियों को आतंकित करना या जलाना।*

अंग्रेज़ जैसा तैसा होय, आदर को वह सब थां गोय।
भारती को न पूछे कोई, पहुंच न उसकी सब थां होई।
अंग्रेज़ी कुत्ते का भी मान, भारती सज्जन का अपमान।
भारती को न पास बिठायें, गोरे उनसे दूर रह पायें।
गोरों का हो जो इस्थान, भारती उस से वर्जित मान।
रेल डिब्बा जहां गोरा होय, भारती को हो वर्जित सोय।
जिस होटल में गोरा जाता, भारती वहां पर न जा पाता।
गोरों का जहां हो आवास, वहां से उनका दूर निवास।

दो०-अछूत भये सब भारती, ऐसे धूमिल काल।
गुलामी सिर पर आ पड़ी, फंसे सब दृढ़ जाल।। 6823

भारत को जब लीन संभाल, लागे लूटन देश का माल।
दिल्ली का खाज़ाना लूटा, बेगमों का भी घर न छूटा।
दिवारों पर जो जड़े थे लाल, उखाड़ लिये वे सब तत्काल।
अनेकों राजे थे इस देश, सबका धन गया परदेश।
वेतन सब गोरों का जानों, वह भी लण्डन जाता मानो।
रिश्वत उशरत ले जो पाते, अपने देश में वे भिजवाते।
विदेश से बहु माल बन आता, भारत में वह सब खप जाता।
इस से बहुत थी उन्हें कमाई, देश में बनता न कुछ भाई।
इंगलस्तान ने दीनी छूट, सोने की चिड़िया लेवो लूट।

दो०-लूट खसूट सब ले गये, भया देश कंगाल।
सूखी रोटी रह गई, मिले न वह सब काल।। 6824क

धूमिल काल था देश का, धूमिल सारे काम।
छिप छिप कर वे ले गये, देश का धन तमाम।। 6824ख
'कोहनूर' भी ले गये, लाल जो जग में एक।
दरिद्र कीना देश को, रही न कौड़ी एक।। 6824ग
पादरी भी फिर आ गये, दरिद्र जनता पास।
रोटी सब को देंयगे, हम पर हो विश्वास।। 6824घ

ईसा की बहु बात बताते, बहु प्रकार से उन्हें लुभाते।
जब शरणी वह तुम को लेता, पाप तुम्हारे भी वह लेता।
शराब बीड़ी का नहीं परहेज, मांस मच्छली का न परहेज।
सिरफ इमान ईसा पर लाओ, और मजे में तुम रह पाओ।
भूले भटके पास थे आते, पादरियों के वश में फंस जाते।
स्थान स्थान गिरजे बन पाये, भूले भटके वहां सब आये।
ईसाई मत भारत विस्तारा, 'धूमिल काल' का खास नज़ारा।
अमीर जनता किमि वश में आये, इस के भी उन कीन उपाये।
उन क्रिश्चन स्कूल चलाये, संग कालेज भी खुलवाये।
आंगल भाषा का वहां प्रचार, सरकार प्रति भी सत्कार।

दो०-इसाइत का प्रचार भया, बहुत होश्यारी साथ।
दृढ़ दासता की कड़ियां, कसी गईं इक साथ।। 6825क
अंग्रेज़ ने इस विध किया, स्वार्थ अपना पूर्ण।
संग उन लूट लिया था, देश का धन संपूर्ण।। 6825ख

बन व्योपारी वे सभी, आये थे इस देश।
छा गये इस देश पर, करने राज हमेश।। 6825ग
उनके इस विस्तार का, लिखें क्रमिक इतिहास।
भारत के दुर्भाग्य के, वर्णन का प्रयास।। 6825घ
आये प्रथम मद्रास में, और साथ 'बंगाल'।
समुद्री बेड़ा दृढ़ था, लड़ने को हर हाल।। 6825ङ
शासन से ले आज्ञा, करने लगे व्योपार।
अपनी रक्षा हेत उन, किले कीन तय्यार।। 6825च
मद्रास 'सैंट जार्जिया', 'बंगाल विलियम फोर्ट'।
शक्ति संचय की उन्हें, थी लगी बहु होड़।। 6825छ
बन पाई इक कम्पनी, 'ईस्ट इण्डिया' नाम।
व्योपार के हि साथ था, लड़ने का भी काम।। 6825ज

क) क्लाइव (प्रथम शासक) (1750 A.D. से 1772 A.D.)

पहला शासक जो भया, इस कंपनी का जान।
क्लाइव उसका नाम था, होश्यार बड़ा लो मान।। 6825झ
बंगाल का नवाब था, 'सरोज दोला' जान।
उसके मन न लेश था, अंग्रेज़ प्रति सन्मान।। 6825ञ
राजनीति की चाल चली, क्लाइव ने उस काल।
सेनापति बंगाल को, बुला भेजा तत्काल।। 6825ट

सेनापति का नाम था, 'मीर जफर' लो जान।
उसको लालच दे दिया, हम नवाब तुझे लें मान।। 6825ठ
[1]'मीरजफ़र', 'क्लाइव' मिल, युद्ध किया उस काल।
'सरोज दोला' की हार भयी, क्लाइव की जय कार।। 6825ड
'मीरजफ़र' नवाब भया, क्लाइव की चांदी जान।
अंग्रेज़ का अधिकार भया, बंगाल में लो मान।। 6825ढ
'क्लाइव' की इस चाल ने, कीला दीना गाड़।
भारत में अंग्रेज़ को, सका न को उखाड़।। 6825ण
भारत का दुर्भाग्य था, आपस में थी फूट।
देश का नहीं सोचते, थी सर्वत्र लूट।। 6825त

ख) वारण हेस्टिंगज़ (1772 A.D. से 1784 A.D.)

जवानों ने था सोच विचारा, है अंग्रेज़ ने देश संभारा।
प्रतिशोध की अग्नि जागी, जनता मन भी लागी आगी।
दो बार उन कीन प्रतिशोध, सब के चित्त था परम क्रोध।
[2]कलकत्ता में अंग्रेज़ संहारे, पटना में भी कैदी मारे।
'क्लाइव' गया 'हेस्टिंग' आया, उसने भी आ पैर जमाया।
सब का था तो एक ही काम, बनाना भारत को गुलाम।
धन यहां से खींच ले जायें, और इसाइत यहां फैलायें।
राजे यहां समृद्ध थे भारे, अखरें उनकी आंख में सारे।
कैसे इन को वश कर पायें, इनका सारा धन ले जायें।

---

[1]इतिहास में इस युद्ध का नाम है 'प्लासी का युद्ध' 1757 A.D. में
[2]कलकत्ता के संहार को BLACK HOLE (कोठरी काली) कहा जाता है और पटना में जनता ने बहुत से अंग्रेज कैदियों को मार डाला था।

दो०-लेकर इस उद्देश्य को, थे आते ये लोग।
आया 'धूमिल काल' था, जिस विस्तारा सोग।। 6826

बंगाल था सारा इन अधीन, राजधानी कलकत्ता कीन।
पैर फैलाते थे वे जाते, फूट डाल शासन कर पाते।
जनता यहां की को भिड़वाते, और थे उनसे धन कमाते।
रुहेलों की थी जंग हो पायी, चालीस लाख तब भयी कमाई।
पचास लाख अवध से आया, सदैव इसी विध धन कमाया।
ऐसे ऐसे एक्ट बनाये, भारत देश अधिकार में आये।
'रेगुलेटिंग' एक्ट का नाम, अधिकार जमाना जिस का काम।
'पिटस इण्डिया बिल' भी ऐसा, जिस का उद्देश्य था भी वैसा।
अंग्रेज़ी कानून भारत में लागे, भारती चुंगल में तब पागे।
अजगर वत वे बढ़ते जाते, हड़प देश को करते जाते।
कूट नीति थी उनकी ऐसी, समझ आये न किसी को जैसी।
मरहठों में भी एकता नाहीं, परस्पर झगड़ते राज के ताहीं।
अंगरेज़ों ने था लाभ उठाया, और उन्हें भी गुलाम बनाया।
राजे कई गुलाम बनाये, मैसूर भी अधीन कर पाये।
अपने ही कानून बनाते, जिसे चाहें दण्ड दे पाते।
बना बहाने धन उघाते, देश को कंगाल कर पाते।

ग) कारन वालिस और अन्य वायसराय

(1786 A.D. से 1947 A.D.)

हेस्टिंग बाद आया इक और, कारनवालिस भी इस ठौर।

इस ने भी कानून बनाये, जिमिदारों से लगान उगराये।
इस से कम्पनी भई अमीर, गरीब प्रति न किसी को पीर।
टैक्सों में भी कीन बढ़ौती, जनता दरिद्र हो कर रोती।
[1]इसी प्रकार बहु शासक आये, लूट देश को जो थे पाये।

दो०-सब का काम तो एक था, धन भेजना निज देश।
इसाइत का प्रचार भी, शासन करें हमेश।। 6827क
देश बना था रथ तब, राजा घोड़े जान।
कसीं लगामें मुख उन, अंग्रेज़ की बहु शान।। 6827ख
रथ पै बैठा घूमता, देख सभी वह पाय।
ऊँची नीची भूमि हो, घोड़े देत दबाय।। 6827ग
संपूर्ण देश गुलाम था, गुलामी में संतुष्ट।
राजे महराजे सभी, भूखी जनता रुष्ट।। 6827घ
भूखे लोग पुकारते, सुने कौन पुकार।
उन का गला दबोचते, जिन की थी सरकार।। 6827ङ

---

[1]अन्य शासक ये थे :- 4. जान शोर (1793-1798), 5. वलजली (1798-1805), 6. जान वारलो (1805-1807), 7. मिन्टो (1807-1813), 8. हेस्टिंगज़ (1813-1823), 9. अमहरस्ट (1823-1828) 10. विलियम बैंटिग (1828-1835), 11. आकलैंड 1836, 12. अलनवरी (1836-1844), 13. हारडिंग (1844-1848), 14. डलहौजी (1848-1856), 15. कीनिंग (1856-1862), 16. अलगन (1862-1863) 17. लारंस (1863-1869), 18. मयू (1869-1872), 19. नारथ ब्रुक (1872-1876), 20. लिटन (1876-1880), 21. रिपन (1880-1884), 22. उफरन (1884-1888), 23. लैन्सडौन (1888-1894), 24. एलगन (1894-1899),25. कर्ज़न (1899-1905), 26. मिन्टो (1905-1910), 27. हार्डिंग (1910-1914) 28. चैमसफोर्ड (1914-1921), 29. रिपन (1921-1924), 30. इरवन (1924-1931), 31. वलिंगटन (1931-1936), 32. लिनलियगो (1936-1943), 33. वेवल (1943-1947).

स्वतंत्रता हेतु प्रथम संग्राम :-

उसी समय था निकला, एक बहादुर वीर।
'तांतिया टोपी' नाम था, जिस मन देश की पीर।। 6827च
दो साथी भी साथ थे, जानत सकल जहान।
'नाना' नाम का एक था, ललना दूज महान।। 6827छ
वह ललना दिवरूप थी, पुँज शक्ति का जान।
रानी थी वह झांसी की, 'लक्ष्मीबाई' महान।। 6827ज
इन तीनों का बचपन, बीता था इक साथ।
शस्त्र विद्या भी सीखी, तीनों ने इक साथ।। 6827झ
'नाना साहब' 'बैठूर' का, शासक था महान।
सैना का पति 'तांतिया', सुन्दर जोड़ी जान।। 6827ञ
अत्याचार अंग्रेज़ का, सह रहे थे लोग।
सहमे सहमे लोग सब, और राजा भी लोग।। 6827ट
देश जकड़ा था उस समय, गुलामी की जंजीर।
स्वतंत्र कैसे होय गा, समस्या थी गंभीर।। 6827ठ
नाना साहब व तांतिया, मिल कीना विचार।
देश की जनता को करें, अपने संग तय्यार।। 6827ड
विद्रोह को भड़काने, निकले दोनों वीर।
नगर नगर में जाय कर, करते थे तकदीर।। 6827ढ

भेस बदल कर करते, सारा अपना काम।
सरकार विरुद्ध विद्रोह, यह सुगम न था काम।। 6827ण
छावनियों में भी जाते, जहां सैनिक जवान।
अंग्रेज़ों के विरुद्ध, प्रकट करते निज भाव।। 6827त

अनेक स्थानों पर जा पाये, कानपुर झांसी लखनऊ आये।
जनता में पाते बहु उत्साह, विद्रोह प्रति सब में था चाह।
सारे देश में घूम वे पाये, संदेश विद्रोह का दे थे आये।
[1]इकतीस मई सतावन चीन, विद्रोह की तिथि यह निश्चित कीन।
विद्रोहिन शस्त्र स्टोर बनाये, और शस्त्र निर्माण कर पाये।
यह था गुप्त सारा सामान, तांतिया की चतुराई जान।
नाना साहब थे उसके साथ, सारा प्रबंध था उन के हाथ।
दिल्ली में स्टोर बन पाया, कानपुर झांसी में बनवाया।
लखनऊ मेरठ में भी स्टोर, युद्ध सामग्री राखी जोड़।

दो०-इकतीस मई से पूर्व, घटना घट गई एक।
[2]बैरमपुर में फौज ने, मारे गोरे अनेक।। 6828क
श्री गणेश विद्रोह का, हो गया इक साथ।
मार काट अंग्रेज़ की, भयी लगा जो हाथ।। 6828ख
मेरठ में जो कुछ भया, सच्च लेय जन जान।
चुन चुन कर अंग्रेज़, भुने गये लो मान।। 6828ग

---

[1] प्रमुख स्थानों पर संदेश दे आये - 31 मई 1857 को सभी नगरों में एक साथ विद्रोह कर दिया जाए।
[2] यह घटना 19 नवंबर 1856 को घटी।

विद्रोह का अब भया विस्तार, विकट रूप उस लीना धार।
दिल्ली अलीगढ़ नगर अनेक, विद्रोह से बचा कोई न एक।
कानपुर था तो मुख्य स्थान, जहां भया संघर्ष महान।
अंगरेज़ फौज का वहां जमाव, जान गया नाना उन का भाव।
'ह्वीलर' फौज का था कप्तान, तांतिया टोपी लीना जान।
वहां आक्रमण भया जब भारी, अंग्रेज़ों की भयी हार करारी।
कानपुर पर हो गया अधिकार, विद्रोहियों में उत्साह अपार।
देशभर में विद्रोह की आग, फैलने में कुछ देर न लाग।
लाल किले पर भी अधिकार, विद्रोहियों का था सब प्रकार।

दो०-सैनापति हैवलाक था, सुन कर अपनी हार।
भारी सैना लेय कर, आया करन प्रतिकार।। 6829क
उसके अत्याचार का, किमि वर्णन हो तमाम।
आते आते उस ने, जलाये कई ग्राम।। 6829ख
सैनिक तांतिया टोप के, हार गये उस काल।
गोरों ने अधिकार किया, कानपुर पर तत्काल।। 6829ग
दिल्ली पर अधिकार भी, अंग्रेज़ शीघ्र कर पाये।
सिखों ने पंजाब से, कीनी बहुत सहाय।। 6829घ
अपने लोग ही मिल गये, जब दुश्मन के साथ।
बिके क्यों न देश यह, शत्रु के तब हाथ।। 6829ङ
कानपुर की हार को, रानी सुन थी पायी।
अपनी झांसी में उस, गूंज विद्रोह लगाई।। 6829च

तयारी सैना की हो पायी, सैनापति भाई काशीबाई।
उस वीरांगना धूम मचाई, अंग्रेज़ों की उस कीन सफाई।
हज़ारों गोरों का कर घात, तब वीर गति को कीन प्राप्त।
अंगरेज़ी सैना जब घिर आई, रानी उतर तब रण में पाई।
हाथ में लीनी उस तलवार, घोड़े पर थी भयी सवार।
विद्युतवत वह लड़ती जाये, धार तलवार की दिख न पाये।
कट कट सर थे गिरते जाते, धराशयी गोरे हो पाते।
रुकी न रानी एक स्थान, उसे बढ़ती ही बढ़ती जान।
जनरल रोज़ भया हैरान, तोफान मचाया इस भगवान।

दो०-जनरल रोज़ हैरान था, देख युद्ध का रूप।
एक नारी ने आन कर, बदला युद्ध स्वरूप।। 6830क
वह जनरल न जानता, भारत का इतिहास।
दुर्गा, काली, थी यहां, कीन असुरों का नास।। 6830ख
सैना में तो खलबली, थी मची उस काल।
काबू करें इस नार को, आयी बन जो काल।। 6830ग
मार काट कर लौट गयी, रानी अपने स्थान।
देखते ही सब रह गये, सैना के वे जवान।। 6830घ

रानी लौट किले में आई, अंग्रेज़ी सैना देख थी पायी।
वह तो थी बहुत विशाल, जीतना उस से था मुहाल।
फिर भी रानी आस न त्यागी, युद्ध की तयारी करने लागी।
सैना अपनी कीन तयार, घोड़े पर निकली फिर इक बार।

अपनी सैना को जब देखा, शत्रु सैना से कम बहु पेखा।
चल पड़ी कालपी की वह ओर, 'रोज़' ने पीछा किया उस ओर।
मार्ग में मुठभेड़ हो पाई, शत्रु की उस कीन पिटाई।
सुरक्षित कालपी पहुंच वह पाई, युद्ध में लक्ष्मी की चतुराई।
सौ था मील का मार्ग भाई, रानी सुरक्षित तय कर पाई।
कालपी में जब भयी लड़ाई, विजय रोज़ की वहां हो पाई।
ग्वालियार को रानी चाली, वहां किले की डोर संभाली।
अंग्रेज़ों ने आ घेरा पाया, भयंकरतम युद्ध हो पाया।
अंग्रेज़ सैना गोले बरसाये, अनुमान क्षति का न हो पाये।
रानी ने अब निश्चय कीना, अंतिम युद्ध का ठान उस लीना।
[1]पीठ पर अपना बच्चा बांध, निकली लड़ने को निर्बाध।
चाली सोन नदी की ओर, मार काट करती चहुं ओर।
सोन नदी के तीर जब आई, एक सैनिक ने खड़ग चलाई।
रानी आहत हो गिर पाई, अमर हो गई लक्ष्मी बाई।

दो०-लक्ष्मीबाई अमर है, अमर है उसका नाम।
सदा रहेगा गूँजता, गगन मध्य यह गान।। 6831

"खूब लड़ी मरदानी वह तो, झांसी वाली रानी थी।"

हार तांतिया की हो पायी, उत्तर ओर उस कीन चढ़ाई।
राजस्थान में जा वह पाया, युद्ध वहां भी वह कर पाया।
कुछ नृपों ने दीन सहयोग, अंग्रेज़ के पक्ष में बहु लोग।
विजय अंग्रेज़ों की हो पायी, हार तांतियां ने यहां खाई।

[1]बच्चे का नाम 'दामोदर' था, जो रानी ने गोद लिया था।

तांतिया भया बहुत परशान, स्वतंत्र किमि हो हिन्दोस्थान।
सभी का हो जब न सहयोग, स्वतंत्रता का किमि हो योग।
हो निराश दक्षिण को आया, वहां भी वैसा ही दृश्य पाया।
सहयोग मिला न किसी भी ओर, भारती भी अंग्रेज़ की ओर।
सोचा अब कुछ करूं आराम, लग जाऊं फिर इस ही काम।
अज्ञातवास में वह जा पाया, किसी ने भेद न उसका पाया।
तांतिया से भयभीत सरकार, खोजन लागी सब प्रकार।
खोज खोज कर जब वह हारी, फोड़ लिया इक मित्र भारी।
लालच में आ उस सब बताया, बंदी तांतिया को बनवाया।
फांसी की सज़ा हो पायी, इतिश्री विद्रोह की हो पायी।
फांसी चढ़ते उस मन विचार, लिख रहा मन से है 'दुखयार'।

दो०-"भारत को स्वतंत्रता, तब थी नहीं पसंद।
गुलामों को गुलामी में, आता है आनंद"।। 6832क
समझ लिया अंग्रेज़ ने, बुझा दी है आग।
सुलग रही थी जान लो, राख तले वह आग।। 6832ख
भयभीत इंगलैंड भी, था भया उस काल।
भय के वशीभूत हो, [1]'ऐलान' कीन तत्काल।। 6832ग

---

[1]*विद्रोह 1857 और महारानी विक्टोरिया का ऐलान 1858 :-*

महारानी विक्टोरिया ने प्रथम जनवरी 1858 को ऐलान किया :-

1. *किसी देसी राजा या नवाब का राज्य अंग्रेज़ी प्रदेश में नहीं मिलाया जायेगा और सन्तानहीन राजा को गोद लेने का अधिकार होगा।*
2. *किसी हिन्दुस्थानी को चाहे वह किसी रंग, नसल, कौम या जाति का हो, सरकारी नौकरी से वञ्चित नहीं रखा जायेगा अगर वह इसके योग्य हो।*
3. *अंग्रेज़ी सरकार हिन्दुस्थान के धार्मिक कार्यों में बाधा नहीं डालेगी।*

अंग्रेज़ों प्रति विद्रोह, शांत भया था मीत।
उस का क्या प्रभाव भया, उस को लेवें चीत।। 6832घ

स्वतंत्रता हेतु द्वितीय संग्राम :-

मारे गये अंग्रेज़ थे, बहु संख्या में मीत।
इस कारण इंगलैंड में, बहु रोष लो चीत।। 6832ङ
भारत में सरकार भी, बनान लगी तब नीत।
पुनः विद्रोह जिमि न भये, रहे जनता भयभीत।। 6832च
राजे तो इस देश के, डर गये उस काल।
जनता में प्रतिशोध की, थी अग्नि की ज्वाल।। 6832छ

सरकार ने कानून बनाये, भारत सदा अधीन रह पाये।
कानून जिमि जिमि बन पाये, जन विरोध बढ़ता चलि जाये।
'रैज़िडैण्ट' इक इक कीन नियुक्त, प्रत्येक राज के साथ जो युक्त।
उस राज्य पर तीखा ध्यान, रैज़िडैण्ट रखता लो यह मान।
अंग्रेज़ विरुद्ध विद्रोह न हो, रखता पूरा ध्यान था सो।
हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई, रहते थे बन भाई भाई।
इनमें भेदभाव उपजाया, शत्रुता का उन बीज उगाया।
अपने राज्य का कीन विस्तार, नये नये इलाके लीने मार।
भारतीयों ऊपर अत्याचार, बढ़ता जाता प्रत्येक ही बार।
अत्याचार का हो अनुमान, [1]बादशाह भेजा जेल में जान।
उसे ब्रह्मा में कीना कैद, बेगम को नेपाल में कैद।

[1]बादशाह - बहादुर शाह मुगल

उन्हें कीन अलग इस रीत, उनके दो बेटे लो चीत।
मात पिता के सन्मुख भाई, उन्हें गोली से दीन उड़ाई।
ऐसा करके अत्याचार, भारत पै लादी निज सरकार।

दो०-भारत पै करने लगे, अत्याचारी राज।
बिगाड़ दिया उन देश की, संस्कृति का सब साज।। 6833क
क्या जानें विधर्मी वे, भारत के रक्षक नाथ।
भारत की तो डोर है, स्वयं प्रभु के हाथ।। 6833ख
भारत के संरक्षक, राम लाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6833ग
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6833घ
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बनें कभी कृष्ण वे, राम लाल लो चेत।। 6833ङ

स्वतंत्रता कहीं रह न पाये, इस नीति पर वे चल पाये।
[1]भूटान पर उन कीन अधिकार, काबुल पर भी इसी प्रकार।
ब्रह्मा के उन शाह को जीता, अधिकार उसके देश पै कीता।
मनीपुर में लोग उठ पाये, अंग्रेज़ों ने वे दीन दबाये।
[2]पश्चिमोत्तर में भयी लड़ाई, हार फरीदियों की हो पाई।
वहां पर भी अधिकार जमाया, अत्याचार का रंग दिखाया।

[1]भूटान पर सन् 1869, काबुल पर सन् 1880, ब्रह्मा पर सन् 1886, मनिपुर पर सन् 1894
[2]पश्चिमोत्तर सन् 1899

और भी उन कुछ कीन उपाय, दृढ़तर राज्य जिमि हो पाय।
[1]विक्टोरिया जो इंगलैंड की रानी, हिन्द की भी भयी महारानी।
[2]हकुमत साल पचास चलाई, जुबली उसने यहीं मनाई।

दो०-[3]एडवर्ड उस का पुत्र, भया जब सम्राट।
ताज पोशी उस की यहीं, भयी ठाट व बाट।। 6834क
नये नये कानून भी, लाये इसके साथ।
पिसे रहें जिमि भारती, अंग्रेज़ों के हाथ।। 6834ख

उन कानूनों के लिख दें नाम, जिन कीना भारत पूर्ण गुलाम।
जिन में देख अन्याय भारी, भारत की भयी दूर खुमारी।
चमकी फिर विद्रोह चिन्गारी, अंग्रेज़ सर्तक भये तब भारी।
[4]पहला विश्व युद्ध छिड़ पाया, इंगलिस्तान में खतरा आया।
क्यों मरवायें अपने सैनी, भारती बनें बंदूक निशानी।
गुलाम की जान मालिक अधीन, इस में न कोई बात नवीन।
भारतीयों की उन फौज बनाई, युद्ध में झौंक वह थी पायी।
[5]लाखों भारती काम थे आये, घर घर में तब शोक थे छाये।
युद्ध में जीत अंग्रेज़ थे पाये, उनके हौंसले और बढ़ पाये।

---

[1]भारत की भी महारानी बनी-1880 सन् में [2]जुबली सन् 1888
[3]ताज पोशी - 26 जनवरी 1903 इसी प्रकार जब एडवर्ड की मृत्यु हो गई तो दिसम्बर 1911 में उसकी जगह 'जार्ज पंचम' की ताज पोशी हुई और भारत में एक महान दरबार का आयोजन हुआ जिसमें हिन्दोस्तान के सभी राजे महाराजे आये और अपनी अधीनता का सबूत दिया।
[4]पहला विश्वयुद्ध-1914 से 1918 (वास्तव में यह दूसरा विश्वयुद्ध था, प्रथम विश्वयुद्ध महाभारत का युद्ध था)
एक ओर थे - इंगलैंड, फ्रांस, रूस, इटली, वैल्जियम और यूनान (Allies)
दूसरी ओर थे - जर्मनी और उसके कुछ साथी देश जैसे आस्ट्रिया, टर्की, बलगारिया
[5]भारत से 10 लाख की फौज मैदान में गई थी।

लोगों को और दबाने लागे, मत कोई विद्रोह में लागे।
ऐसे ऐसे कानून बनाये, भारत अधीन सदा रह पाये।
[1]'रोलट एक्ट' इक कानून बनाया, जिस कारण विद्रोह हो पाया।
भयानक रूप विद्रोह ने धारा, पंजाब में इसका असर था भारा।
देश में सत्याग्रह हो पाया, अंग्रेज़ों पर हमला हो पाया।
रेल की पटड़ियां दीनी उखाड़, विद्युत की तारें दीनि काट।
सरकारी बैंक था लीना लूट, विद्रोह का प्रवाह अटूट।
'मार्शल लॉ' सरकार लगाया, इससे नगर को बच न पाया।
अमृतसर में खास प्रकोप, 'मार्शल लॉ' जहां दीना थोप।
जलियांवाला बाग वहां एक, जहां एकत्र लोग अनेक।
गोलियां वहां अंग्रेज़ चलाई, भून दीनी सब जन समुदाई।
देश में हा हा कार हो पाया, अत्याचार जब देख था पाया।

दो०-ऐसा निर्मम शासन, कहीं न जग के बीच।
था सबन की ज़बान पर, यह कर्म अति है नीच।। 6835क
राजाओं महाराजाओं पर, करते अत्याचार।
[2]नाभा के महाराज को, दीना कारावार।। 6835ख
[3]महाराजा इंदौर को, दीनी थी सज़ाय।
राज्य उसका छीन कर, लीनि अधिकार जमाये।। 6835ग

---

[1]रोलट एक्ट में एक विशेष बात यह थी कि पोलीटिकल हत्याओं के फैसले के लिए अलग अदालत होगी। वकील और अपील की आज्ञा नहीं होगी।

[2]लार्ड रीडिंग के शासन काल में महाराजा नाभा को कैद करके दक्षिण में नज़रबंद कर दिया था -सन् 1924

[3]लार्ड रीडिंग के शासन काल में महाराजा 'टिकाराओ' को गद्दी से उतार कर राज्य अपने अधिकार में कर लिया - सन् 1925

साइमन कमीशन ने भी, आ कीन वही काम।
वह तो न स्वीकार्य थी, लोगों में बदनाम।। 6835घ
[1]जब उपद्रव कुछ भया, सख्ती और हो पायी।
डाली जनता जेल में, स्थिति बिगड़ थी पायी।। 6835ङ
आये धन के लोभ से, वा करने वे राज।
इसाइयत मत फैलाने, पूर्ण भया था काज।। 6835च
लोभ से लालच बढ़त है, संतोष न हो पाय।
भारत को क्यों छोड़ कर, चला फिरंगी जाय।। 6835छ
अभी तो धन था लूटना, नृप गण से बहुतेरा।
जिन पास बहुत माल था, कहे फिरंगी मेरा।। 6835ज
जनता भूखी मर रही, स्वर्ण चिड़िया के बीच।
अंग्रेज़ सब कुछ ले गये, देश अपने में खींच।। 6835झ
[2]जूठे पत्ते चाटते, देख सकें उस काल।
वर्णन में किमि आ सकत, गरीबों का सब हाल।। 6835ञ
तन ढ़कने को कुछ नहीं, सर ऊपर न छात।
सड़क में ही पड़ रहे, दरिद्र सारी रात।। 6835ट
सरदी से बचाव हित, रबर जलाते रात।
शुकर करते भगवान का, होती थी जब प्रात।। 6835ठ
गाड़ी में बिठलाय कर, खींचत था इन्सान।
इस घिनौने काम पर, सज्जन थे विस्मान।। 6835ड

[1]सन् 1930 [2]जो यहां लिखा है वह सब कुछ लेखक ने अपनी आंखों से देखा है।

कहां 'उज्ज्वल काल' वह, कहां 'धूमिल' यह काल।
जनता का जब हो गया, ऐसा बदतर हाल।। 6835ढ
इलाज इस का एक था, होय स्वतन्त्र देश।
परतन्त्रता में जान लो, न चले किसी की पेश।। 6835ण
जनता में अब जागृति, आ रही थी मीत।
स्वतन्त्रता के हेत थी, सब के मन में प्रीत।। 6835त
जन विद्रोही निकल पड़े, करने को विद्रोह।
उखाड़ फैंकें अंग्रेज़ को, उनके मन में कोह।। 6835थ
दो धारां विद्रोह की, चलीं साथ ही साथ।
'असहयोग' की एक थी, 'उग्रधारा' उस साथ।। 6835द
'असहयोगी' निहत्थे, दूजे पिस्टल हाथ।
लक्ष्य दोय का एक था, 'स्वराज' लागे हाथ।। 6835ध

उग्र धारा की बात बतायें, वीर जनों की गाथ सुनायें।
जान हथेली पै रख निकले, मत को धारा से जन फिसले।
यही था उनका प्रण महान, परवाह नहीं जब जाये जान।
वीर पुरुषों की सभा बन पायीं, 'जवान भारत सभा' कहायीं।
पंजाब बंगाल उत्तर प्रदेश, यहां सभी में जोश विशेष।
गुप्त सभायें थे कर पाते, विद्रोह के कार्य क्रम बनाते।
धन की थी समस्या भारी, धन बिना नहीं चलती गाड़ी।
धन मिले शस्त्र मिल पावें, धन बिना वे कहां से आवें।
एक मता तब यह बन पाया, खज़ाना लूटें मन में आया।

दो०-रेल में डाका डाल कर, लूट लिया सब माल।
जवान सभा के वीर जो, कीना उन कमाल।। 6836क
था खज़ाना लुट गया, खड़े भये थे कान।
याद तांतिया की भयी, भय से निकले प्राण।। 6836ख
भय से भीत अंग्रेज़ थे, सोचें पुरानी बात।
सन्मुख उनके था खड़ा, यमराज जिमि साक्षात।। 6836ग

हड़बड़ा थी गयी सरकार, पोलीस को हुकुम भया तत्काल।
सारे देश में फैल वे जांय, अपराधियों को पकड़ के लांय।

दो०-'चन्द्रशेखर' आज़ाद बिन, गये पकड़े सब वीर।
फांसी की सज़ा भयी, वीरों की तकदीर।। 6837

[1]सुनो उन वीरों के अभिधान, जिन पै देश को बहु है मान।
जिनके स्मरण मात्र से मीत, उपजे देश प्रति मन प्रीत।

दो०-'राम प्रसाद' एक था, बिस्मिल था उप नाम।
'मन्मथ राय' था दूसरा, विद्रोह जिसका काम।। 6838क
'मुरारीलाल' जान लो, इस सभा के बीच।
'राजेन्द्रनाथ लाहिडी', कुर्बानी में समीच।। 6838ख

---

[1]कुछ नौ जवान भारत सभायें :-

क) बंगाल में -नेता जी सुभाष चन्द्र और अन्य सदस्य

ख) पंजाब में - सरदार भगत सिंह और अन्य सदस्य

ग) उत्तर प्रदेश में - राम प्रसाद बिस्मिल के साथी कुछ नीचे सदस्य :

1. चन्द्रशेखर आज़ाद, 2. मन्मथ राय, 3. मुरारी लाल, 4. राजेन्द्र लाल लाहिडी, 5. शचीन्द्र नाथ बख्शी, 6. बनवारी लाल, 7. मुकन्दी लाल, 8. केशव चक्रवर्ती।

'शचीन्द्र नाथ था बख्शी, 'लाल बनवारी' साथ।
मुकन्दीलाल की कहें, आया सर धर हाथ।। 6838ग
केशव चक्रवर्ती था, जिस से सभा सनाथ।
ये सबन के नाम हैं, गये पकड़े इक साथ।। 6838घ
फांसी पर सब चढ़ गये, खुशी खुशी मम मीत।
जय भारत की बोलते, भय न उनके चीत।। 6838ङ
इन शहीदों की गाथ को, कवि जो लिख दिखाय।
निज प्रतिभा को सार्थक, सचमुच वह कर पाय।। 6838च

अब चलें पंजाब की ओर, भगत सिंह का दृढ़ जो ठोर।
''नौजवान सभा'' थी बन पायी, लैस पिस्तौलों से हो पायी।
भारत वर्ष स्वतंत्र कराना, यही था उन का इक निशाना।
प्रमुख प्रमुख थे ये नौजवान, देश की ओर ही जिन का ध्यान।
सरदार भगत सिंह लो जान, राजगुरु उस संग लो मान।
वटुकेश्वर दत्त भी उन के साथ, चंद्रशेखर से सभी सनाथ।
रहे सदा उनके चित्त ध्यान, देश पै हो जावें कुर्बान।
दुश्मन से लें लोहा ऐसा, झांसी रानी ने था जैसा।

दो०-उन के हृदय में तड़प, देश भक्ति की मीत।
कल्पना में न आ सकत, कल्पना वह अतीत।। 6839

अब परीक्षा की घड़ी आयी, जिस की प्रतीक्षा थी रह पायी।
इंग्लैंड से कमीशन आया, 'साइमन कमीशन' जो कहलाया।
विद्रोहियों को दबाने हेत, पठाया उस को इस अभिप्रेत।

भारती समझ गये यह चाल, उठे विद्रोह करने उस काल।
सारे देश में भयी हड़ताल, डरे अंग्रेज़ फिर आया काल।
तांतिया टोपी याद था आता, झांसी का पुनः भय सताता।
अब तो भये विशेष सतर्क, सख्ती में राखा लेश न फर्क।
हजारों को उन कैद कराया, काले पानी था भिजवाया।
जहां चली विशेष न पेश, मार गोली उसे कीन निशेष।
लाहौर में जब कमीशन आया, सरकारी स्वागत बहु हो पाया।
लोग हज़ारों जुट थे पाये, नारे विरोध में उन लगाये।
नौजवान सभा के सारे वीर, संचालित करते थे वह भीर।
लाला लाजपत भी उन साथ, विरोध का झंडा उसके हाथ।

दो०-झंडे को जभी देखा, सांडर्स ने उस काल।
लाठियों की बौछाड़ करि, लाजपत के तब भाल।। 6840क
वह अंग्रेज़ कप्तान था, पोलीस दल के साथ।
बहुत घमण्डी अफसर, पाप भया उस हाथ।। 6840ख
लाला जी थे गिर पड़े, बेसुध हो उस काल।
वीर युवक तब ले गये, उन को हस्पताल।। 6840ग
दिन कई हस्पताल में, रहने के पश्चात।
ताब न ला सके चोट की, छोड़ गये वे गात।। 6840घ
यह खबर सब देश में, फैल गई तत्काल।
भड़क उठी विद्रोह की, ज्वाला थी उस काल।। 6840ङ

देश व्यापी भयी हड़ताल, शोक सभायें हुईं उस काल।

देश के नेता वे महान, देश के लिए भये कुर्बान।
सांडर्स का अपराध महान, क्षमा योग्य नहीं उस को जान।
अपने किये को बड़ा वह जाने, वीरों का न कोप पहचाने।
वीरों के था मन में रोष, किमि संभालें अपना जोश।
अपने नेता प्रति प्रहार, इसका हो अवश्य प्रतिकार।
लाला जी का जब संस्कार, जनता का था समूह अपार।
लाला जी का जय जय कार, भगत सिंह मन क्रोध अपार।

दो०-उस समय तब भगत सिंह, बोला छाती तान।
मैं भी ले कर रहूँगा, हत्यारे के प्राण।। 6841क
भगत सिंह आज़ाद ने, राजगुरु के साथ।
तभी बनाई योजना, कर्म करें मिल साथ।। 6841ख

डी.ए.वी कॉलेज के ही पास, सांडर्स का था वहां निवास।
ले पिस्तौलें तीनों आये, डी.ए.वी. कालेज रुक वे पाये।
निश्चित स्थानों पर वे ठारे, सांडर्स के समीप द्वारे।
ध्यान द्वारे पर था सब का, हाथ पिस्तौल पर था उन का।
चित्त उन के प्रतिशोध का भाव, वीरों का जिमि होत स्वभाव।
इसी भाव में खड़े त्यार, दीखा सांडर्स बाहिर द्वार।
तब राज गुरु ने ताक लगाये, दीनी गोली एक चलाये।
निशाना ठीक था उस का मित्र, सांडर्स वहीं भया हो चित्त।
भगत सिंह इक और चलाई, वह भी उसी को ही लग पाई।
भाग गये तब दोनों वीर, कालेज की दीवार को चीर।

सिपाहियों ने जब पीछा कीन, फायर आज़ाद ने कर दीन।
एक सिपाही जब गिर पाया, कोई न आगे फिर बढ़ पाया।
तीनों भये चम्पत वे ऐसे, लुप्त हवा में हो गये जैसे।

दो०-यह खबर सब शहर में, फैल गई तत्काल।
चर्चा लोगों में चली, पकड़ धड़क उस काल।। 6842क
नव युवक तभी बहुत से, दीन जेल में डाल।
सख्ती बेहद तब भयी, जनता पर उस काल।। 6842ख
अपना वचन निभाय कर, तीनों भये फरार।
भेस बदल कर अपना, भये वे रेल सवार।। 6842ग
बना 'भगत सिंह' साहब था, 'आज़ाद' उस की मेम।
राजगुरु . नौकर बना, कौन सकत पहचान।। 6842घ

सरकार ने बहु ज़ोर लगाया, कातिल कहीं भी मिल न पाया।
हुई सरकार हताश तब भारी, सख्ती पर सख्ती कर डारी।
'पब्लिक सेफटी बिल' बनाया, असैम्बली में वह पास कराया।
असैम्बली में जब हो रहा पास, दो सज्जन वहां खड़े थे खास।
अंग्रेजी वेश भूषा में दोय, दर्शकों की गैलरी में सोय।
वे थे भारती वीर जवान, उन में एक 'भगत सिंह' जान।
दूजा उसका साथी वीर, वटुकेश्वर दत्त परम जो धीर।
बंब दोनों ने साथ थे लाये, असैम्बली में वे फैंक दिखाये।
फटा जब जोर से बंब वहां, घबरा गये सब लोग तहां।
गैलरी ओर सिपाही भागे, वीर वहां से न थे भागे।

अपने को उन कैद कराया, 'जय भारत' का घोष लगाया।

दो०-भगत सिंह की वीरता, और साहस महान।
चर्चा फैली देश में, सरकार थी परशान।। 6843क
परेशानी में आय कर, कीनें ज़ुलम अनेक।
जेल में डाले वीर सब, काले पानी अनेक।। 6843ख
[1]भगत सिंह सरदार को, थी फांसी उन दीन।
वीर गति उस वीर ने, खुशी खुशी थी लीन।। 6843ग

योगेश्वर राम का आगमन :-

अराजकता देश के माहीं, जेल भरे थे जनता ताहीं।
उस काल की क्या बतलायें, शब्द नहीं जो लिख हम पायें।
पर इतिहास को जो जन जानें, वे खूब यह बात पहचानें।
सदियों से भारत ने देखा, ताण्डव अधर्म अन्याय का पेखा।
योगेश्वर कृष्ण का यह है देश, उन से छिपी न दशा यह लेश।
धर्म हेतु वे लें अवतार, ले चुके थे वही अवतार।
योगेश्वर कृष्ण जो उस काल, योगेश्वर राम बने इस काल।
कृष्ण बाल्य गुरु चरण बिताया, संग सुदामा वहां रह पाया।
राम ने भी गुरु सेवा कीनी, आशीर्वाद निज गुरु से लीनी।
कृष्ण स्वयं न युद्ध कर पाया, अर्जुन हाथ गाण्डीव थमाया।
राम रहे संघर्ष से दूर, गर्व अंग्रेज़ का कीना चूर।
वन से लौट थापा योग, योगाश्रम में जन सीखें योग।

[1] *भगत सिंह को 23 मार्च 1931 को फांसी हुई*

निज को गुप्त रख वे पाये, पण्डित राम लाल कहलाये।
'प्रभु' भी कहते उन को लोग, आकर सीखें उन से योग।
एक दिवस इक सज्जन आया, अपना उसने परिचय कराया।

दो०-"योगीराज मैं कैद में, रह पाया कुछ काल।
अत्याचार अंग्रेज़ का, चलेगा कितना काल"।। 6844

प्रभु बोले "हे मेरे भाई, धर्म अधर्म की यह लड़ाई।
धर्म भूमि भारत को जानो, देवासुर संग्राम पहचानो।
आसुरी शक्ति बाहिर से आयी, भारत पर कब्जा कर पाई।
भगवान करेंगे अब संभाल, रहे न अत्याचार बहु काल"।
सज्जन बोला "हे योगिराज, आप से बात सुनी यह आज।
कौन भगवान जो करें संभाल, कौन भगवान जो बदलें काल।
अंग्रेज़ों को तुम असुर बताओ, भारतीयों को देव कह पाओ।
असुरों के पास सारा साज, उनका ही तो यहां पर राज।
देव निहत्थे हैं बेचारे, सहते सब दुख किसमत मारे।
कहते आप इस को संग्राम, निहत्थे करेंगे क्या संग्राम"।
कहा प्रभु "हे भाई मेरे, करूँ निवारण संशय तेरे।
धर्म हेतु कृष्ण उतर हैं आये, वही भगवान हम कथ थे पाये।
छिड़ गई है जोय लड़ाई, नायक कृष्ण हैं उस के भाई।
संशय इस में मत तुम आनो, पहचान सको न कृष्ण को जानो।
प्रकट इस रूप वे लड़ न पायें, देवों को वे स्वयं लड़ायें"।
कहा सज्जन "किमि मानूँ देव, बिन शस्त्र किमि लड़ेंगे देव।
यह पहेली समझ न आये, मेरी बुद्धि ही चकराये"।

कहा प्रभु "हे भाई मेरे, बहुत ठीक विचार हैं तेरे।
बिना शस्त्र नहीं होय युद्ध, ऐसा सभी मानें जन बुद्ध।
कृष्ण चन्द्र ने शस्त्र है दीना, देवों ने स्वीकार है कीना।
वह शस्त्र ऐसा है भाई, उस की सके न हो कटाई।
सभी शस्त्रों से ऊपर जान, उस शस्त्र के न कोई समान"।
सुन सज्जन मन भई जिज्ञास, पूछा उस "कौन शस्त्र वह खास"।
बोले प्रभु "सुन लो तुम भाई, 'ब्रह्मास्त्र' वह शस्त्र कहाई"।
सुन कर सज्जन बोला "नाथ, वह शस्त्र दीना किस के हाथ"।
कहा प्रभु "हे सज्जन प्यारे, सब प्रश्न हैं उचित तिहारे।
'ब्रह्मास्त्र' उस को मिल पाये, जन अधिकारी जो हो पाये।
'ब्रह्मास्त्र' जानों ब्रह्म समान, उस के नहीं कुछ और समान।
निश्चित रहो तुम मेरे मीत, देवों की ही होगी जीत।

दो०-जिधर कृष्ण भगवान हों, ब्रह्मास्त्र भी साथ।
निश्चित ही उस ओर को, विजय लगेगी हाथ।। 6845क
भारत के संरक्षक, कृष्ण चन्द्र भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6845ख
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6845ग
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बनें कभी कृष्ण वे, रक्षा हेतु चेत"।। 6845घ

बोला सज्जन "हे मम नाथ, ब्रह्मास्त्र जो देंय जन हाथ।

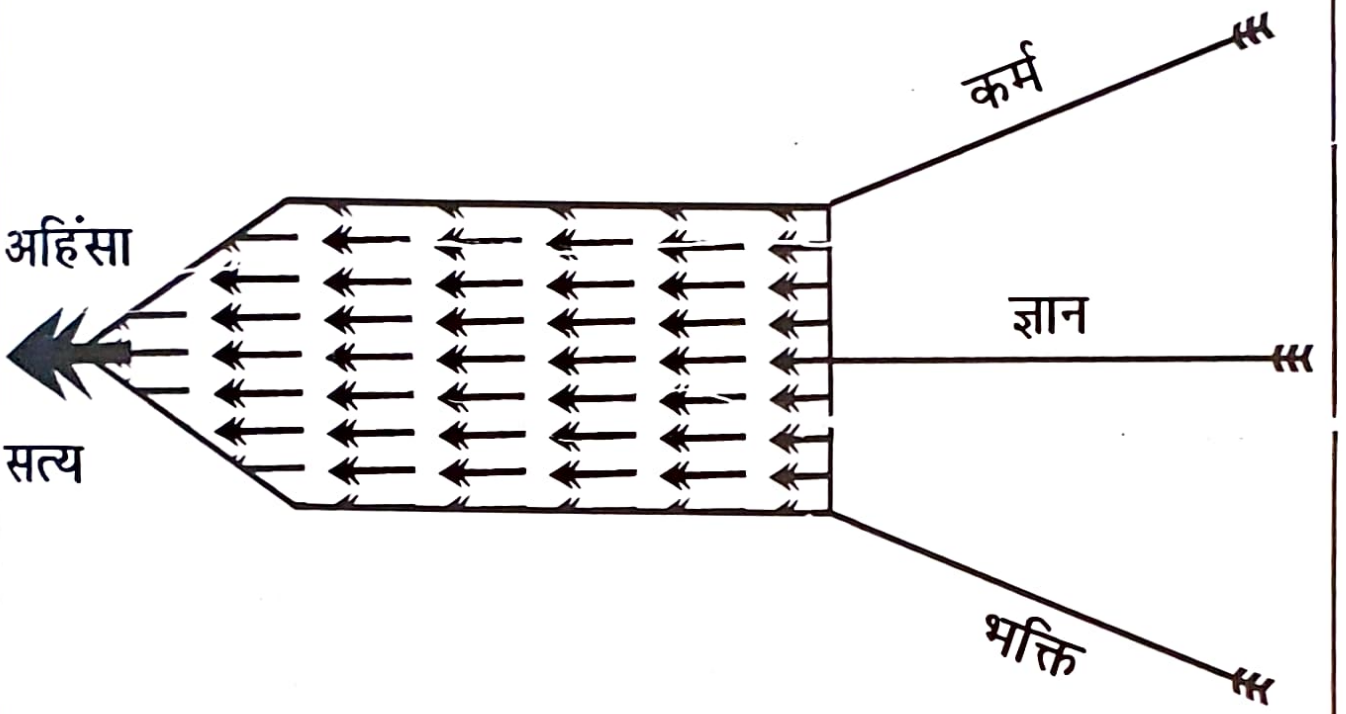

ब्रह्मास्त्र

अक्षुण्ण शक्ति का अस्त्र जान, ब्रह्मास्त्र त्रयधार पहचान।
मुख पै सत्य अहिंसा दोय, परास्त करे जो सन्मुख होय।
धारा एक ज्ञान की मानो, दूजी कर्म धार पहचानो।
भक्ति की है तीसरी धार, जिस का होय अचूक प्रहार।
सिद्ध पुरुष जब इसे चलाये, इसका न प्रतिकार हो पाये।

उसका स्वरूप क्या भगवान, चाहूँ मैं उस का कुछ ज्ञान।
यदि गुप्त नहीं हो यह नाथ, मुझे बतला कर करें सनाथ"।
कहा प्रभु "है रहस्यमय ज्ञान, फिर भी करूँ मैं इसे बखान।
अक्षुण शक्ति का अस्त्र भाई, ब्रह्मास्त्र त्रयधार कहाई।
इस की धारें तीन हैं मीत, तीक्ष्ण एक से एक लो चीत।
इन तीनों के नाम लो जान, पाछे उनके गुण पहचान।
इस शस्त्र का मुख जो भाई, उस की शक्ति कही न जाई।
मुख में सत्य अहिंसा दोय, परास्त करे जो सन्मुख होय।

दो०-तीन धारों के नाम भी, सुन लो अब तुम मीत।
धारा कर्म की एक है, दूजी भक्ति चीत।। 6846क
तीजी धारा ज्ञान की, ब्रह्म ज्ञान की मान।
सन्मुख इस के जो अड़े, ठहर सके न जान"।। 6846ख

सज्जन बोला "हे भगवान, कर्म का दीजो मुझ को ज्ञान।
भक्ति का भी रहस्य बतायें, ज्ञान का स्वरूप कथ पायें"।
कहा प्रभु "हे सज्जन प्यारे, शुभ अति हैं विचार तिहारे।
कर्म का जानन चाहो ज्ञान, ज्ञान का भी और चाहो ज्ञान।
भक्ति का जानन चाहो सार, ध्यान से सुनिये मम विचार।
कर्म तीन प्रकार के जान, उत्तम मध्यम अधम पहचान।
उत्तम कर्म वही लो जान, अहिंसा सत्य अनुसार जो मान।
उत्तम कर्म जो कर दिखावे, शत्रु ऊपर विजय वह पावे।
उत्तम कर्म के गुण जो और, समझो उन को भी इस ठौर।
कर्म को ही धर्म पहचान, जीवन का आधार लो मान।

[1]पर धर्म में रुचि नहीं आने, अपने कर्म को उत्तम जाने।
अपने कर्म में जान भी जाये, उसे भी स्वीकार कर पाये।
[2]दत्तचित्त हो निज कर्म में लाग, फल की इच्छा देवे त्याग।
निष्काम कर्म से सिद्धि होय, अद्भुत शक्ति वह जन संजोय।
कर्म से कभी जन मुख न मोड़े, कभी भी निज कर्म न छोड़े।
[3]सिद्धि असिद्धि में रहे समान, उसी को कहते वीर पुमान।
[4]यज्ञरूप हो जन का कर्म, ईश्वराप्रण कर्म मुख्य है धर्म।
[5]कर्म के बंधन से हों मुक्त, ईश्वर से चित्त होवे युक्त।

दो०-निष्काम रह कर जो करत, सारे अपने कर्म।
ज्ञानी उसको जानिये, यही कर्म का मर्म।। 6847क
कर्मधारा ब्रह्मास्त्र की, बलवती महा मान।
इसके कारण शस्त्र यह, है गुणवान महान''।। 6847ख

बोला सज्जन ''नाथ प्यारे, ज्ञान प्रदायक वचन तिहारे।
कर्म का मैं रहस्य है पाया, समझूँ भक्ति करिये दाया''।
कहा प्रभु ''हे सज्जन मीत, भक्ति धारा अति तीखी चीत।
भेद भक्ति के मैं समझाऊँ, उत्तम, मध्यम, अधम ही पाऊँ।
उत्तम भक्ति शस्त्र महान, इसी से अस्त्र का गुण मान।

---

[1]श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः, पर धर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनंश्रेयः, परधर्मो भयावहः।। गीता IV-35

[2]कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भू, र्मांते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। गीता II-47

[3]गीता II-48

[4]यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र, लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय, मुक्तसंङ्गः समाचर।। गीता III-9

[5]यस्य सर्वे समारम्भाः, काम संकल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं, तमाहुः पण्डितं बुधाः ।। गीता IV-19

उत्तम भक्ति ईश की जान, जो सर्वत्र विद्य है मान।
शुद्ध भाव से उसे ध्यावे, परम शक्ति वह उस से पावे।
ईश्वर को जो विसारे चित्त, सिमरे अन्य को किसी निमित्त।
भक्ति का वह फल नहीं पावे, दुर्बलता उसके मन आवे।

दो०-सब धर्मों को त्याग कर, आये प्रभु की शरण।
सब पापों से मुक्त हो, करे प्रभु का वरण।। 6848क
स्मरण प्रभु का जो करे, पल पल हर एक क्षण।
उठता बैठा सोवता, जानो प्रभु का जन।। 6848ख
प्रभु से ही यह जग बना, प्रभु का ही प्रसार।
ऐसा मनन सदा करत, भक्त जो जानन हार।। 6848ग
सदा प्रभु को जो भजत, ला कर मन में प्रीत।
प्रभु कृपा सदा करत हैं, यह भक्ति की रीत।। 6848घ
भक्त सदा प्रभु को भजत, मन में प्रभु का प्यार।
प्राण बसें प्रभु प्रेम में, प्रभु का ही आधार।। 6848ङ
प्रभु कृपा का नेम जो, जन जाने हर एक।
जन दुष्ट भी संत बने, लेय प्रभु की टेक।। 6848च
शीघ्र बने धर्मात्मा , शांति पाये समीच।
प्रभु चरणों में मन टिके, चाहे होवे नीच।। 6848छ
चित्त रहे प्रभु चरण में, भक्ति रस में लीन।
नमः नमः जबान पर, अन्त प्रभु में लीन।। 6848ज

जो जन प्रभु को भजत है, लोक महेश्वर जान।
मुक्त पाप से होत वह, प्रभु की दया महान।। 6848झ
अनन्य मन से जो भजे, प्रभु उपास में लीन।
रक्षक उस के हों प्रभु, वह जन भक्त प्रवीण।। 6848ञ
प्रभु के प्यारे भक्त जो, उन के चार प्रकार।
इक उन में से आर्त है, अर्थार्थी दूज प्रकार। 6848ट
जिज्ञासु तीजा रूप है, चौथा ज्ञानी मान।
इन चारों का भक्ति में, है पूर्ण अधिमान''।। 6848ठ

सज्जन बोला ''हे महाराज, भक्तों के प्रकार जो आज।
आपने कीने हैं बखान, उन का चाहूँ आप से ज्ञान।
आर्त भक्त किसे कह पावें, और जिज्ञासु का बतलावें।
अर्थार्थी जन कैसा होय, और ज्ञानी बतलावें सोय''।
कहा नाथ ''हे सज्जन प्यारे, भक्ति के रहस्य होत न्यारे।
भक्ति रहत गुप्त मन माहिं, पहचान होत न उसके ताहिं।
फिर भी मैं तुझ को बतलाऊँ, प्रत्येक भक्ति का रूप जताऊँ।
आर्त भक्त होता है सोय, दुख में याद करे प्रभु जोय।
केवल प्रभु से करत पुकार, दृढ़ नेम यही लेता धार।
दुख सुख में वह रहत समान, प्रभु को रक्षक अपना जान।
प्रभु को मात पिता निज जाने, बधु बान्धव अपना माने।

दो०-संकट का जब काल हो, करे प्रभु का ध्यान।
पुकारे न किसी और को, आर्त भक्त वह जान''।। 6849

बोला सज्जन "हे भगवान, आर्त भक्त की भयी पहचान।
भक्त जिज्ञासु जो हो नाथ, उस के भी गुण कहें इस साथ"।
बोले नाथ "हे सज्जन मीत, जिस की भक्तों से हो प्रीत।
वह ही प्रश्न करे यह खास, और दृढ़ावे निज विश्वास।
जिज्ञासु के मैं गुण बताऊँ, उसके मन का हाल सुनाऊँ।
जिज्ञासु ज्ञान पिपासु होय, सदा ज्ञान की खोज में सोय।
ईश्वर का वह दर्शन चाहे, सदा प्रयत्न शील रह पाये।
रहस्य सृष्टि का जानन चाहे, सदैव चिन्तन में रह पाये।

दो०-उसे जिज्ञासु जानिये, जिसे ज्ञान की खोज।
रहे विरक्त ही जगत में, गुरु खोजे हर रोज।। 6850

जिज्ञासु भक्त खूब पहचाने, गुरु बिन ज्ञान नहीं हो माने।
गुरु की खोज में चक्र लगाये, गुरु मिले न उदास हो जाये।
उस के मन आह्लाद न आये, खोया विचारों में दिख पाये।
रात को नींद न उसे सुहाये, स्मरण प्रभु को ही कर पाये।
हो निर्मोही काल बिताये, इच्छा कोई न मन में लाये।
शून्य दृष्टि से जग को देखे, प्रसन्न उसे न कभी को पेखे।
प्रभु प्रभु कभी बड़ बड़ावे, गुरु गुरु कभी मुख से गावे।
एकान्तवास ही वह चाहवे, संगति उसे लेश न भावे।

दो०-खोया रहत विचार में, गुरु से चाहे ज्ञान।
जब तक गुरु न उसे मिले, रहता वह परशान"।। 6851

बोला सज्जन "नाथ प्यारे, शुभ विचार मैं सुने तिहारे।

अर्थार्थी का दीजो ज्ञान, जानूं उसको हे भगवान''।
कहा नाथ ''हे मीत प्यारे, सभी भक्त हैं प्रभु को प्यारे।
अर्थार्थी भक्त वही होय, मांगे प्रभु से जो मन में होय।
अर्थार्थी भक्त जो भी होय, मांगे केवल प्रभु से सोय।
किसी समक्ष न कर फैलावे, स्मरण प्रभु को ही कर पावे।
अन्तर्यामी प्रभु को मान, स्मरण मात्र पर्याप्त जान।
प्रभु करते उसे पूर्ण काम, भक्त पै दयाल सदा राम।
अर्थार्थी का गुण यह खास, रहे संतुष्ट न होय उदास।
प्रभु दया पर उसे विश्वास, करें पूर्ण जो भक्त की आस।
मुख से सदा वह यह बखाने, प्रभु स्वंय मम भाव को जाने।
उन से मैं सब कुछ है पाया, अधीन उन के जग की माया।
ऐसा भक्त सदैव खुशहाल, रक्षक हैं उस के प्रभु दयाल।
अपना दुख न किसे सुनावे, प्रभु खुद ही देख वह पावे।

दो०-अर्थार्थी जो भक्त हो, महाभक्त वह जान।
प्रभु कृपा को जानता, न दयालु प्रभु समान।। 6852

[1]अब सुनिये ज्ञानी का हाल, जिस पै प्रभु हों विशेष दयाल।
आत्म ज्ञान जिस जन को होय, ज्ञानी पुरुष कहावे सोय।
आत्म ज्ञान से मन शुद्ध होय, मल भस्म जिमि आग से होय।
ज्ञानी के मन शक्ति अपार, ज्ञानी के बुद्ध ज्ञान अपार।

---

[1]*चतुर्विधा भजन्तेमां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।*
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। गीता VII- 16
तेषां ज्ञानी नित्युक्त एक भक्ति र्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। गीता VII- 17

ज्ञानी रहस्य सृष्टि का जाने, ईश्वरांश प्रति जीव को माने।
ज्ञानी का ईश्वर से साक्षात, सारमयी ज्ञानी की बात।
ज्ञानी परम नीतीज्ञ जानो, उस समान न और को मानो।
जहां ज्ञानी वहां शक्ति वास, सफलता का भी वहां आवास।
जहां ज्ञानी वहां सकल विभूति, जहां ज्ञानी वहां स्थिर संभूति।
जहां ज्ञानी वहां पर दृढ़ नीत, जहां ज्ञानी वहां निश्चित जीत।
[1]ज्ञानी को सृष्टि का सब ज्ञान, अष्ट विध प्रकृति का विज्ञान।
पृथ्वी आब अग्नि ये तीन, वायु आकाश मन भी चीन।
बुद्धि और अंहकार लो जान, अपरा प्रकृति इसे पहचान।
जीव परा प्रकृति है भाई, इन से सृष्टि ईश उपजाई।
ईश्वर सकल जगत का कर्ता, प्रलय काल में जग का हर्ता।
ईश्वर में सभी परोया जान, जिमि धागे में मणियों को मान।

दो०-[2]जितनें जीव हैं जगत में, ईश्वर के वे अंश।
सनातन उन का रूप है, सर्व प्रभु का वंश।। 6853क
जीव प्रकृति से लेत है, छः इन्द्रिन का भार।
मन पांच व इन्द्रियां, करतीं जग के कार।। 6853ख

---

[1] भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं में भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।। गीता VII- 4
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो ययेदंधार्यते जगत्।। गीता VII- 5
अहं कृत्सनस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।। गीता VII- 6
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ।। गीता VII- 7

[2] ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृति स्थानि कर्षति।। गीता XV-7
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।। गीता XV-8
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषाः।। गीता XV-10

यह जिस तन को छोड़ता, ग्रहण करत फिर और।
संग इन्हीं को ले चलत, उस नवीन वह ठौर।। 6853ग
मूढ़ पुरुष न देख सकत, कुदरत का यह काम।
ज्ञान चक्षु से देखाता, ज्ञानी स्पष्ट तमाम।। 6853घ
हे सज्जन कथ दीन मैं, यह संक्षेप ज्ञान।
ब्रह्मास्त्र की धार यह, तीखी जान महान।। 6853ङ
विश्वास से मैं कथ रहा, हो देवों की जीत।
अत्याचारी असुर के, हैं देव विपरीत।। 6853च
विजय धर्म की होत है, जो देवों के पास।
अन्त पाप का नाश है, इस पै रख विश्वास"।। 6853छ
प्रभु की सुन यह वार्ता, सज्जन मन उत्साह।
उठ कर तब वह चल दिया, उस मन जोश अथाह।। 6853ज
दुख में भारत निरख कर, प्रभु लीन अवतार।
निज को राखें गुप्त वे, मर्यादा अवतार।। 6853झ
त्रेता में राक्षस भये, करते अत्याचार।
धनुष बाण को लेय कर, आये राम अवतार।। 6853ञ
नाश सबन का उन किया, यहां बचा न एक।
अत्याचारी राक्षस, हते राम प्रत्येक।। 6853ट
द्वापर में था कंस इक, अत्याचारी खास।
और दुर्योधन आदि थे, करें धर्म का नास।। 6853ठ

सुदर्शन चक्र लेय कर, आये कृष्ण मुरार।
धर्म स्थापित उन किया, अन्यायियों को मार।। 6853ड
कलियुग में अंग्रेज़ ने, कीने अत्याचार।
राम लाल भगवान तब, आये ले अवतार।। 6853ढ
योग शक्ति उन संग थी, न जिस का प्रतिकार।
चुन चुन कर अंग्रेज़ उन, देश से दीन निकार।। 6853ण
उन के इस अवतार का, 'सेवक' करत बखान।
शक्ति के वे पुंज थे, जाने सकल जहान।। 6853त

योगेश्वर राम का जीवन वृत :-

अमृतसर है नगरी प्यारी, वहां प्रकटे थे राम अवतारी।
गंडाराम पिता के आये, भागवन्ती माता के जाये।
कटडा संत सिंह में वास, कूचा भी वह जानो खास।
उस कूचे का घर अन्तिम जान, जहां जन्में थे राम भगवान।
[1]चैत्र शुक्ला नवमी वे जाये, राम नवमी के दिन थे आये।
तीन वर्ष के जब भगवान, कौतुक कीना एक महान।
वृद्धा मरणासन्न इक नार, दर्शन दे कर कीन उद्धार।
प्राण उसके लौट थे आये, जय जय कार सभी कर पाये।
प्रभु अवतार का रहस्य बतायें, परामर्श देवों का कथ पायें।
कलियुग में जब असुर बढ़ पाये, सारे जग के ऊपर छाये।
गोरा रूप उन लीना धार, सकल जग पै कीन अधिकार।
भयभीत सभी जगत को कीन, देव भी भये थे उन अधीन।

[1]विक्रमी संवत 1945, ई. सन् 1888

कोई देश न जग बच पाया, अधिकार में उन के जो न आया।
जग का उत्तर दक्षिण जान, पूर्व से पश्चिम भी लो मान।
सब देशों पर कीन अधिकार, सर्वत्र उन की थी सरकार।
गर्व से कहते असुर वे लोग, "हमारे अधीन सब जग के लोग।
हमारे साम्राज्य की यह बढ़ाई, सूर्य कभी न डूबत भाई"।

दो०-इसी गर्व में चूर हो, करते अत्याचार।
दास बना कर करत थे, मनुष्यों का व्योपार।। 6854क
पशु समान वे बांध कर, वाहनों में हि लाद।
दासों को वे भेजते, बहु जगह निर्बाध।। 6854ख
[1]उन के अत्याचार से, त्राहि त्राहि जग बीच।
डर ना उन्हें भगवान का, करें कर्म अति नीच।। 6854ग
भारत का जो हाल था, वर्णन किमि हो पाये।
राजा रंक गुलाम थे, समझ में न कुछ आये।। 6854घ
ऐसे घोरतम काल में, प्रकट भये थे राम।
अमृतसर में जान लो, घर से भये उपराम।। 6854ङ
अत्याचार को देखकर, चले तपस्या हेत।
और गुरु की खोज में, शक्ति मिले अभिप्रेत।। 6854च
शक्ति मिले अभिप्रेत जिमि, साधन कर के योग।
स्वतंत्र देश करायें, भयें सुखी तब लोग।। 6854छ

---

[1]एक उदाहरण - *अफ्रीका से जहाज़ में लाद कर पुरुषों और स्त्रियों को अंग्रेज़ अमरीका ले जा रहे थे। एक स्त्री का बच्चा रो रहा था। अंग्रेज़ कप्तान ने कहा कि इसे चुप कराओ। स्त्री बोली, "चुप नहीं हो रहा"। कप्तान ने बच्चे को पकड़ कर समुद्र में फैंक दिया और कहा, "लो चुप हो गया"।*

गुरु योगी की खोज में, छोड़ चले घर राम।
ऐसे गुरु की खोज में, करें पूर्ण जो काम।। 6854ज
राम लाल को विश्वास था, योग की शक्ति महान।
योग शक्ति ही करे गी, भारत का कल्याण।। 6854झ
योगी गुरु की खोज में, निकल पड़े थे राम।
पश्चिमोत्तर की ओर चले, जो योगिन का धाम।। 6854ञ
घोर वनों में चल रहे, योगी गुरु की खोज।
तन पर सहते सर्व दुख, रात दिवस हर रोज।। 6854ट
भूखो थे वे चल रहे, एक दिवस भगवान।
देखे फल इक वृक्ष पर, लागे वे ही खान।। 6854ठ

फल भरि पेट नाथ ने खाये, जगत पति निज क्षुधा मिटायें।
सुन्दर जल का स्रोत सुहाया, उससे जल प्रभु निज मुख पाया।
गड़बड़ पेट में होने लागी, पेचश बढ़ी क्षुधा सब भागी।
शौच जांय फिर शौच सतावे, जगदा धार शौच फिर जावें।
साठ बार प्रभु शौच सिधाये, इससे तन में शिथिलता आये।
निर्बल हुए लेट गये स्वामी, रात बितावें अन्तर्यामी।
दूसर दिवस धूप चढ़ि आई, उठे नाथ भक्तन सुखदाई।
निज तन निर्बल नाथ निहारें, अच्छा हुआ प्रभु उचारें।

दो०-वतन अपने के कारणे, मिलें जो दुख अपार।
खुशी खुशी सहता रहूँ, मानूं न मैं हार।। 6855

आगे का पथ राम ने लीन, योगी का कहीं चिह्न न चीन।
मुड़ पड़े तब राम भगवान, ठहरे हरिद्वार में आन।
वहां से भी उन कीन प्रस्थान, गुरु को खोजें स्थान स्थान।
गुरु योगी अवश्य मिल पाये, राम चित्त विश्वास समाये।
काँठ नगर जब प्रभु पधारे, राजा ने थे बहु सत्कारे।
प्रभु जी से उस दीक्षा लीनी, वहां रहने की प्रार्थना कीनी।
राज गुरु प्रभु आप बन पायें, और यहां से आप न जायें।
प्रभु जी प्रार्थना न स्वीकारी, और चलने की कीन तय्यारी।
राज गुरु था नहीं उन बनना, उन देश आज़ाद था करना।

दो०-जिस हेतु प्रभु था लिया, कल युग में अवतार।
उस लक्ष्य को छोड़कर, न और करें स्वीकार।। 6856क
आसुर-दानव कर रहे, जग में अत्याचार।
शक्ति योग की पाय कर, था करना प्रतिकार।। 6856ख
योगी गुरु की खोज में, चले दक्षिण की ओर।
प्रवेश किया उन वनन में, नर्बद नद के छोर।। 6856ग
कदम कदम थे चल रहे, नर्बद नद के तीर।
संकट सहते जा रहे, न मानें कुछ पीर।। 6856घ
प्रभु के मन विश्वास था, दया गुरु की होय।
अवश्य मिलेगें वे कभी, चित्त अधीर न होय।। 6856ङ
कई देखे साध उन, उस यात्रा के माहिं।
सभी साधारण योगी, को पूर्ण योगी नाहिं।। 6856च

उस यात्रा में काल बहु, प्रभु का गया व्यतीत।
अन्तर्यामी नाथ जी, उनको सब प्रतीत।। 6856छ
रहते थे जो साध जन, नर्बद वन प्रदेश।
उन को दर्शन देन हित, गये प्रभु उस देश।। 6856ज
कृतार्थ किए बहु साध जन, प्रभु जी ने उस काल।
कर रहे थे प्रतीख जो, ठहर वहां बहु काल।। 6856झ

नर्बद यात्रा पूरण कीनी, पूर्व की प्रभु राह तब लीनी।
कंटकाकीर्ण यात्रा सारी, हिम्मत प्रभु जी न पर हारी।
मार्ग में जो संकट आये, उनसे प्रभु थे न घबराये।
कुछ का वर्णन हम कर पायें, धैर्य जान प्रभु का पायें।
असम देश था उन को जाना, सहस्त्र मील पैदल चल पाना।
मार्ग का भी ज्ञान था नाहीं, घोर वनों से हो कर जाहीं।
खान पान की व्यवस्था नाहीं, मार्ग दर्शक भी संग नाहीं।
भंयकर जीव बहु मग माहिं, मानुषाहारी भी नर आहिं।

दो०-नर उठा कर ले गये, प्रभु को मार्ग माहिं।
मानुषाहारी वे सभी, दया न उन मन माहिं।। 6857क
दो शिष्य प्रभु साथ थे, मुख राम था एक।
दूजा कृष्णा नन्द था, उन को प्रभु की टेक।। 6857ख
था लेश ना भय उन्हें, भय का था क्या काम।
उन के मन विश्वास था, उन के संग हैं राम।। 6857ग

तीनों को उठाय कर, ले आय मन्दिर बीच।
खुशी से 'हाहू' जन करें, मिला शिकार समीच।। 6857घ
करन तय्यारी वे लगे, कुर्बानी की मीत।
बलि तीनों की देयगें, उन के मन प्रतीत।। 6857ङ
प्रभु खड़े मुस्का रहे, उन की मूर्खता देख।
उन के पाप कर्म को, देवी भी रही पेख।। 6857च
हत्या सर्वथा पाप है, किसी रूप में होय।
हत्या के अपराध का, पापी दण्ड को गोय।। 6857छ
प्रभु इच्छा से तब भयी, एक विलक्षण बात।
कराहन लगी इक स्त्री, पीड़ा से साक्षात।। 6857ज
दया प्रभु को आ गई, देख ललना का दुख।
औषधि दीनी नाथ ने, दूर भया तब दुख।। 6857झ
कहा स्त्री ने सबन को, बलि न इन की होय।
हाथ लगाय जो इन्हें, मेरा शत्रु सोय।। 6857ञ
दो दलों में बंट गया, नागों का परिवार।
शस्त्रों से जो लैस था, परस्पर करें प्रहार।। 6857ट
स्त्री पक्ष के लोग सब, विजयी भये उस काल।
स्पर्श किये प्रभु चरण उन, मुक्त किये तत्काल।। 6857ठ

भाग्य से संकट था टल पाया, भक्तों को सुख सांस था आया।
मुखराम कहा "हे दीनानाथ, हमारा जीवन आप के हाथ।

मृत्यु से है आप बचाया, यात्रा में घोर संकट आया।
आगे का क्या जानें हाल, मुड़ चलें प्रभु हम तत्काल"।
कृष्णानन्द निज मति जताई, उस भी हां में हां मिलाई।
उन दोनों की सुनकर बात, तब कहा प्रभु "बतलाऊँ तात।
गुरु की खोज में जो चल पाये, संकटों से वह न घबराये।
गुरु योगी को खोज के रहना, संकट हर इक हम है सहना।

दो०-लुप्त भया है योग अब, जग से मेरे मीत।
गुरु योगी से मिल सकूं, मेरे मन प्रतीत।। 6858क
ऋषियों की योग विद्या, जग से भयी विलुप्त।
वनों में है आय छिपी, पास गुरुओं के गुप्त।। 6858ख
वञ्चित योग से है भया, मेरा भारत देश।
गुरु योगी की खोज है, मेरा यह उद्देश।। 6858ग
संकटों से मैं न डरूँ, मृत्यु से भी मीत।
अवश्य मिलेंगे गुरु मुझे, मेरे मन प्रतीत।। 6858घ
योग साधारण है नहीं, यह अलौकिक ज्ञान।
इसी ज्ञान की शक्ति से, भारत देश महान।। 6858ङ
जब से भया विलुप्त यह, देश भया असमर्थ।
पुनः उजागर हो जभी, भारत भये समर्थ।। 6858च
दीन योग से हैं भये, भारत के अब लोग।
विषयों में आसक्त हैं, भोगें उलटे भोग।। 6858छ

घोर दासता के जाल में, जकड़ा भारत देश।
अत्याचार को सह रहा, सुखी नहीं है लेश।। 6858ज
भूल गया है नाम भी, योग का उस को मीत।
इसी कारण उसके भये, भाग्य भी हैं विपरीत।। 6858झ

वन से हमने ले कर जाना, गुरु योगी से योग खजाना।
जिस से देश का सुधरे हाल, और पूर्ववत बने खुशहाल।
दासता से वह होवे मुक्त, स्वाभिमान से होवे युक्त।
हीन भावना उस की जाये, अंह की ज्योति चित्त लखाये।
रोगों से वह मुक्ति पाये, योग की युक्ति को अपनाये।
मद्यपान को देवे त्याग, अनाचार के संग न लाग।
पापों से रह पाये दूर, पुण्य कर्म हों सब मंजूर।
भूली संस्कृति को अपनायें, योग के साधन में लग जायें।

दो०-संस्कृति के जो गुण सभी, इन से देश विहीन।
गुलामी के वह जाल में, तड़प रहा हो दीन।। 6859क
आज देश की जो दशा, क्या बदतर होय।
निज धर्म का ज्ञान नहीं, ज्ञान आसुरी गोय।। 6859ख
मद्य मांस का सेवन, संग व धूम्र पान।
यही फैशन है बन गया, खान विदेशी पान।। 6859ग
ऋषियों के इस देश में, कृष्ण चन्द्र की भूम।
गोहत्या है हो रही, सर्वत्र देखा घूम।। 6859घ

देख दशा यह देश की, घर से निकला मीत।
गुरु योगी से मिल सकूँ, कुछ तो हो प्रतीत।। 6859ङ
मेरे मन विश्वास यह, उपाय केवल योग।
स्वतन्त्र होगा देश यह, सुखी भयें तब लोग।। 6859च
मेरे मन जो पीड़ है, किस से करूं बखान।
योगी गुरु को पाऊँ जब, होगा तभी निदान''।। 6859छ
बात प्रभु की श्रवण कर, दोनों जोड़ें हाथ।
कहन लगे ''हे नाथ जी, हम आप के साथ''।। 6859ज

मार्ग उन आगे का लीन, वन वन जाय गुरु को चीन।
योगी गुरु कहीं मिल न पाया, संकट बद से बदतर आया।
घोर वन में इक रात्री आयी, बस्ती कहीं समीप न पायी।
आसन वन में ही लग पाया, धूना सन्मुख एक जलाया।
वह वन हस्तियों का था एक, रहते वहां थे हस्ति अनेक।
अग्नि से हस्ती डर पाये, उस से उसका वन जल पाये।
इक हस्ती तब चल कर आया, अपनी सूँड में जल भर लाया।
पानी को अग्नि पै डाल, आग बुझाने जब वह लाग।
तीनों जन तब खड़ हो पाये, हस्ती देख वे न घबराये।
जलती लकड़ी मुखराम उठाई, हस्ती ऊपर फैंक दिखाई।
हस्ती ने प्रतिकार जताया, जोर से चिंघाड़ वह पाया।

दो०-हस्ती का चिंघाड़ सुन, हस्ती आय अनेक।
घेर लिया उन सबन को, विलक्षण संकट एक।। 6860

लेश नाथ न थे घबराये, सूझा उन को एक उपाय।
आग में ईंधन डाला और, ज्वाला भड़क पड़ी सब ओर।
अग्नि शिखा प्रचण्ड वे देख, हस्ती मुड़े बांध के रेख।
सुख का सांस मुख ने लीना, कृष्णानन्द भी सुख आसीना।
कहा नाथ "अब ठहर न पायें, हम यहां से भाग ही जायें।
हस्तियों का विश्वास न भाई, उन की गति न समझ में आई।
चलो भाग के हम चलि जायें, जहां कहीं ठिकाना पायें"।
वे अंधेरे में चलि पाये, मार्ग तो कहीं दृष्टि न आये।

दो०-मार्ग कहीं न दीखता, हस्तिन का भी भय।
दोनों शिष्य संग लिये, प्रभु चले निर्भय। 6861क
संकट टला न था अभी, आया संकट और।
चलते चलते फंस गये, इक कीचड़ के ठौर।। 6861ख
आगे कदम बढ़त जिमि, गहरा कीचड़ और।
न मुड़ सकें न चल सकें, ऐसा संकट घोर।। 6861ग
शिष्य प्रभु को यह कहें, अब नाथ क्या होय।
बुरे फंसे हैं हम यहां, हल दीखत न कोय।। 6861घ
चारों ओर अंधेर था, फंसे कीच के माँझ।
ऐसे संकट में घिरे, उस भयंकर सांझ।। 6861ङ
पोह फूटी प्रकाश भया, देखा चारों ओर।
कुछ दूरी पर ग्राम भी, दिख पाया उस ठौर।। 6861च

जा रहा एक पुरुष था, उस स्थान के पास।
नाथ पुकारा तब उसे, निज बुलाया पास।। 6861छ
जब निकले वे कीच से, लथ पथ उन के गाथ।
ग्राम को वह ले गया, सब को अपने साथ।। 6861ज

ग्राम जनों ने उन्हें ठहराया, नूतन वस्त्र दे नहलाया।
कीना उन ने वहां विश्राम, खान पान और उन आराम।
कर विश्राम जब वे उठ पाये, ग्राम जनों ने पांव दबाये।
और कीना उन का सत्कार, आने लागे नर और नार।
ग्राम जनों को प्रभु कह पाये, "गुरु की खोज में हम हैं आये।
सिद्ध योगी को यदि तुम जानो, उसका हम को पता बखानो"।
वासी इक उस देश का आया, उस ने प्रभु को पता बताया।
"भगवन् मैं इक योगी जानूँ, उस को पूरण सिद्ध ही मानूँ।
उस का 'गणक' है स्वामी नाम, तीन कोस पर उस का धाम।

दो०-ब्रह्मपुत्र को पार कर, जावो उस के पास।
योगिन को तुम खोजते, तंह पूजे तव आस"।। 6862

सुन कर उस पुरुष की वाणी, उठे प्रभु जी जग कल्याणी।
इक पुरुष को संग उन लीना, पार ब्रह्मपुत्र को कीना।
घोर वन को लांघ वे पाये, सायं काल ग्राम में आये।
मिले गणक को जा कर स्वामी, रहे आठ दिन अन्तर्यामी।
प्रतिदिन उस की संगत करते, उस के विचारों को थे सुनते।
मन्त्र विद्या का वह विद्वान, जनता में था उसका मान।

अपने भावों को बतलाता, प्रभु की बात भी वह सुन पाता।
अन्तर्यामी प्रभु नीहारा, मन्त्र तन्त्र का वह प्यारा।
योग विद्या वह लेश न जाने, साधना मन्त्र की ही माने।
प्रभु जी पूछ गणक से पाये, "किसी योगी का पता बतायें।

दो०-मैं योगी की खोज में, पूर्ण सिद्ध जो होय।
धारूँ उस को मैं गुरु, योग सिखावे जोय"।। 6863

भाव प्रभु का गणक ने समझा, फिर भी मनहिं रहा वह उलझा।
प्रभु की शक्ति गणक न जाने, इस मिस मन में वह सकुचाने।
"योगी को तो मैं हूँ जानूँ, सको न पहुँच उस पास मैं मानूं।
घोर वनों में वह है रहता, भयंकर मार्ग वहां को जाता।
हाथी चीते नर संहारी, जंगली भैंसे भी प्रहारी।
नदियां असंख्य मध्य में पावो, ऐसे मार्ग से किमि जावो।
सौ कोसों का मार्ग जानो, जा कर मुड़ो न यह पहचानो।
तू भूल कर वहां न जाना, अपना जीवन व्यर्थ गंवाना।

दो०-बात एक यह और है, समझो मेरे मीत।
मन्त्रों की भरमार है, तुम्हें न राह प्रतीत।। 6864क
प्रभु को गणक समझाया, छोड़ योगी की चाह।
मन्त्र विद्या चाहिए, दूं मैं तुझे अथाह"।। 6864ख

प्रभु ने गणक को तब बतलाया, "मैंने निश्चय है कर पाया।
मैं योगी को मिलने जाऊँ, जिसका भेद मैं तुम से पाऊँ।
जो कुछ मार्ग की कठिनाई, सब झेलूँ मैं मेरे भाई"।

यह निश्चय जब प्रभु का देखा, निज भाव तब गणक उल्लेखा।
"मन मेरे में अब यह आवे, गुरु दर्शन तुम को हो पावे।
मैं मार्ग तुम को बतलाऊँ, जैसे योगी मिले सुनाऊँ।
राजा है इक रण सिंह नामी, मयं-नगरी का वह है स्वामी।
उसके राज्य में योगी रहता, राजगुरु उस का कहलाता।
पर वह ऐसा है वैरागी, राज आदर का न अनुरागी।
वन में कुटिया भीतर वासा, रह एकान्त चढ़ावे श्वासा।
यदि हो उस को तुम ने पाना, समीप रणसिंह पहले जाना।

दो०-रण सिंह पास भी जाना, है बड़ा दुश्वार।
ऐसे ऐसे जन मिलें, तुम को करें खवार।। 6865

परदेशी जब उस देश में जावे, गुप्तचरों से भेद वह पावे।
गुप्तचर उस को मन से सेवें, शत्रु को न जाने देवें।
शत्रु को वे भूल में डालें, अथवा जल के मध्य ही घालें।
मन्त्र शक्ति से उसे संहारें, अथवा शस्त्र से वे मारें।
ऐसा भी जो न कर पावें, रण सिंह को जा हाल बतावें।
राज नीति का वह विद्वान, आगन्तुक का करे सन्मान।
आदर से वह वश कर पावे, पर की शक्ति हर दिखलावे।
मन्त्र शक्ति का वह प्रवीन, विपक्ष को कर पावे बलहीन।

दो०-रणसिंह को तुम जानो, नीति चतुर नरेश।
मित्रों का तो मित्र है, शत्रु पायें क्लेश।। 6866

यदि पहुँच उस पास तुम जावो, अवश्य योगी के दर्शन पावो।

पहुँचना उस के हां दुश्वार, परदेशी जावे डाला मार।
अब तुम को कुछ और सुनाऊँ, मारग का भी भेद बताऊँ''।
जिन ग्रामों से मारग जाये, गणक सभी के नाम बताये।
खतरों से भी किया सतर्क, प्रभु उत्साह में लेश न फर्क।
ध्यान से प्रभु ने सुन पायी, मार्ग का जो रहस्य बताया।
प्रभु के मन में जागे भाव, योगी को मिलने का चाव।
प्रस्थान प्रभु वहां से कीना, राह मयं ग्राम का लीना।

दो०-घोर वनों में चल रहे, जग के सिरजन हार।
जग वैभव को त्याग कर, योगी बाना धार।। 6867क
सद्गुरु के मिलाप हित, सहते कष्ट अनेक।
योगी गुरु न सुगम मिलें, सत्य बात यह एक।। 6867ख
प्रकट किया मुख राम तब, मग में निज विचार।
सौ कोसों का मार्ग है, जिस में भय अपार।। 6867ग
आप हमारे संग हैं, हमें न भय है कोय।
पर इस दीर्घ मार्ग से, मन सशंकित होय।। 6867घ
कर श्रवण मुख राम का, संशय नाथ मुस्काय।
चिरंजीव गुरु मिलन का, न को सरल उपाय।। 6867ङ
गुरु योगी का मिलना, है परम दुश्वार।
जब तक तन में प्राण हैं, जन न माने हार।। 6867च
एक जन्म यदि पूर्ण हो, राखे फिर भी आस।
अगले भव में वे मिलें, उन पर हो विश्वास।। 6867छ
गुरु योगी की शरण जो चाहे, परीक्षा से वह न घबराये।

कठिन से कठिन परीक्षा होय, खुशी खुशी वह लेवे सोय।
पुरातन इतिहास मैं तुझे बताऊँ, वैदिक काल की बात सुनाऊँ।
'नचिकेता' था बाल सुजान, पिता था उस का बहु विद्वान।
पिता ने भेजा 'यम' के पास, गुरु योगी जो इक था खास।
तीन दिवस यम माथ न लाया, भूखा प्यासा ही रह पाया।
यम ने फिर बहु कीन प्रयास, त्यागे योग की वह जिज्ञास।
परीक्षा में वह भया था पास, दीनी 'यम' तब विद्या खास।

दो०-[1]वेद कहें नचिकेत था, बालक परम सुजान।
यम से शिक्षा पाय कर, बालक बना सुजान।। 6868

यम ने सब कुछ उसे सिखाया, नचिकेता को योग कराया।
यह तो रीत सनातन आई, परीक्षा बिन न मिले कुछ भाई।
यदि हम परीक्षा से डर जायें, गुरु समीप न पहुचन पायें।
[2]अब सुनाऊँ इक और इतिहास, वैदिक काल का वह भी खास।
ऋषिवर एक का सुनो बखान, 'पिपलाद' ऋषि उस का अभिधान।
आश्रम उस का परम सुहाना, शिष्यन का वहां आना जाना।
दिन एक ऋषिकुमार छः आये, समित्पाणि आ शीष झुकाये।
इच्छा योग की उन प्रकटाई, ऋषि की आज्ञा तब हो पाई।
कहन लगे "हे ऋषि कुमारो, एक वर्ष तुम यहां गुज़ारो।
श्रद्धा सहित तप कर पाओ, हम से फिर तुम योग को पाओ।
ज्ञान सकल तुम को दे पायें, तुम से कुछ भी नहीं दुरायें"।
बात कुमारों ने सब मानी, गुरु सेवा में रहे गुरु मानी।

[1]कठ उपनिषद्-3.16.8
[2]प्रश्नोपनिषद्

एक वर्ष उन इमि बिताया, गुरु सेवा और तप कर पाया।
कर कृपा गुरु ने अपनाया, निज चरणों का शिष्य बनाया।

दो०-एक वर्ष पश्चात फिर, दिया योग का ज्ञान।
तपस्या का फल पाय वे, लौटे अपने स्थान।। 6869क
सुन प्रभु के वचन सब, मिला उन्हें प्रमाण।
बिना तपस्या मिलत न, गुरु से योग ज्ञान।। 6869ख

फिर प्रभु ने उन्हें बताया, शुकदेव का इतिहास सुनाया।
कहा व्यास ने "हे शुक देव, करनी चाहिए गुरु की सेव।
जीव जभी जगती में आये, बिना गुरु न ज्ञान को पाये।
राजा जनक विदेह है तात, उसका जा तुम करो साक्षात"।
शुक मानी निज तात की बात, पहुँचा जनकपुरी इक प्रात।
प्रहरी हाथ संदेश भिजाया, "व्यास पुत्र शुक देव है आया"।
जनक जान पाया अभिप्रेत, पिता ने भेजा था जिस हेत।
जनक ने उसे नहीं बुलाया, कई दिवस बहिर ठहर पाया।

दो०-कई दिवस पश्चात फिर, जब बुलाया पास।
लोटा दीना तेल भरा, आज्ञा दीनी खास।। 6870क
इस लोटे को हाथ में, लेकर हे शुक देव।
देखो सारी जनक पुरी, तेल गिरे न लेश।। 6870ख
तेल गिरा यदि लेश भी, सैनिक जो तव साथ।
सर काटेगा वह तव, खडग है उस के हाथ।। 6870ग

सहम गया शुक देव भी, राजाज्ञा को देखा।
विवशता के वश चल पड़ा, तेल निरन्तर पेखा।। 6870घ
लौटा राजा पास जब, कीना उस प्रणाम।
जनक ने पूछा तब उसे, नगरी क्या अभिराम।। 6870ङ
कहा शुक "हे महाराज, नगरी देखी नाहिं।
मैं तो देखा तेल ही, और कुछ भी नाहिं"।। 6870च
प्रसन्न हो तब जनक ने, दीना आशीर्वाद।
"यही मार्ग" कहा "योग का, मन टिके निर्बाध"।। 6870छ

शुकदेव को तब जनक स्वीकारा, योगी सिद्ध उसे कर डारा।
शिष्यन को तब बोले नाथ, "गुरु शिष्य को करत सनाथ।
गुरु लेवें पर परीख कठोर, शिष्य न त्यागे गुरु का ठोर।
हम इस मार्ग को न त्यागें, गुरु के जा हम पाओं लागें।
गुरु कृपा से पहुँच हम पायें, मन में लेश न हम घबरायें।
कठोर परीक्षा गुरु जो लेवे, तो भी शिष्य न साहस खोवे।
हरिश्चन्द्र का सुनो इतिहास, जिस के भीतर दृढ़ विश्वास।
विश्वामित्र ली परीख कठोर, इतिहास में ऐसी है न और।
हरिश्चन्द्र का राज था लीना, दक्षिणा का आदेश फिर कीना।
बेची रानी इस हेतु जान, दास बना शमशान में आन।
पुत्र को जभी काटा सांप, रानी शमशान में लायी आप।
हरिश्चन्द्र ने कफन मांगा, अपने धर्म का वह अनुरागा।
रानी साड़ी फाड़ने लागी, प्रकटे विश्वामित्र त्यागी।

पुत्र को था जीवित कीना, राजा को भी राज उस दीना।
योग शिक्षा फिर उस को दीनी, शास्त्रों ने जिमि वर्णित कीनी।
संक्षेप से प्रभु यह कथा सुनाई, शिष्यों के तब मन में आई।
परीक्षा से हम भय न खावें, अपने राह पर चलते जावें।

दो०-वन में वे थे चल रहे, इस विधि करते बात।
जंगली भैंसा आ गया, उन का करने घात।। 6871क
यह इक दृश्य था मौत का, मुड़े तीन इक ओर।
उस की टक्कर से बचे, ठहर सुरक्षित ठौर।। 6871ख

कहा प्रभु हम भय नहीं मानें, संकट वन में आते जानें।
कृपा गुरु की हमें बचावे, निज पास भी हमें पहुँचावे।
चलते चलते बहु काल बिताया, जल कहीं नजर नहीं आया।
प्रभु कहा मुखराम को जाओ, जल कहीं से खोज के लाओ।
बस्ती देखी मुखराम ने एक, वहां देखा उस जोहड़ भी एक।
जोहड़ पास जब वह आ पाया, देख गदला जल उस में पाया।
जल जोहड़ का गदलाभारी, फिर भी पीते वे नर नारी।
स्नान करें और जल ले जाते, ढोर भी उस में गोते खाते।
खाली हाथ लौट के आया, प्रभु को सारा हाल बताया।
कहा प्रभु हम आगे जावें, अन्य स्थान देख कहीं पावें।

दो०-चलो आगे चल देखें, जहां मिले गा नीर।
स्नान वहीं कर पावें, उसी जलाशय तीर।। 6872

चलते चलते दिन ढल पाया, जल कहीं पै नजर न आया।

जल बिना ही निशा बितायी, प्रात चले उठ जग सुखदायी।
अगला दिन भी बिन जल बीता, वन तो था वह जल से रीता।
तीसरा दिन भी जल न पाया, नारियल जल से काम चलाया।
बिन जल भक्त हुये बेहाल, कब तक बीते इस विध काल।
दीर्घ यात्रा न कट पाये, हे प्रभो कुछ करिये उपाय।
देख भक्तों की पीड़ा भारी, खोजी प्रभु ने धरती सारी।
गीली धरती जहां उन पायी, माटी वहां से खोद दिखायी।
एक हाथ पर पानी पाया, चश्मा जैसे ऊपर आया।
स्नान प्रभु जी उस में कीना, नित्यकर्म में निज मन दीना।
भक्तों ने भी किया स्नान, जिस से भया सकल श्रम हान।
कर स्नान फिर मग पर चाले, प्रभु कृपा को मनाहिं संभाले।
संकट जभी भक्त पर आवें, हाथ देय कर प्रभु बचावें।
वन में विघ्नों का नहीं अन्त, संकट एक से एक बे अन्त।
चले आगे इक नदिया आई, नाव खड़ी जिमि हो उतराई।
नाविक बैठा आसन लाय, यात्रियों को जो पार उतराय।
चार चार पैसे की उतराई, बैठे नाव में प्रभु तब जाई।
आधी नदी जब कीनी पार, कहा नाविक न लगाऊँ पार।
चार चार रूपये जो पाऊँ, तभी नाव मैं पार लगाऊँ।
यदि न देवो यह उतरायी, बोडूं नाव बिन देरी लायी।
यह भी संकट एक विशेष, प्रभु समझाया उस को लेश।
नाविक झगड़े पर उतराया, मुखराम उस को जल गिराया।
तैर कर वह हो गया पार, मुखराम ने नाव लगाई पार।

धमकाने लगा बैठ के पार, बदला तुम से लूँ इस पार।
जा गांव में सबन बतलाये, साधुन को न कुछ को दे पाये।

दो०-भूख लगी थी सबन को, मुख को बोले नाथ।
बाज़ार से कुछ लाओ, जा कर अपने साथ।। 6873

नाविक ने था सबन बताया, मुख ने कहीं से कुछ न पाया।
एक मन्दिर वहां उस पेखा, भीतर जा कर उस ने देखा।
भक्तों ने फल थे रख पाये, मुख ने वही उठा कर लाये।
मुख ने सारा हाल बताया, प्रभु जी को आहार कराया।
तीनों जन आगे चल पाये, सुन्दर वन के दृश्य सुहाये।
मारग अल्प जभी चल पाये, देखा नाविक संग लगि आये।
जो भी गाँव मार्ग में आता, जनता को धमका के जाता।
साधुन को न को कुछ देवे, राजा से वा दण्ड को लेवे।

दो०-जो आगंतुक आ रहे, अन्न न देवे कोई।
राजाज्ञा माने नहीं, दण्ड पाये गा सोई।। 6874

ग्राम किसी से अन्न न पाया, फलाहार से काम चलाया।
मंय ग्राम प्रभु आन पधारे, मनहर बस्ती के घर सारे।
राजा रण सिंह सूचना पाई, उसने कीनी प्रभु अगवाई।
आदर से निज घर ले आया, सुख से प्रभु जी को ठहराया।
बहुत सत्कार प्रभु को दीना, परिजन से मिल कर जो कीना।
नाविक वहां भी दिया दिखायी, जो था मारग में दुखदायी।
सह परिवार सेव उस कीनी, आशिर्वाद प्रभु की लीनी।

पांच सात दिन वहां विराजे, इन्द्र सभा जिमि वृहस्पति साजे।
रणसिंह से तब प्रभु फरमाये, "हम योगी को मिलने आये।
उस का ठौर ठिकान बताओ, अथवा हम को उधर पहुँचाओ।

दो०-हम आये पंजाब से, सहते कष्ट अशेष।
योगी के दर्शन करें, रहता जो इस देश"।। 6875

रणसिंह ने तब विनती कीनी, इच्छा प्रभु जी की जब चीनी।
"नाथ ठौर योगी का जानूं, मारग अति कठिन मैं मानूं।
मैं आप को स्वयं पहुँचाऊं, सेवा का भी अवसर पाऊँ"।
राजा की तब आज्ञा पाये, पालकी सुंदर सेवक लाये।
प्रभु जी को उसमें बिठलाया, राजा ने भी कंधा लाया।
पालकी सेवक ले कर चाले, खूब यत्न से उसे संभाले।
घोर वन में योगी का वास, बस्ती न कोई उस के पास।
योगी ने समाधि में देखा, स्वयं प्रभु को आते पेखा।

दो०-प्रभु को देख समाधि में, योगी उठा सहर्ष।
आगे आया चल कर, उन के करने दर्श।। 6876क
रणसिंह ने संकेत से, प्रभु को दीनि बताय।
"जिस को मिलने जात हैं, वह स्वयं चलि आय"।। 6876ख

प्रभु शिविका से नीचे आये, योगी जानब कदम बढाये।
योगी सन्मुख प्रभु को पाया, दण्डवत करने को वह धाया।
आकर उसने कीन प्रणाम, कहा "स्वागत आप का राम।
पंचनद से हो आप पधारे, गंडाराम के सुत दुलारे।

आइये मेरे योगी राज, पावन करिये आश्रम आज''।
संकोच में आ प्रभु उचारें, ''योगी राज न मुझे पुकारें।
मैं योगियो के पग की धूल, खोजूं उन को जग में भूल।
मुझ को योग की राह बताओ, निज मुख से उपदेश सुनाओ।

दो०-बहुत दूर से चल कर, पहुंचा हूँ मैं आज।
इच्छा मेरी पूर्ण हो, हे योगी महाराज।। 6877क
सिद्ध पुरुष जो आप हैं, करो योग का दान।
मैं जिज्ञासु योग का, योगिराज महान''।। 6877ख

प्रभु की बात उस ने सुन पाई, मन में गुणी नाथ प्रभुताई।
स्पष्ट बात मुख से कह पाया, ''मैं न पूरण योग कमाया।
कुछ ही अंग हैं मैंने साधे, आठों अंग न मैं आराधे।
तुम से तो है जग ने तरना, अष्टांग योगी तुम ने बनना''।
बोले प्रभु ''कब योग कमाऊँ, कब अष्टांग योगी बन पाऊँ।
बिन गुरु योग किमि कोइ पाये, मुझ को गुरु नहीं मिल पाये।
गुरु को ढूंढत मैं महाराज, दर्शन हुए आप के आज।
आप मुझे कुछ भेद बताओ, हमें योग का राह दिखाओ।

दो०-घोर वनों को लांघ कर, पहुँचे हैं इस देश।
सतगुरु कहां मिल पायें, करो हमें निर्देश''।। 6878क
सुनी प्रभु की बात जब, योगी बोला ''तात।
तेरे गुरु नेपाल में, शिवरूप साक्षात''।। 6878ख

प्रसन्न वदन प्रभु फरमायें, ''किस विध हम को वे मिल पायें''।

योगी ने तब भेद बताया, भावी को उस ने समझाया।
"आकर गुरु स्वयं इक रात, संग ले जायें तुझ को तात।
ऐसे सतगुरु न जग माहीं, मिलेंगे जैसे तेरे ताहीं।
डेढ़ वर्ष में कर के पूरण, योग अष्टागं दें संपूरण"।
रणसिंह ने तब विनय सुनायी, "सद्गुरु सकल जगत सुखदायी।
कष्ट सहारे जो इस देश, दास के मन में बहुत क्लेश।
अब हम मन की बात उच्चारें, सुख से नाथ नेपाल पधारें।
नृप नेपाल है बन्धु मेरा, समझो मेरा भाई चचेरा।
बात हमारी सब वह माने, नाथ जायें तो अति सन्माने।

दो०-दर्शन नृप को दीजिये, जब पहुँचें उस देश।
पाती रूप संदेश यह, करना उस को पेश"।। 6879क
प्रभु चले नेपाल को, सद्गुरु मन में धार।
चार दिवस की यात्रा, कीन सुगम से पार।। 6879ख
उस से आगे फिर चले, उत्तर दिक की ओर।
था आकर्षण घन उधर, भया था प्रभु मन मोर।। 6879ग

उत्तर दिक् को प्रभु जी चाले, एकाकी, मन गुरु संभाले।
इतने में अंधेरा छाया, झाड़ी तले प्रभु डेरा लाया।
रात अंधेरी शून्य स्थान, नाथ अकेले वन गुञ्जान।
श्वापद विचर लगावें फेर, रह रह कर वहां दहाड़ें शेर।
हिरदय प्रभु के न कुछ भय, सद्गुरु प्रीत करत निर्भय।
सुख की नींद प्रभु सो पाये, मध्य रात महाप्रभु जी आये।

रामलाल को सोया पाया, दे आवाज़ तब उसे जगाया।
रामलाल ने आँख उघारी, तेजोपुंज देखा इक भारी।
नेत्र राम के इमि चौंधाये, क्षण एक में बंद हो पाये।
चरणों पर दे मस्तक पटका, परमानन्द मगन मन उनका।
दे आशिष महाप्रभु उठाया, अपने पीछे उन्हें चलाया।
आसन पर जब आय पधारे, प्रभु जी ने तब नयन उघारे।

दो०-आसन पर तब आय कर, प्रभु ने खोले नयन।
अमृत दर्शन पाय कर, मुख पै आय न बयन।। 6880क
महाप्रभु ने राम को, दीना तब उपदेश।
समाधि में बिठलाय कर, शक्ति दीनि विशेष।। 6880ख

महाप्रभु भये समाधि आसीन, छ:मास भये उस में लीन।
जो शिक्षा महाप्रभु से पायी, रामलाल तिमि करत कमायी।
सेवा में भी काल बिताता, सद्गुरु चरण सदैव ध्याता।
छ:मास थे इमि बिताये, राम गुरु प्रतीक्षा रह पाये।
महाप्रभु जभी नयन उघारे, राम ने उन के पग सत्कारे।
महाप्रभु ने पास बिठलाया, और राम को इमि समझाया।
"हे राम तुम यहां हो आये, हम हैं तुझ को खुद यहां लाये।
अपना भाव तुझे बतलायें, तेरा कर्तव्य भी समझायें।

दो०-पांच सहस्र वर्ष भये, भया कृष्ण अवतार।
अत्याचारी नरन को, उस ने दीना मार।। 6881क
द्वापर उसके साथ ही, शीघ्र भया व्यतीत।
कलियुग फिर था आ गया, जग की बदली रीत।। 6881ख

काले कर्म कलि काल में, थे हो गये प्रधान।
धर्म जग से लुप्त भया, अधर्म भया प्रवाण।। 6881ग
अधर्म से न जगत चले, धर्म जगत का सार।
सार जाये तो जगत में, ईश्वर लें अवतार।। 6881घ
आज दशा है जगत की, अत्याचार प्रधान।
जिस की होवे लाठिया, भैंस उसी की जान।। 6881ङ
आतताइन ने आय कर, कीना जगत गुलाम।
प्रत्येक मानव जगत का, उन को करे सलाम।। 6881च

आसुरी शक्ति उठ है पाई, देवों की कहीं न सुनवाई।
असुरों ने है सर उठाया, है विश्व को गुलाम बनाया।
उन रौंदा पद तले संसार, उन की शक्ति का नहीं पार।
उन का जानो ये अहंकार, सारे जग पै है अधिकार।
अहंकार का तो है न अंत, अत्याचार करें बे अन्त।
अनाचार जग में विस्तारें, सदाचार को न सत्कारें।
ऋषियों की भी भूमि प्यारी, पद तले उन रौंदी सारी।
उस की संपद लूटी सारी, भूखी मर रही जनता भारी।
गो ब्राह्मण का है नहीं मान, सह रहे हत्या और अपमान।
वेद शास्त्र का करें अपमान, निज को कहते बहु विद्वान।
तामसिक खान पान का दौर, ऋषि भूमि में अब सब ओर।
अत्याचार से किमि बच पाना, यह है मैंने तुझे बताना।
शक्ति बिन नहीं होय निदान, शक्ति कोई न योग समान।

तुझे शक्ति मैं वह दे पाऊँ, तुझ से ही मैं कर्म कराऊँ।
योग शक्ति गुप्त रह पाती, जग को प्रकट नहीं हो पाती।
उस का रहस्य भी तुझे बताऊँ, तुझ से भेद न कुछ छिपाऊँ।
सूझ बूझ से करना काम, प्रकट न होना जग में राम।
तेरी शक्ति से होंगे काम, जान पाये न जग तमाम।
त्रेता में भी तुम थे आये, द्वापर में भी तुम थे आये।
कलियुग में भी हो आ पाये, तुम से ही यह काम हो पाये।

दो०-धर्म स्थापन हेत ही, होता तेरा आन।
राम दूँगा शक्ति तुझे, जैसे मम अनुमान''।। 6882

गुरु का आदेश जब सुन पाया, राम के मन में तब यह आया।
वह शक्ति क्या होती भाई, गुरु मुख से वर्णित हो पाई।
प्रश्न करूं तो पूछ लूँ अब, अवसर मिलेगा नहीं तो कब।
सौभाग्य से सद्गुरु मिल पाये, आशीर्वाद थे देने आये।
और सीखने को हम योग, आज सुन पाया शक्ति योग।
गुरु ही इस का भेद बतावें, अन्यत्र अन्य को बतलावें।
कहा राम ''हे गुरु महाराज, सुना शक्ति का वर्णन आज।
उस का क्या स्वरूप है नाथ, आयेगी किस विध वह मम हाथ।
कब मुझे वह आप दे पायें, और इस का प्रयोग बतायें''।

दो०-सुनी राम की बात जब, कहा प्रभु ''हे तात।
वह 'संकल्प शक्ति' है, जिस की कीनी बात।। 6883

'संकल्प शक्ति' को तुम जानो, उस के गुण भी तुम पहचानो।

'निर्माण' में वह होत समर्थ, 'रक्षा' में भी नहीं असमर्थ।
'संहार' करने को जब आवे, कोई न उस से बच ही पावे।
यही शक्ति ईश्वर की जान, जिस से 'रचना' कीन महान।
रचना की 'रक्षा' भी कर पाये, 'संकल्प शक्ति' से यह हो जाये।
'संहार' पर जब वह उतरावे, क्षण में सृष्टि धूल हो जावे।

दो०-संकल्प शक्ति जो योग की, वह अनोखी जान।
'सृजन' भी वह कर सकत, और 'नाश' भी मान।।6884

संकल्प से जग की रचना होय, संकल्प से ही जग स्थिरता गोय।
संकल्प से प्रलय भी हो भाई, यह सब ईश्वर की प्रभुताई।
योग की वही शक्ति लो जान, जिस को तुझे करूं प्रदान''।
कहा राम ''हे गुरु महान, किस विध करेंगे ये प्रदान''।
कहा प्रभु ''मैं तुझे बताऊँ, कैसे पाओ यह समझाऊँ।
'अष्टांगयोगी' जन हो जाये, इस शक्ति को वह पा जाये''।
कहा राम ''हे सद्गुरुदेव, इस का भी बतलावें भेव।
अष्टांगयोगी कब शक्ति पायें, यह भी नाथ मुझे बतलायें''।
कहा प्रभु ''आठ अंग जो भाई, तीन उन में अंतरंग कहाई।
'धारणा' 'ध्यान' 'समाधि' तीन, योग के अंतरंग ये चीन।
धारणा ध्यान समाधि अभ्यास, योगी करे जब गुरु के पास।
दीर्घकाल अभ्यास जब होय, 'संयम' अवस्था पाता सोय।
[1]'संयम' से सिद्धियां आयें, शक्ति भी तब योगी पायें।
'संयम योगी' ईश्वर का रूप, यह ज्ञान है जग से गूप''।

[1]देखें - योगदर्शन का विभूतिपाद

राम कहा "मुझे करें आदेश, पालूँ आज्ञा मैं तव हमेश।
किस विध करूं मैं वह अभ्यास, तव चरणों पर मम विश्वास"।
कहा प्रभु "मैं तुझे बतलाऊँ, इस की विधि सभी समझाऊँ।
तप करो इक वर्ष मम मीत, योग में रख कर निश्चित चीत।

दो०-एक वर्ष पश्चात फिर, 'संयम' में ले जाऊँ।
और 'शक्ति' भी योग की, मैं तुझे दे पाऊँ।। 6885क
देश में फिर जाय कर, इसे काम में लाओ।
अत्याचार है हो रहा, वह समाप्त कर पाओ।। 6885ख
तेरे इस 'संकल्प' से, वे छोड़ेंगे देश।
जिन के अत्याचार से, देश सुखी न लेश"।। 6885ग
ऐसा कथ प्रभु राम को, और दिया कुछ ज्ञान।
जिस विध बैठ समाधि में, 'संयमी' बने महान।। 6885घ

महाप्रभु समाधि आसीन, राम भी तप में हो गया लीन।
प्रभु आदेश जिमि हो पाया, राम ने वही योग कमाया।
साधे उस ने आठों अंग, चढ़ा राम पर 'संयमी' रंग।
'संकल्प' शक्ति का भया विकास, जो प्रभु का आदेश था खास।
भया व्यतीत एक था साल, राम को उठाया प्रभु तत्काल।
और कहा "अब राम जा पाओ, देश की सेवा में लग जाओ।
सतर्क रहना पर हर क्षण तात, किसी को प्रतीत न हो मम बात।
जग समान जग में रह पाओ, अपनी शक्ति गुप्त रख पाओ।
रहस्य से बनता है सब काम, रहस्य खुले तो बिगड़े काम।

मेरा आशिष तेरे साथ, भविष्य देश का तेरे हाथ।
योगी यदि प्रकट हो पाये, जग मर्यादा ही मिट जाये।
ईश्वर जग को प्रकट हो पावे, जगती में अनर्थ मच जावे।
कृष्ण रूप तुम जग में आये, शस्त्र नहीं थे तुम उठाये।
अर्जुन से ही युद्ध कराया, निज स्वरूप को तुम छिपाया।
रामरूप जब थे तुम आये, बाली से सुग्रीव लड़ाये।
अपना बल न तब दिखलाया, भेद न तब भी जग ने पाया।
मेरा अब यही आदेश, प्रकट होय नहीं शक्ति लेश"।
प्रभु आशिष ले राम चल पाये, हरिद्वार आ डेरे लाये।

दो०-हरिद्वार में बैठ कर, जनता मध्य उपराम।
सिद्धि कीनी प्रकट इक, अदृश्य भये थे राम।। 6886क
प्रकट भये जब वे पुनः, मन में उन के खेद।
गुरु आज्ञा तो थी मुझे, प्रकट न करना भेद।। 6886ख
हरिद्वार से चलि कर, आये अमृत सार।
छिपाया अपने योग को, गुरु आज्ञा अनुसार।। 6886ग

योगेश्वर राम की योगशक्ति का प्रकाश और देश का स्वतंत्र होना :-

जटा उतारी आपनी, वस्त्र पहने नाथ।
रहन लगे परिवार में, तब जनता के साथ।। 6886घ
योग सिखाते जनन को, स्वास्थ्य लाभ के हेत।
ध्यान की शिक्षा देते, सुख शांति के हेत।। 6886ङ

देश की हालत देखते, बैठ समाधि माहिं।
निरख रहे थे नाथ जी, होता जो सब थाहिं।। 6886च
कैदिन से थे जेल भरे, काला पानी साथ।
फांसी पर थे लटक रहे, अंग्रेज़ों के हाथ।। 6886छ
राजमार्ग पर चलत थीं, गोलियां सब काल।
निशान उन के होत थे, देश भक्त तत्काल।। 6886ज
खून से रंगा देश था, हाहाकार प्रधान।
भय से खाली था नहीं, भारत में को स्थान।। 6886झ
मार्शल ला था लग रहा, थाँ कुथाँ उस काल।
घायल सड़कों पर पड़े, वृद्ध युवक वा बाल।। 6886ञ
दासता का अभिशाप यह, जान गये थे लोग।
भये शामिल संघर्ष में, सभी हिन्द के लोग।। 6886ट
जलियां वाले बाग में, भया था जन संहार।
प्रभु सभी थे देख रहे, अपने बैठ द्वार।। 6886ठ
उन का दुखी था भया चित्त, गुरु से की फरयाद।
महा प्रभु जी प्रकट भये, कहन लगे उस बाद।। 6886ड
"चिरञ्जीव यह होत है, सब कुछ युद्ध के बीच।
बचा लिया तुम मुलख को, कीना कर्म समीच।। 6886ढ
मुलख करेगा काम फिर, आश्रम का हे राम।
आओ गे जब तुम फिर, संघर्ष के उपराम।। 6886ण

अभी काल कुछ और है, इस संघर्ष का तात।
हिम्मत न तू हारनी, रहे स्मरण मम बात।। 6886त
देवों के आशीष से, देश में आय काल।
देश खुशहाल होयगा, 'प्रगति' का जब काल।। 6886थ
अभी लड़ाई और है, करो 'शक्ति' प्रयोग।
सफल होय संघर्ष यह, भारती जीतें लोग''।। 6886द
इतना कह कर विदा भये, राम लाल से नाथ।
ताकत रह गया राम तब, सद्गुरु का वह पाथ।। 6886ध
तब राम के 'संकल्प' से, मच गया कुहराम।
अंग्रेज़ को जन देखते, करते काम तमाम।। 6886न
[1]चैमसफोर्ड हैरान था, क्या भया इस देश।
यहां पर रहना कठिन है, चालें अपने देश।। 6886प
जनता ने उखाड़ दी, रेलों की ही पाट।
लूट लिये थे बैंक उन, न खुले को हाट।। 6886फ
लायलपुर गुजरात में, गुजरांवाल लाहौर।
अमृतसर में साथ ही, मार्शल ला सब ओर।। 6886ब
पूरा पूरा ज़िला था, इस लपेट में मीत।
कमाल कीन प्रभु शक्ति ने, था न किसी के चीत।। 6886भ
आगे से कोई वायसराय, न बनने को तय्यार।
जान जोखों में डालनी, न किसी को स्वीकार।। 6886म

[1] वायसराय

[1]जैसे तैसे वायसराय, छः आये उस बाद।
संभाल सके न देश को, देश भया बरबाद।। 6886य
संभाल सके किमि देश को, राम ने खींचे प्राण।
'संकल्प शक्ति' के सामने, सब शक्ति निष्प्राण।। 6886र
छोड़ गये इस देश को, कतल आम के बीच।
जान करोड़ों जनन की, आहुत भयीं इस बीच।। 6886ल
प्रभु संभाला देश को, देश भया आज़ाद।
'प्रगति काल' तब आ गया, 'धूमिल काल' के बाद।। 6886व

इति

भारत माता के इतिहास का 'धूमिल काल' समाप्त।

---

[1]छः वायसराय चैमसफोर्ड के बाद-

1. रीडिंग (1921-1926)
2. इरविन (1926-1931)
3. वलिंगटन (1931-1936)
4. लिनलिथगो (1936-1943)
5. वेवल (1943-1947)
6. मौंट बेटन (मार्च 1947-15 अगस्त 1947)

6. प्रगति काल

(15 अगस्त 1947 से आगे)

क) भारत का संविधान :-

पंदरह अगस्त सैंताली जान, आज़ाद भया था हिन्दोस्तान।
गुलामी पर था लागा ताला, भारतिन ने निज देश संभाला।
अंग्रेज़ों ने थी की बरबादी, लाशों ऊपर खड़ी आज़ादी।
हाहाकार में खुशी थी छायी, विरोधाभास यह कैसा भाई।
भारतवासी वीर महान, साहसी भी नहीं उन समान।
दुख में भी उन सुख को माना, और अपना कर्तव्य पहचाना।

दो०-दीर्घ काल गुलाम रह, भया स्वतन्त्र देश।
प्रभु कृपा यह जानिये, है जो हुई विशेष।। 6887क
भारत के संरक्षक, राम लाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6887ख
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6887ग
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, राम लाल लो चेत।। 6887घ

भारत निज विधान बनाया, शासन उस अनुसार चलाया।
जिस की विशेष बात लो जान, हर इक का सन्मान समान।
जिस में भेद भाव न कोई, राजा हो या रंक वह सोई।

दो०-भारत का विधान जो, बाई भागों में जान।
जिन में विस्तृत है लिखा, शासन का सब ज्ञान।। 6888क
[1]'संघ व राज्य क्षेत्र' का, है प्रथम में ज्ञान।
'नागरिकता' है दूसरा, सुन्दर बना विधान।। 6888ख
इसी विध अन्य भागों में, विषय संपूर्ण जान।
छूटा नहीं है एक भी, भारत के संविधान।। 6888ग
वर्णन 'मूल अधिकार' का, और 'राज्य' की नीत।
तथैव 'कार्य पालिका', भी सब इस में चीत।। 6888घ
राज्यों के सभी 'क्षेत्र', वा जो 'जाति' विशेष।
संघ से राज्य के 'सबंध', वर्णित हैं निशेष।। 6888ङ
सेवायें जो सरकारी, और निर्वाचन रीत।
राजभाषा क्या होय, इसमें वर्णित चीत।। 6888च
आपतकाल उपबन्ध, वा जो अन्तर्काल।
इन में क्या कुछ होय, वर्णित है सब हाल।। 6888छ

---

[1]संविधान के भाग :-

1. संध और उसका राज्य क्षेत्र
2. नागरिकता
3. मूल अधिकार साधारण
4. राज्य की नीति के निदेशिक तत्व
5. कार्यपालिका
6, 7, 8, 9 राज्य और राज्य क्षेत्र
10. अनुसूचित ओर आदिम जाति क्षेत्र
11. संघ ओर राज्यों के संबंध
12. वित्त, संपत्ति, संविदाएं और व्योपार बाद
13. भारतराज्य क्षेत्र के भीतर व्यापार, वाणिज्य और समागम
14. संघ और राज्यों के अधीन सेवायें
15. निर्वाचन
16. कतिपय वर्गों के संबंध में विशेष उपबन्ध
17. राजभाषा
18. आपात उपबन्ध
19. प्रकीर्ण (विषय)
20. संविधान का संशोधन
21. अस्थायी तथा अन्तर्कालीन उपबन्ध
22. संक्षिप्त नाम, प्रारम्भ और निरसन

अच्छूता रहा न विषय इक, ऐसा बना विधान।
शासन भारत वर्ष का, अनुसार उस के जान।। 6888ज

'काला काल' भारत का बीता, 'धूमिल काल' जिमि तिमि व्यतीता।
'प्रगति काल' प्रभु दया से आया, विधान जिस का है लिख पाया।
'प्रगति काल' प्रगति हो पायी, भारत में खुशहाली आयी।
कुछ का करें हम यहां बखान, स्वतन्त्रता का दान यह मान।

ख) भारत की प्रगति :-

दो०-'प्रगति काल' में देश की, जो प्रगति हो पाई।
वही यहां संक्षेप से, है वर्णन हो पाई।। 6889क

ग) शिक्षा के क्षेत्र में :-

दो०-प्राय: लोग निरक्षर थे, जब था 'धूमिल काल'।
अनपढ़ता के कारणे, मंद देश का हाल।। 6889ख
'प्रगति काल' में हो रहा, शिक्षा का विस्तार।
ग्राम ग्राम में स्कूल हैं, खोले जो सरकार।। 6889ग
है यत्न यह हो रहा, निरक्षर हो न कोय।
शिक्षित हों जब जन सभी, तब खुशहाली होय।। 6889घ
स्कूलों के ही साथ भी, और भी हैं उपाय।
जिन से शिक्षा बढ़ रही, रेडियो अन्य उपाय।। 6889ङ
इन उपायों से अब, घर घर पहुँचा ज्ञान।
पहली बात अब न रही, दूर हुआ अज्ञान।। 6889च

और उपाय बहुत हैं, ज्ञान विस्तारण हेत।
'प्रगति काल' में जानिये, जनता भयी सचेत।। 6889छ

टी.वी. और कम्प्यूटर, अब छात्रों के पास।
'प्रगति काल' में प्रगति, हो रही है खास।। 6889ज

उच्च शिक्षा में ले रहे, छात्र बहुत प्रवेश।
'प्रगति काल' की उन्नति, में न संशय लेश।। 6889झ

नये विषयों का हो रहा, शिक्षा में प्रवेश।
स्वेच्छा से हैं कर रहे, उन में छात्र प्रवेश।। 6889ञ

कुछ छात्र अब जा रहे, शिक्षा ग्रहण विदेश।
रुचि छात्रों में बढ़ रही, शिक्षा हित विशेष।। 6889ट

अनपढ़ता की औसत, बहुत घटी है मीत।
देश प्रगति पर चल रहा, इसी से हो प्रतीत।। 6889ठ

घ) *भाषा के क्षेत्र में :-*

शिक्षा का भाषा से जो जोड़, इसको नहीं सके को तोड़।
'धूमिल काल' में जानो साईं, देश की भाषा थी को नाहीं।
अंग्रेज़ी से को काम चलाता, कहीं उर्दू में हो पाता।
कहीं हिन्दी थी चल पाती, प्रांती भाषा काम भी आती।
खास बात जो हो गई एक, देश की भाषा भई है एक।
हिन्दी राष्ट्र भाषा बन पाई, जनता को सुविधा हो पाई।
राष्ट्र भाषा का गुण यह एक, जनता समझ सके प्रत्येक।
शिक्षा माध्यम बन पाये सोय, एक भये तब जनता जोय।

दो०-एक विचार और भाषा एक, यदि सबन की होय।
प्रगति देश की हो सके, संगठित भी तब होय।। 6890क
राष्ट्र भाषा है करत, देश संगठित मीत।
राष्ट्र भाषा में हो यदि, सब जनता की प्रीत।। 6890ख
प्रांति भाषा गौन हो, राष्ट्र भाषा प्रधान।
ऐसी आस्था जब बने, देश बनत महान।। 6890ग
राष्ट्र भाषा हिन्दी है, बहु संख्या में लोग।
बोल रहे व समझ रहे, यह सुन्दर संयोग।। 6890घ
देव नागरी लिपि बनी, राष्ट्र भाषा की मीत।
ऐसी लिपि न जगत में, होवे यह प्रतीत।। 6890ङ
इस के अक्षर जोय हैं, और उच्चारण जोय।
उन में पूर्ण समानता, ऐसा गुण कहां होय।। 6890च

ङ) *विज्ञान के क्षेत्र में :-*

दो०-विज्ञान ने भी उन्नति, इस काल में कीन।
प्रगति काल विज्ञान का, इस ने बहुत कुछ दीन।। 6890छ
दूरभाष जो एक है, उस के लाभ विशेष।
घर बैठे ही कर सकें, बातें देश विदेश।। 6890ज
क्या कम्प्यूटर की कहें, चमत्कार की चीज़।
ज्ञान सृष्टि का भर सकें, सारा ही उस बीच।। 6890झ

प्रगति काल में है मिला, फैक्स का भी ज्ञान।
हमारा पत्र मिल सकत, दूर क्षणों में जान।। 6890ञ
क्या कहें मोबाइल की, उसे जेब में डाल।
चाहे कहीं भी हो जन, सुने बात तत्काल।। 6890ट
संचार के बहु साधन, गिनती न हो पाय।
प्रगति काल की देन है, मिले बहुत उपाय।। 6890ठ
भारत ने विज्ञान में, प्रगति कीन अथाह।
बहुत भेजे [1]पलाद में, अपने इस उपग्राह।। 6890ड

च) *यातायात के क्षेत्र में :-*

दो०-यातायात के साधन, इक से इक विशेष।
यात्रा सुगम अब हो गई, जानो अपने देश।। 6890ढ
वायुयान है ले चलत, देखते देखते मीत।
इक छोर से अन्य को, हो न काल प्रतीत।। 6890ण
वाहनों की भीड़ लगी, सर्वत्र है इस देश।
प्रगति के इस काल में, भयी प्रगति विशेष।। 6890त
रेलों की भी उन्नति, इस काल भयी विशेष।
दो हज़ार से रेल अधिक, नयी चलीं इस देश।। 6890थ
कारखानों में हो रहा, इंजनों का निर्माण।
डिब्बे भी हैं बन रहे, कारखानों में जान।। 6890द

[1]पलाद-अन्तरिक्ष (Outer Space)

बहु रेलें हैं हो गयी, वातानुकूल जान।
यात्रियों को सुविधा भयी, 'प्रगति काल' में मान।। 6890ध
लाइनों का अब हो रहा, विद्युतीकरण मीत।
प्रगति हो रही काल इस, रेलों में लो चीत।। 6890न
डीलक्स ट्रेनें बन गयी, लाम्बी यात्रा हेत।
और कई भयीं सुविधा, यात्रिन के अभिप्रेत।। 6890प

छ) कृषि के क्षेत्र में :-

ध्यान देवें अब कृषि की ओर, जो आवश्यक चारों ठोर।
कृषि प्रधान देश यह जान, कृषि पै निर्वाह लो मान।
फिर भी रहते लोग भुखेरे, धूमिल काल में शाम सवेरे।
प्रगति काल में बदला हाल, अब तो बाहर भेजता माल।
प्रभु किरपा से बदला हाल, और जनता ने कीन कमाल।
अनेकों अन्न है यह उपजाता, जिसे भण्डारों में भर पाता।
किसी अन्न की है नहीं तोट, जिस से विदेशों की ले ओट।
दालें और भी अन्य अनाज, बहु मात्रा में होते आज।

दो०-खाद्यान्न की तोट अब, रही न भारत देश।
भण्डार भरे हैं अन्न से, जगह जगह विशेष।। 6891क
बीज तेल के हैं कहीं, फलों की भरमार।
मानो भूमि दे रही, प्रगति काल उपहार।। 6891ख
कहीं बाग अमरूद के, कहीं सेब लो जान।
आमों की तो बात क्या, भारत उन की खान।। 6891ग

कहीं पै मक्की उग रही, कहीं गन्दम के खेत।
कहीं धान की उपज है, कहीं उड़द के खेत।। 6891घ
चाय काफी व रबड़ की, भी है उपज विशेष।
कपास जूट और सन, होती है इस देश।। 6891ङ

ज) उद्योग के क्षेत्र में :-

दो०-अब सुनिये उद्योग की, भी हालत मम मीत।
उन्नति इस में है भयी, जानो आशातीत।। 6891च
'धूमिल काल' में था नहीं, यहां कोई उद्योग।
विदेश पर ही निर्भर, थे यहां के लोग।। 6891छ
अब भारत में पनप रहे, अनेकों ही उद्योग।
किस किस का वर्णन करें, सभी वर्णन के योग।। 6891ज

वस्त्र और इस्पात का जान, कोयला और जूट का मान।
अलुमीनियम, चीनी का उद्योग, ये हैं खास वर्णन के योग।
साइकलों का भी है उद्योग, जिस में काम करते बहु लोग।
कागज और कपड़े का काम, इन की मांग तो देश तमाम।
बनता सीमैंट भी इस देश, जाता यहां से है विदेश।
खेलों का सामान बन पाये, जो खेलों के काम में आये।
बहुत सारे कुटीर उद्योग, वर्णन के वे बहुत हैं योग।
जैसे हाथी दांत का काम, और ऐसे उद्योग तमाम।

दो०-बढ़ रहे हैं देश में, भिन्न भिन्न उद्योग।
प्रगति काल में देश को, मिला सुन्दर सुयोग।। 6892क

झ) सड़कों के निर्माण में :-

दो०-सड़कों का भी जाल है, बिछ गया इस देश।
दुर्गम स्थान पीछड़े , सुगम भया प्रवेश।। 6892ख
मिल गयें हैं ग्राम अब, राज मार्ग से मीत।
जा सकें हर ग्राम में, सुगमता से मीत।। 6892ग
ग्रामीन ले कर आ रहे, ट्रैक्ट्रों में निज माल।
पहले उन का आना, वहां से था मुहाल।। 6892घ
सड़कें पक्की हो गई, हर जगह मम मीत।
सुन्दरता इस देश की, बढ़ गई इस रीत।। 6892ङ
पूर्व से पश्चिम मिल गया, उत्तर दक्षिण जान।
बंध गया इक सूत में, भारत सारा मान।। 6892च
सड़कों का आकार भी, रहा न वैसा मीत।
चौड़ी वे सब हो गईं, वाहन चलें सप्रीत।। 6892छ

ञ) बिजली निर्माण में प्रगति :-

दो०-बिजली आज की मांग है, जानें हम सब लोग।
है उत्पादन हो रहा, जान मांग के योग।। 6892ज
जल से पैदा हो रही, कोयले से भी मीत।
और अनेक उपाय हैं, बनती है जिस रीत।। 6892झ
तेज़ी से है बढ़ रही, मांग इस की जान।
खोज रहे वैज्ञानिक, और उपाय मान।। 6892ञ

देश में ऐसा घर न, जहां विद्युत न होय।
प्रगति अनोखी जानिये, न जानता था कोय।। 6892ट
लाखों पंखे चल रहे, अरबों दीपक जान।
लाखों मशीनें चल रही, विद्युत से ये मान।। 6892ठ
विद्युत जीवन बन गया, जनता का इस देश।
विद्युत बिना न रह सके, इस काल हम लेश।। 6892ड

ट) *अनेक राज्यों का एकीकरण :-*

दो०-प्रगति काल की देन इक, उस का करें बखान।
खण्ड़ खण्ड जो देश था, हो गया एक महान।। 6892ढ
छः सौ यहां पर राज्य थे, छोटे बड़े लो जान।
'धूमिल काल' में थे सब, देश बंटा था जान।। 6892ण
'प्रगति काल' जब आ गया, सभी भये विलीन।
भारत के वे संघ में, चतुर नीति ने कीन।। 6892त
प्रभु की सारी यह दया, देश के रक्षक जान।
दया प्रभु की तो बिना, संभव होत न मान।। 6892थ

ठ) *स्वास्थ्य के क्षेत्र में:-*

'प्रगति काल' जब देश में आया, स्वास्थ्य की और ध्यान हो पाया।
थे चिकित्सालय बहु खुल पाये, जगह जगह थे वे बन पाये।
अन्धेपन की और गया ध्यान, पोलियो की भी ओर ध्यान।
इन दोनों से पीड़ित लोग, यत्न कीन वे भयें निरोग।

स्वास्थ्य केन्द्रो में बच्चे जायें, टीके लगवा वहां से आयें।
जीवन उन का भया सुरक्षित, पूर्व में था वह असुरक्षित।
बहुत प्रकार के कीन उपाय, जिस से जनता स्वस्थ रह पाये।

ड) *पंचवर्षीय योजनाऐं :-*

प्रगति काल' योजना बन पायी, पंचवर्षीय जोय कहायी।
उस से लाभ बहुत हो पाया, काल बद्ध कारज बन पाया।
[1]इसके मुख्य उद्देश्य हैं चार, उन्नत देश हो जिस प्रकार।
प्रथम उद्देश्य इसका लो जान, उच्च हो जीवन का प्रतिमान।
उद्देश्य दूसरा यह कहलाय, समृद्धि का अवसर जनता पाये।
उद्देश्य तीसरे को मंजूर, हो सामाजिक विषमता दूर।
जानें चौथा उद्देश्य तमाम, सभी पायें रोज़गार व काम।
होंय उद्देश्य सफल तब भाई, संयम आबादी में हो जाई।
प्रगति काल में यही प्रयास, सब का हो इसमें विश्वास।

दो०-देश के प्रगति काल में, प्रगति होय महान।
शिखिर हिमालय से बडा, भारत का हो मान।। 6893क

ढ) *सांस्कृतिक और योग के क्षेत्र में:-*

दो०-भारत की जो संस्कृति, उस का होय विकास।
सदियों से हम जानते, होता रहा ह्रास।। 6893ख

---

[1]*पंचवर्षीय योजनाओं के चार मुख्य उद्देश्य :-*

1. *जनजीवन का प्रतिमान ऊंचा करना।*
2. *जनता को अधिक समृद्ध व विविध प्रकार का जीवन बिताने का अवसर देना।*
3. *प्राप्त मानवीय और भौतिक साधनों का सर्वोत्तम उपयोग करके अधिक विषमता दूर करना।*
4. *लोगों को काम और रोज़ी देना।*

संस्कृति की है दृढ़ धुरि, योग विद्या हि जान।
उसके ही तो ज्ञान को, आये देन भगवान।। 6893ग
समय समय पर ऊतरे, ले कर वे अवतार।
कलियुग में अब आ गये, नाम 'राम' का धार।। 6893घ
भारत के संरक्षाक, राम लाल भगवान।
युग युग कृपा कीनि उन, देश की जाय न आन।। 6893ङ
आर्य संस्कृति प्रिय उन्हें, वैदिक धर्म विशेष।
उन्हें प्रिय है देश यह, करते दया हमेश।। 6893च
युग युग में अवतार लें, भारत रक्षा हेत।
राम बने कभी कृष्ण वे, राम लाल लो चेत।। 6893छ
तैयीस पूर्व काल में, जिन लिये अवतार।
[1]चौबीसवां अवतार ले, आये तन वे धार।। 6893ज
योगेश्वर के नाम से, हो गये विख्यात।
योग शक्ति प्रकटी, जगत में साक्षात।। 6893झ

---

[1] भगवान के चौबीस अवतार :- देखें श्रीमद्भागवत पुराण :-

1. पुरुष - भागवत II 6.42
2. नारद - भागवत I.3.8
3. वाराह - भागवत II.7.1
4. सुयज्ञ - भागवत II.7.2
5. कपिल - भागवत II.7.3
6. दत्तात्रेया- भागवत II.7.4
7. नर नारायण - भागवत II.7.6
8. ध्रुव - भागवत II.7.8
9. पृथु- भागवत II.7.9
10. ऋषभ - भागवत II.7.10
11. हयग्रीव- भागवत II.7.11
12. मत्स्य - भागवत II.7.12
13. महाकच्छप- भागवत II.7.13
14. नरसिंह- भागवत II.7.14
15. वामन- भागवत II.7.17
16. हंस- भागवत II.7.19
17. मन्वन्तर- भागवत II.7.20
18. धन्वन्तरी- भागवत II.7.21
19. परशुराम- भागवत II.7.22
20. राम- भागवत II.7.23
21. कृष्ण- भागवत II.7.26
22. वेदव्यास- भागवत II.7.36
23. बुद्ध- भागवत II.7.37
24. योगेश्वर रामलाल- महर्षि काकभुषुण्डी कृत प्राचीन काक नाडी ग्रंथ में। देखो श्रीमद्भागवत पुराण II.7.38

जीवन उन का है लिख पाया, जिस में बहु विस्तार है आया।
पुनः यहां भी कुछ लिख पायें, इस अवतार की कथा सुनायें।
अमृतसर में तन उन धारा, ब्राह्मण कुल में लीन अवतारा।
गण्डाराम था पिता का नाम, ज्योतिष विद्या का करते काम।
अपनी विद्या से उन जाना, प्रकटे उन के घर भगवाना।
बचपन में ही दीना ज्ञान, सीखा ज्योतिष को भगवान।
बालपने में विद्या पाई, कनखल आदि जा कीन पढ़ाई।
फिर निकले वे गुरु की खोज, सकल तीर्थ उन डाले खोज।
सद्गुरु न कहीं मिल पाये, सुमेरू पर्वत वे फिर जा पाये।
शिव अवतारी वहां मिल पाये, सद्गुरु 'महाप्रभु' अपनाये।
महाप्रभु से शिक्षा पाई, अष्टांग योग की कीन कमाई।
गुरु से शिक्षा पा कर राम, लौटे घर को सुख के धाम।
'योग साधन आश्रम' बनवाये, विश्व विख्यात जो हो पाये।
जग में फैला योग उजाला, था परिवर्तन भया निराला।
इस्लाम ने था देश दबाया, वही इसाइयत ने कर पाया।
ऋषियों की वेद जो वाणी, और योग की सकल कहानी।
सदियों से विस्मरण हो पायी, 'राम' ने आकर याद करायी।
'हिन्दुस्थान' हिन्दुओं का देश, यह बतला कर कीन सचेत।
शास्त्रों को तुम अब पढ़ पाओ, उन की शिक्षा को अपनाओ।
शेर शृंगाल नहीं बन पाता, ऋषि पुत्र न विधर्म अपनाता।
उठो जागो व आश्रम आओ, योग की शिक्षा ले कर जाओ।

दो०-राम लाल भगवान ने, लाई एक क्रांत।
जनता कीन सचेत उन, भई तब दूर भ्रांत।। 6894

योग शक्ति थी उन में पूर्ण, देश आज़ाद भया संपूर्ण।
जो शक्ति थे प्रभु जी लाये, उस से ही सब कार्य कराये।
योग शक्ति से देह छिपाया, अपना सूक्ष्म रूप बनाया।
आदेश गुरु से जो था पाया, जग में उन तब योग फैलाया।
'संकल्प शक्ति' थे संग जो लाये, उस से सकल कार्य हो पाये।
आश्रम में थे मुलख जी राज, करते सकल वहां वे काज।
'प्रगति काल' में प्रगति हो पायी, योग की विद्या प्रभु फैलायी।
देश से जो था भया विलीन, वही योग प्रभु आ कर दीन।
'प्रगति काल' में योग जब आया, संपूर्ण योग जग को मिल पाया।

दो०-हठ योग और राज को, संग भक्ति भी जान।
संपूर्ण योग इसे कहें, योगी जन विद्वान।। 6895क
'उज्ज्वल काल' में सब जन, करते थे यह योग।
'काला काल' जब आ गया, लुप्त भया था योग।। 6895ख
'धूमिल काल' में था छिपा, मिला नहीं सुयोग।
'प्रगति काल' जब आ गया, प्रकट भया तब योग।। 6895ग

योगाश्रमों का भया विस्तार, जनता आवे गुरु के द्वार।
[1]हठ योग के सातों साधन, सीखें यहां पर ला वे मन।

---

[1]*हठयोग के सात साधन :-*

1. षट्कर्म 2. आसन 3. प्राणायाम 4. मुद्रा 5. प्रत्याहार 6. ध्यान 7. समाधि

इन से स्वस्थ वे हो कर जायें, औषधियों से छुटकारा पायें।
'सप्त साधन' इस विध हैं भाई, 'षटकर्म' व 'आसन' कहलाई।
'प्राणायाम' व 'मुद्रा' जान, 'प्रत्याहार' व 'ध्यान' पहचान।
'समाधि' सप्तम साधन जान, सात साधन हठ योग के आन।
प्रगति काल की यही पहचान, योग करें जन शौक से मान।
[1]शौक से षट् कर्म कर पायें, 'नेति' करें और 'धौति' खायें।
'नौली' भी कुछ जन कर पाते, 'त्राटक' से दृष्टि तेज बनाते।
'कपाल भाति' व 'बस्ति' जानो, खास शुद्धि के साधन मानो।

दो०–आसनों का प्रचार तो, बहु भया इस काल।
भारत और विदेश में, करते प्रातः काल।। 6896क
प्राणायाम के साधन, शक्तिदायक जान।
इस को करते लोग बहु, अपने अपने स्थान।। 6896ख

मुद्रा भी प्रभु ने बतलाई, संख्या में इक्कीस कथ पाई।
इन से कुण्डली जागृत होय, योग में सिद्धियां भी जन गोय।
प्रत्याहार भी जन कर पाते, अन्तर्मुखी इस से हो जाते।
ध्यान समाधि का अभ्यास, इस का शौक भया है खास।
'प्रगति काल' की खास पहचान, जगत में योग बना प्रधान।
रहा कोई नहीं है देश, जहां न योग ने कीन प्रवेश।
योग का दूजा है इक रूप, राज योग जो कथा अनूप।
[2]इस के आठ अंग लो जान, जिन में कथा अलौकिक ज्ञान।

---

[1]योग के षट्क्रम:–1. नेति 2. धौति 3. नौली 4. त्राटक 5. कपालभाति 6. बस्ति

[2]राजयोग के आठ अंग :– 1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम 5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि

प्रथम अंग लो 'यम' पहचान, दूजा 'नियम' को लेवो जान।
तीजा 'आसन' कथनी आया, चौथा 'प्राणायाम' कहलाया।
पांचवी 'प्रत्याहार' है भाई, छटी 'धारणा' नाम धराई।
सातवां 'ध्यान' योग कहलाये, आठवां 'समाधि' में जन जाये।

दो०-आठ राज के अंग जो, हठ योग के सात।
प्रगति के इसी काल में, जग को भये साक्षात।। 6897

सदियों से था जगत भुलाया, ज्ञान योग का था छिप पाया।
राम लाल ने ले अवतार, कीन योग का पुनः उद्धार।
भारत में उन योग फैलाया, अमरीका में भी वह जा पाया।
योरुप के जो सारे देश, वहां भी योग ने कीन प्रवेश।
आस्ट्रेलिया व जापान जान, वहां भी योग का है बहु ज्ञान।
भारत में तो अनेक स्थान, जहां है मिलता योग का ज्ञान।
दक्षिण पश्चिम पूर्व ओर, बने अनेकों योग के ठोर।
पंजाब में जो प्रभु का स्थान, होश्यारपुर में वह लो जान।
जग में ऐसा न को स्थान, जहां पर योग का न अधिमान।

दो०-हदें पार सब कर गया, भारत का यह योग।
क्या जादू है योग में, चकित जगत के लोग।। 6898क
प्रगति काल है आ गया, जगत ले यह जान।
भारत की जो सभ्यता, अब उस का अधिमान।। 6898ख
यम नियम जो योग के, सार्वभौम वे जान।
जितने धर्म हैं जगत में, सब को इन का ज्ञान।। 6898ग

'यम' के पांच भेद हैं भाई, 'अहिंसा' 'सत्य' 'अस्तेय' कहाई।
'ब्रह्मचर्य' व 'अपरिग्रह' जान, धर्म के आधार ये मान।
'नियम' के भी पांच हैं भेद, चले जो इन पै रहे न खेद।
'शौच' 'संतोष' 'तप' हैं भाई, 'स्वाध्याय' 'ईश परिधान' कहाई।
पालन नियमों का कर पाये, मानव जीवन सफल बनाये।
'यम नियमों' को पाल दिखाये, सारा जगत एक हो जाये।
विश्व शांति का यही उपाय, यम नियम पर जन चल पाय।
भारत में प्रगति काल है आया, शांति का संदेश है लाया।
भारत का है यही संदेश, यम नियमों पर चलें हमेश।

दो०-पालन करे न जग यदि, ऋषियन का आदेश।
युद्ध का माहोल तो, चलता रहे हमेश।। 6899क

ण) उपसंहार :-

शांति प्रिय यह देश है, पढ़े शांति का पाठ।
समाप्त सदैव के लिए, हो युद्ध का ठाठ।। 6899ख
लेय इसी उद्देश्य को, लिखा भारत इतिहास।
बता सकें हम जगत को, शांति का पथ खास।। 6899ग
भारत ने है बहु सहा, युद्धों का संताप।
ईश्वर के दरबार में, मार काट है पाप।। 6899घ
'काले काल' में युद्ध का, था कभी न अंत।
मरे कटे बहु निरीह जन, उस समय बे अन्त।। 6899ङ

रंग गई थी भू सकल, खून से उस काल।
विनय यही है नाथ से, ऐसा आय न काल।। 6899च
उस काल धर्मान्धता, अपनी स्वयं मसाल।
जनता सारी उस समय, थी परम बेहाल।। 6899छ

'धूमिल काल' का क्या कह पायें, अत्याचार का अंत न पायें।
फिरंगियों ने कर नर संहार, सकल देश पै कीन अधिकार।
युद्धों का था अखाड़ा देश, शांति थी न देश में लेश।
लूट खसूट कर ले गये भाई, भारत देश की सकल कमाई।
दरिद्रता की सीमा थी नाहीं, भूखे मरते लोग बहु थाहीं।
यदि को था आवाज़ उठाता, गोली से था भुना वह जाता।
प्रभु अन्त इस काल का लाया, सुख का सांस देश ले पाया।
'धूमिल काल' था भया समाप्त, 'प्रगति काल' तब भया प्राप्त।
'प्रगति काल' प्रगति हो पाई, देश में खुशहाली छाई।

दो०-'प्रगति काल' अब आ गया, जनता रहे सतर्क।
कौन मित्र को शत्रु है, इसमें होवे फर्क।। 6900

भारत को जन 'मां' कर देखें, केवल भूमि ही न पेखें।
टूटी सड़कें ऐसे देखें, मां के अंग जिमि फूटे पेखें।
गंदगी कहीं पड़ी ही पेखें, वस्त्र मां के मैले देखें।
लड़ते लोगों को यदि देखें, मां के पुत्र झगड़ते पेखें।
भूखा नर यदि कोई देखें, मां का शिशु तड़पता पेखें।
कर की चोरी को कर पाये, मां की जेब से धन चुराये।

विपरीत खान पान जो पेखें, मां का पूत शराबी देखें।
दुरुपयोग अन्न का देखें, रसोई मां की उजड़ती पेखें।
रीतियों की कुरीति होय, मां हमारी उस पै रोये।
देश को भूमि ही न जानो, उसे जीवित मां पहचानो।
घूंस लेते देते देखें, 'मां' के तन प्रहार पेखें।

दो०-देश को मां जो देखें, राखें वे ही ध्यान।
विपरीत कर्म न हो कभी, रहे देश की शान।। 6901क

भारत का इतिहास जो, नवीन रचा इस काल।
आपत्ति इस पै होय गी, कइयों को तत्काल।। 6901ख

प्रभु हमारी मात यह, सुखी रहे सब काल।
दुख इस ने हैं बहु सहे, फिर न आय वह काल।। 6901ग

भारत का इतिहास यह, भया सम्पूर्ण आज।
[1]तिथि सात है मार्च की, है देश में स्वराज।। 6901घ

पढ़े सुने इतिहास जो, भारत मां का मीत।
मां की आशिष वह गहे, सुखी रहे सब रीत।। 6901ङ

- इति -

श्री सद्गुरुदेव योगेश्वर स्वामी मुलखराज जी महाराज के शिष्य 'सेवक' चमनलाल कपूर कृत 'योगेश्वर कृष्ण से योगेश्वर राम तक' 'भारत माता का इतिहास' रूपी 'श्री योग महादिव्य रामायण' का नवम् खण्ड सम्पूर्ण।

[1]सात मार्च 2003 शुक्रवार, तदनुसार 24 फाल्गुन 2059 विक्रमी।